₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# क्रान्ति

अप्रैल 2015



- आचार्य विनोबा भावे का सुप्रयास
  –राजेश सरकार
- अभीष्ट जीवन
  –मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां
- मीडिया में शालीनता आवश्यक
  –ख़ालिद मुहसिन
- पंजाब के हिन्दी कथा साहित्य
  –बोस्की मैंगी

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

www.kanti.in

## प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs.1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :


मैनेजर

**मासिक कान्ति**

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,

जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

09818799223, 011-26949430

E-mail : kantihindimonthly@yahoo.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

वर्ष 24 अंक 10 अप्रैल 2015

नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और जो लोग मेरे आगे झुक रहे हैं उनके साथ तुम भी झुक जाओ। –क़ुरआन

**संपादक**

**डॉ० मुहम्मद अहमद**

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

**सहयोग राशि**

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : www.kanti.in

चेक / ड्राफ़्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

## जीवन नहीं मरा करता है

छिप-छिप अश्रु बहाने वालो ! मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है ।

सपना क्या है ? नयन-सेज पर, सोया हुआ आंख का पानी
और टूटना है उसका ज्यों, जागे कच्ची नींद जवानी,

गीली उमर बनाने वालो ! डूबे बिना नहाने वालो !
कुछ पानी के बह जाने से, सावन नहीं मरा करता है ।

माला बिखर गयी तो क्या है, खुद ही हल हो गयी समस्या,
आंसू गर नीलाम हुए तो, समझो पूरी हुई तपस्या,

रूठे दिवस मनाने वालो ! फटी कमीज़ सिलाने वालो !
कुछ दीपों के बुझ जाने से, आंगन नहीं मरा करता है ।

वस्त्र बदलकर आने वालो ! चाल बदलकर जाने वालो !
चन्द खिलौनों के खोने से, बचपन नहीं मरा करता है ।

कितनी बार गगरियां फूटीं, शिकन न पर आयी पनघट पर,
कितनी बार किश्तियां डूबीं, चहल-पहल वही है तट पर,

तम की उमर बढ़ाने वालो ! लौ की आयु घटाने वालो !
लाख करे पतझर कोशिश, पर उपवन नहीं मरा करता है ।

लूट लिया माली ने उपवन, लुटी न लेकिन गंध फूल की,
तूफ़ानों तक ने छेड़ा, पर खिड़की बन्द न हुई धूल की,

नफ़रत गले लगाने वालो ? सब पर धूल उड़ाने वालो !
कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से, दर्पण नहीं मरा करता है ।

छिप-छिप अश्रु बहाने वालो ! मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है ।

● गोपालदास नीरज



## कहां क्या है ?


| | | |
|---|---|---|
| जीवन नहीं मरा करता है (कविता) | –गोपालदास नीरज | 3 |
| कुरआन ज्योति | | 5 |
| अल्लाह का ज़िक्र (हदीस मंजरी) | | 6 |
| ऐसे बयान क्यों ? (संपादकीय) | | 7 |
| ईर्ष्या नहीं, स्पर्धा (आपके पत्र) | | 8 |
| इसलिए घड़ी ने घोंसला नहीं बनाया (कविता) | –रविदत्त मोहता | 12 |
| अभीष्ट जीवन (आस्था) | –मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां | 13 |
| उपयोगी हैं फलों और सब्ज़ियों के छिलके (स्वास्थ्य चर्चा) | –डॉ॰ अनुराग कुमार श्रीवास्तव | 18 |
| सत्य धर्म : इस्लाम | –अबरार अहमद | 19 |
| इन्सानों की बुनियादी समस्याएं और उनका हल | –डॉ॰ एम॰ अजमल फ़ारूक़ी | 21 |
| न माधो को कुछ देना न उधों को कुछ लेना | –जयप्रकाश वाल्मीकि | 25 |
| आचार्य विनोबा भावे का सुप्रयास (विशेष आयोजन) | –राजेश सरकार | 26-27 |
| यह बढ़ता पीढ़ी दर पीढ़ी अन्तर | –प्रो॰ शामलाल कौशल | 30 |
| पंजाब के हिन्दी कथा-साहित्य की दिशा | –बोस्की मैंगी | 31 |
| कालाधन वापस लाने का सुन्दर सपना | –सी॰ के॰ रहमानी | 35 |
| मीडिया सामग्री में शालीनता आवश्यक | –ख़ालिद मुहसिन | 37 |
| स्वाभिमानी बच्चे, भूल सुधार (लघुकथाएं) | –ललित नारायण उपाध्याय | 38 |
| भ्रष्टाचार उन्मूलन कैसे ? | –संपादन प्रभाग | 39 |
| तपोवन (कहानी) | –मासूम अंसारी | 41 |
| रमेशचन्द्र शाह को साहित्य अकादमी पुरस्कार | –मुहम्मद इलियास हुसैन | 43 |
| लघुकथाएं | | 45 |
| शालीन ड्रेस की ज़रूरत (फेसबुक उवाच) | –डॉ॰ मुहम्मद अहमद | 47 |
| बुढ़ापा : एक कड़वा सच (जनसमस्याएं) | –डॉ॰ प्रीत अरोड़ा | 48 |
| बालवीथी | | 49 |

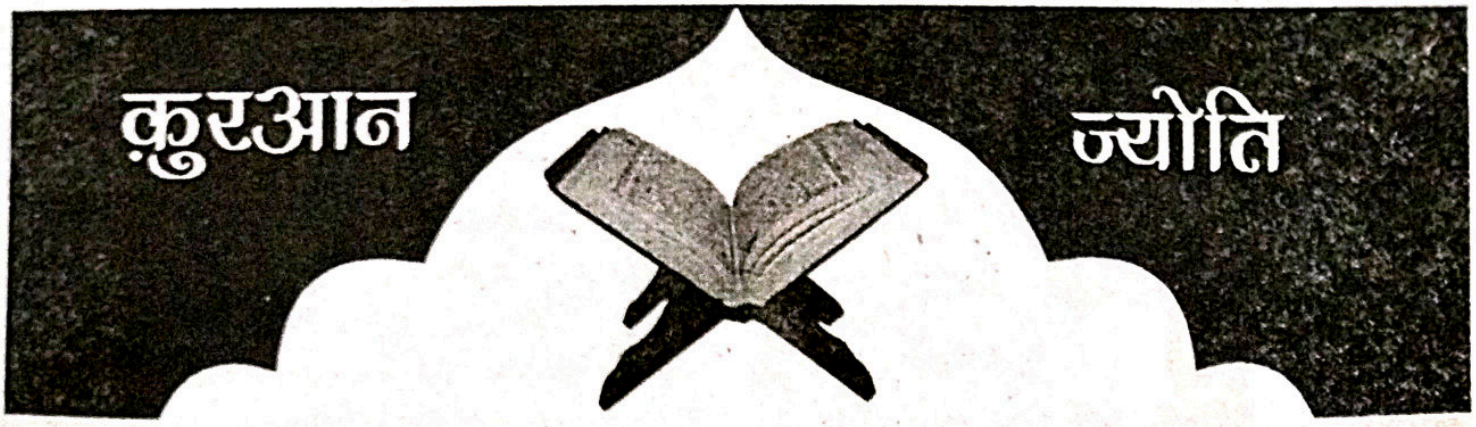


**(71) ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें, ये सब एक-दूसरे के साथी हैं, भलाई का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करते हैं ।[80] ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह की रहमत उतरकर रहेगी, निश्चय ही अल्लाह को सब पर प्रभुत्व प्राप्त है और वह तत्वदर्शी और बड़ी सूझ-बूझ वाला है । (72) इन ईमान वाले मर्दों और औरतों से अल्लाह का वादा है कि उन्हें ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वे उनमें सदैव रहेंगे । इन सदाबहार बाग़ों में उनके लिए पाक-साफ़ रहने की जगहें होंगी, और सबसे बढ़कर यह कि अल्लाह की प्रसन्नता उन्हें प्राप्त होगी । यही बड़ी सफलता है ।**

**–क़ुरआन, 9 : 71,72**

---

80. जिस तरह मुनाफ़िक़ एक अलग समुदाय हैं, उसी तरह ईमान वाले भी एक अलग समुदाय हैं । यद्यपि ईमान का ज़ाहिरी इक़रार और इस्लाम पर चलने का बाह्य प्रदर्शन दोनों गिरोहों में मिलता है, लेकिन दोनों के स्वभाव, चरित्र, तौर-तरीक़े, आदत और सोच-विचार और कार्य-पद्धति एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं । जहां ज़बान पर ईमान का दावा है, परन्तु दिल सच्चे ईमान से ख़ाली हैं, वहां ज़िन्दगी का सारा रंग-ढंग ऐसा है जो अपनी एक-एक अदा से ईमान के दावे को झुठला रहा है । ऊपर के लेबिल पर तो लिखा है कि यह मुश्क (कस्तूरी) है, परन्तु लेबिल के नीचे जो कुछ है वह अपने पूरे अस्तित्व से प्रमाणित कर रहा है कि यह गोबर के सिवा कुछ नहीं । इसके विपरीत जहां ईमान अपनी मूल वास्तविकता के साथ मौजूद है, वहां मुश्क अपने रूप से, अपनी सुगंध से, अपने गुणों से हर परीक्षा और हर मामले में अपना मुश्क होना खोले दे रहा है । इस्लाम और ईमान के (प्रचलित) नाम ने प्रत्यक्षतः दोनों गिरोहों को एक उम्मत (समुदाय) बना रखा है, परन्तु सच तो यह है कि मुनाफ़िक़ मुसलमानों का नैतिक स्वभाव और रंग-ढंग कुछ और है और सच्चे ईमान वाले मुसलमानों का कुछ और । इसी कारण कपटपूर्ण दुर्गुण रखने वाले मर्द और औरत एक अलग जत्था बन गये हैं, जिनको अल्लाह से ग़फ़लत, बुराई से दिलचस्पी, नेकी से दूरी और भलाई से असहयोग की संयुक्त विशेषताओं ने एक-दूसरे से जोड़ रखा है और ईमान वालों से व्यवहारतः असंबद्ध कर दिया है और दूसरी ओर सच्चे ईमान वाले मर्द और औरत एक-दूसरा गिरोह बन गये हैं, जिनके सारे लोगों में यह विशेषता संयुक्त रूप से मौजूद हैं कि नेकी से वे दिलचस्पी रखते हैं, बदी से नफ़रत करते हैं, अल्लाह की याद उनके लिए भोजन की तरह जीवन की अपरिहार्य आवश्यकताओं में सम्मिलित है । अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए उनके दिल और हाथ खुले हुए हैं और अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन उनकी जीवनशैली है । इस संयुक्त नैतिक स्वभाव और जीवन-पद्धति ने उन्हें आपस में एक-दूसरे से जोड़ दिया है और मुनाफ़िक़ों के गिरोह से तोड़ दिया है ।




# अल्लाह का ज़िक्र

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं एक रात मैंने नबी (सल्ल॰) को मौजूद न पाया, तो मैं आपको खोजने लगी, तो क्या देखती हूं कि आप रुकूअ की हालत में हैं । (अर्थात नमाज़ में अल्लाह के आगे झुके हुए हैं ।) –या सजदे में हैं–और कह रहे हैं : "महान है तू और प्रशंसा तेरे लिए है, तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं ।"

और एक रिवायत में है : "मेरा हाथ आपके पांव के तलुवे पर पड़ गया । आप सजदे में थे । पांव आपके खड़े थे और आप कह रहे थे : "ऐ अल्लाह, मैं तेरी खुशी की पनाह लेता हूं तेरे क्रोध से बचने के लिए, और तेरी क्षमा की पनाह लेता हूं तेरी यातना से बचने के लिए, तेरे मुक़ाबले में तुझी से पनाह मांगता हूं, मैं तेरी प्रशंसा की गणना नहीं कर सकता, तू ऐसा है जैसा कि तूने अपनी प्रशंसा की है ।"

–मुस्लिम

● हज़रत अबू ज़र (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "हर प्रातःकाल तुम में से हर व्यक्ति के प्रत्येक जोड़ पर एक सदक़ा (दान एवं सत्कर्म) अनिवार्य होता है सो अल्लाह का हर महिमागान सदक़ा है और उसका हर स्तुतिगान सदक़ा है, और इसका हर निश्चयपूर्वक वर्णन कि 'अल्लाह के सिवा कोई प्रभु पूज्य नहीं' सदक़ा है, और अल्लाह की बड़ाई का हर बयान सदक़ा है, भलाई का हुक्म देना सदक़ा है, और बुराई से रोकना सदक़ा है, और दिन चढ़े की (नमाज़ की) दो रकअतें इन सबका बदल हो सकती हैं ।" –मुस्लिम

● उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया बिन्त अल-हारिस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) उनके पास से प्रातः समय बाहर गये । वे अपनी नमाज़ की जगह थीं । फिर आप दिन चढ़े लौटे, तो वे उसी तरह बैठी हुई थीं । आपने कहा : "जब से मैं तुम्हारे पास से गया हूं तुम इसी हालत में रही हो ?" उन्होंने कहा : हां । इस पर नबी (सल्ल॰) ने कहा : "मैंने तुम्हारे पास से जाकर चार सूत्र-वाक्य तीन-तीन बार उच्चारित किये हैं । यदि उन्हें उनके मुक़ाबले में तौला जाए जो तुमने दिन के आरंभ से अब तक पढ़े हैं, तो उन पर भारी पड़ेंगे जो तुमने पढ़े हैं । (वे हैं) : अल्लाह महान है, प्रशंसा उसी की है उतनी बार जितनी उसकी रचित चीज़ें हैं और उसकी अपनी खुशी के अनुसार, उसके सिंहासन के भार के बराबर और उसके शब्दों की स्याही के बराबर ।" –मुस्लिम

और उन्हीं की एक रिवायत में है : "महान है अल्लाह अपनी रचित चीज़ों की संख्या के बराबर, महान है अल्लाह अपनी खुशी के अनुसार, महान है अल्लाह अपने सिंहासन के भार के अनुसार, महान है अल्लाह अपने शब्दों की स्याही के बराबर ।"

और तिरमिज़ी की रिवायत में है : "क्या मैं तुम्हें वे शब्द न सिखाऊं जिन्हें तुम उच्चारित करो । महान है अल्लाह अपनी रचित चीज़ों की संख्या के बराबर, महान है अल्लाह अपनी रचित चीज़ों की संख्या के बराबर, महान है अल्लाह अपनी रचित चीज़ों की संख्या के बराबर, महान है अल्लाह अपनी खुशी के अनुसार, महान है अल्लाह अपनी खुशी के अनुसार, महान है अल्लाह अपनी खुशी के अनुसार । महान है अल्लाह अपने सिंहासन के भार के अनुसार, महान है अल्लाह अपने सिंहासन के भार के अनुसार, महान है अल्लाह अपने सिंहासन के भार के अनुसार, महान है अल्लाह अपने शब्दों की स्याही के बराबर, महान है अल्लाह अपने शब्दों की स्याही के बराबर, महान है अल्लाह अपने शब्दों की स्याही के बराबर ।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

# ऐसे बयान क्यों ?

लगता है, अब झूठे बयानों से सद्भावना आएगी ! मुफ़्ती मुहम्मद इलियास ने पिछले दिनों विवादित बयान देते हुए कहा है कि भगवान शंकर मुस्लिमों के पहले पैग़म्बर हैं । उन्होंने कहा कि इस बात को मानने में मुसलमानों को कोई गुरेज नहीं है । उन्होंने यह भी ग़लत-भ्रामक बात कही कि मुसलमान भी सनातन धर्मी हैं और हिंदुओं के देवता शंकर और पार्वती हमारे भी मां-बाप हैं । उन्होंने यह झूठी बात भी जोड़ी कि शंकर जी लंका में आये थे । हमारे इस्लाम धर्म के पहले पैग़म्बर हैं । हम यहीं पैदा हुए हैं । यहीं हमारा कर्म और धर्म क्षेत्र है । इसलिए हमें इससे प्यार है । सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा । उनकी अन्य बातें भी आपत्तिजनक हैं । मसलन उनका यह कहना कि देश के मुसलमान हिन्दू राष्ट्र के विरोधी नहीं हैं । मीडिया में बताया गया कि मुफ़्ती साहब का संबंध जमीअत उलेमा से है, हालांकि जमीअत ने इसका खंडन किया है । मीडिया में यह ख़बर भी आयी कि जमीअत का एक प्रतिनिधिमंडल गत 19 फ़रवरी को अयोध्या आया था । एक कार्यक्रम में अयोध्या के साधु-संतों को भी आमंत्रित करने हेतु प्रतिनिधिमंडल अयोध्या आया था। इस दौरान मुस्लिम प्रतिनिधिमंडल ने राम जन्मभूमि के मुख्य पुजारी सतेंद्र दास और शनि धाम के महंत हरदयाल शास्त्री के साथ मिलकर आतंकवाद का पुतला फूंका ।

ऐसा लगता है कि मुफ़्ती साहब को न तो इस्लाम की जानकारी है और न ही हिन्दू धर्म की । यह भी संभव है कि अपने घिनौने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने ऐसा बयान दिया हो, जिसे किसी भी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता । अगर मुफ़्ती साहब ने जान-बूझकर बयान दिया है, तो भी उन्हें जनता के बीच ग़लतफ़हमियां फैलाने का अधिकार कहां से मिल गया । हिन्दू धर्म की मान्यता है कि सृष्टि का आरंभ मनु और सतरूपा से हुआ, जिन्हें शंकर जी ने आशीर्वाद दिया था । कथा है कि मनु और सतरूपा परमब्रह्म की तपस्या कर रहे थे । कई वर्ष तपस्या करने के बाद शंकर जी ने स्वयं पार्वती जी से कहा कि मैं, ब्रह्मा और विष्णु कई बार मनु सतरूपा के पास वर देने के लिये आये, पर उन्होंने वर नहीं मांगा । इसका उल्लेख तुलसी दास जी द्वारा रचित रामचरितमानस में भी मिलता है–"बिधि हरि तप देखि अपारा । मनु समीप आये बहु बारा ।" कहने का मतलब यह कि जिनसे सृष्टि का आरंभ हुआ, वे मनु-सतरूपा थे ।

ज़ाहिर है, तथ्यहीन बातों से सद्भावना नहीं पैदा हो सकती, अपितु ग़लतफ़हमियां फैलती हैं, जो सद्भावना की दिशा में बड़ी बाधा है । लखनऊ की ईदगाह के इमाम मौलाना ख़ालिद रशीद फिरंगी महली ने कहा है कि इस तरह के बयान से मुसलमानों पर कोई असर नहीं होता । ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के उपाध्यक्ष मौलाना डॉ॰ कल्बे सादिक़ ने कहा कि मुफ़्ती साहब धर्म के नाम पर विवाद न खड़ा करें । इस तरह के बयान से पहले वह हिन्दू धर्म के बारे में जानें, क्योंकि शंकर जी हिन्दू धर्म की आस्था का केन्द्र हैं । फ़ैज़ाबाद के शहर उलेमा ने कहा है कि भगवान शंकर को मुसलमानों का पहला पैग़म्बर बताना उनका अपना विचार है । उनके मुताबिक़, 'हर धर्म अपनी धार्मिक आस्था के आधार से समाज से जुड़ा है। हिन्दू धर्म के मानने वालों व इस्लाम धर्म के मानने वालों का अलग-अलग इतिहास है और इसे किसी से जोड़ा नहीं जा सकता ।'

# ईर्ष्या नहीं, स्पर्धा

अक्सर देखने में आता है कि ऐसे व्यक्ति जिन्हें जीवन की सामान्य सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं होतीं, अभावों एवं वंचनाओं से जूझते हुए अपनी लगन, परिश्रम, निष्ठा, अध्यवसाय से संसार में अपने लिए स्थान बना लेते हैं, जबकि वे लोग जिन्हें हर सुख-सुविधा, साधन उपलब्ध होते हैं, जीवन में अक्सर कुछ विशेष नहीं कर पाते । वे व्यक्ति जिन्हें बना बनाया घर-बार, चलता हुआ व्यापार-धंधा कारोबार मिल जाता है तो अधिकांशतः उसे चलाते भर रहते हैं । ज़्यादा से ज़्यादा उसमें थोड़ी बहुत बढ़ोत्तरी कर लेते हैं, किन्तु कोई विशेष उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर पाते, बल्कि कई बार तो अपनी अकर्मण्यता अथवा उपक्रमहीनता के कारण चलते हुए व्यवसाय को भी हानि पहुंचा बैठते हैं ।

इस संसार में सबको मनचाहा नहीं मिलता । ऐसे भाग्यशाली गिने-चुने विरले ही होते हैं, जो मुहावरे के अनुसार "चांदी का चम्मच मुंह में लेकर" इस संसार में आते हैं जिन्हें बिना हाथ-पैर हिलाये सब कुछ बना-बनाया मिल जाता है । वरना अधिकांश को तो अपना-अपना कुआं खुद ही खोदना पड़ता है । उन भाग्यशाली लोगों को पके-पकाये पर ऐश करते देखकर कभी-कभी क्षोभ भी होता है और शायद ईर्ष्या भी । मगर यह उचित नहीं है । अपनी हिम्मत, हौसले और ख़ून-पसीने की मेहनत से अपने बलबूते पर कुछ कर दिखाना ही मर्दानगी है, सम्मानजनक है । उसी में आत्म संतोष मिलता है, आत्म तुष्टि होती है । उपलब्धि और गर्व की अनुभूति होती है, एक नया उत्साह पैदा होता है ।

बनी हुई इमारत पर एक मंज़िल और खड़ी कर लेना आसान है । वैसा तो कोई भी कर सकता है । बहादुरी तो उसमें है कि नींव स्वयं खोद कर एक-एक ईंट जोड़कर छोटा-छोटा-सा ही सही, ढांचा खड़ा किया जाए । उद्यम तो मनुष्य के ख़ून में है, उसके स्वभाव में है । बस उसका उपयोग करने, उसे काम में लाने की ज़रूरत है । 1947 में देश विभाजन की विभीषिका झेल कर आये शरणार्थियों का उदाहरण हमारे सामने है । अपने उद्यम, अध्यवसाय और अनथक परिश्रम के बल पर उन लोगों ने क्या नहीं करके दिखा दिया ।

अभाव को अभिशाप मानकर मन मसोस कर रह जाना उचित नहीं है । अभाव तो कुछ कर दिखाने, कुछ हासिल करने, कुछ बनकर दिखाने की प्रेरणा देता है । जिन्हें कोई अभाव है ही नहीं, वे भला कुछ नया करने की ज़रूरत ही क्यों महसूस करेंगे । अपने देश के ही नहीं विश्व भर के महान व्यक्तियों पर नज़र डालकर देख लीजिए, उनमें से अधिकांश ने अभावों में पल बढ़कर, अभावों से जूझ कर ही अपना-अपना स्थान प्राप्त किया । पद एवं प्रतिष्ठा अर्जित की संसार में नाम कमाया । अभावों में जन्म लेना कोई शर्म की बात नहीं है । शर्म की बात तो है अभावों को अपनी नियति मान लेना, हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना, अभावों से छुटकारा पाने और जीवन में कुछ कर दिखाने का साहस न जुटाना, प्रयास न करना ।

सुविधाओं और साधनों का बाहुल्य ही उमंग और उत्साह को कुंठित कर देता है । जब आवश्यकता ही नहीं होगी तो भला आविष्कार क्यों कर होगा ? सुविधाओं की कमी को कुछ कर दिखाने का अवसर मानें, अपनी वंचनाओं को इसी परिप्रेक्ष्य में देखना सीखें । दूसरों की समृद्धि से कुंठा और नैराश्य न पालें । ईर्ष्या नहीं स्पर्धा की भावना को मन में स्थान दें । अपने जीवन पथ को सृजनात्मक दिशा दें । सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं, फिर अभाव आपको अभिशाप नहीं वरदान प्रतीत होने लगेंगे ।

**ओमप्रकाश बजाज**
पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर (म०प्र०)

## 'गांव का गुरुकुल'

यह पत्र आपको जयपुर से प्रेषित कर रहा हूं । मैं आपका पुराना पाठक हूं और 2008-2009 के समय में मेरे पत्र भी 'कान्ति' में प्रकाशित होते थे । वर्तमान में मैं एक दैनिक समाचार पत्र की वेबसाइट में बतौर कंटेंट राइटर कार्यरत हूं ।

मैं एक ऑन लाइन पुस्तकालय भी चलाता हूं, जिसका नाम–गांव का गुरुकुल है । यह एक मुफ़्त पुस्तकालय है जहां से कई अच्छी किताबें प्राप्त की जा सकती हैं ।

यह पुस्तकालय मैं पहले मेरे गांव-कोलसिया में चलाया करता था, जहां 'कान्ति' आती रहती थी । उसी समय मैंने पैग़म्बर मुहम्मद साहब (सल्ल०) के बारे में 'कान्ति' के ज़रिये ही जानकारी हासिल की थी ।

हाल में मैंने मुहम्मद साहब (सल्ल०) पर एक ई-बुक लिखी है । यह किताब मारवाड़ी में है । इसका नाम है– पैग़म्बर रो पैगाम । चूंकि मैं मारवाड़ी परिवार से हूं, इसलिए इस भाषा में लेखन करना मेरे लिए ज़्यादा आसान रहा है ।

यह किताब मुहम्मद साहब (सल्ल०) पर मारवाड़ी में लिखी विश्व की पहली ई-बुक है । किताब की भाषा भले ही अलग हो, लेकिन मैंने इसमें उन तमाम बातों और मुहम्मद साहब (सल्ल०) के संदर्भ में मर्यादा व आदर का ध्यान रखा है । यह किताब उनके (सल्ल०) लिए मेरी ओर से आदरांजलि है ।

आपसे अनुरोध है कि इस किताब का अवलोकन कीजिए और उचित समझें तो 'कान्ति' में भी इसका ज़िक्र कर दीजिए, ताकि प्यारे नबी (सल्ल०) के बारे में अधिकाधिक लोग जानकारी हासिल कर सकें ।

किताब प्राप्त करने के लिए Google पर मेरी लाइब्रेरी का ब्लॉग ganv ka gurukul सर्च कीजिए । फिर ब्लॉग open कर उसमें सबसे ऊपर यह किताब डाउनलोड कर लीजिए । (लिंक से)

मेरी हार्दिक इच्छा है कि पवित्र कुरआन का भी मारवाड़ी में अनुवाद करूं । साथ ही (मुहम्मद साहब पर) हिन्दी की कुछ और किताबें लाइब्रेरी पर प्रकाशित करूं ।

**राजीव शर्मा**

संचालक, गांव का गुरुकुल

ganvkagurukul.blogspot.com

## विवेकपूर्ण प्रत्याख्यान

सौभाग्य से 'कान्ति' दिसम्बर 2014 हाथ लग गयी । पूरी पत्रिका एक बैठकी में पढ़ गया । प्रगतिशील सोच के साथ अपने समय के तमाम मसाइल से दोचार होती पत्रिका मुझे बेहद अच्छी लगी । बधाई स्वीकार करें ।

आपने समकालीन विमर्श के साथ-साथ साहित्यिक रचनाओं को भी स्थान दिया है । इस्लामी सिद्धांतों के विवेकपूर्ण प्रत्याख्यान अच्छे लगे ।

**डॉ० दिनेश त्रिपाठी 'शम्स'**

घुघुलपुर, देवरिया, बलरामपुर (उ०प्र०)

## 'स्टेट एक्सीलैंस एवार्ड'

आशा है, आप स्वस्थ-सानन्द रहकर 'कान्ति' के संपादन-प्रकाशन में संलग्न होंगे । आपके स्नेह-सौजन्य से यह पत्रिका अध्ययनार्थ सुलभ हो रही है और अतीव उपयोगी पाठ्य-सामग्री के पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है । इस हेतु हम आपके आभारी हैं । विभिन्न संस्थाओं द्वारा आपकी साहित्यिक सेवा को दृष्टिगत रखते हुए आपको सम्मानित किया गया है, यह पाठकों के लिए भी गौरव का विषय है । हमारी ओर से भी अनेकशः बधाई ।

**डॉ० त्रिलोकी सिंह**

हिन्दूपुर, करछना, इलाहाबाद (उ०प्र०)

## धर्मनिरपेक्षता की जीत

दिल्ली के विधानसभा चुनाव में हाल ही में बनी केजरीवाल जी की आम आदमी पार्टी की भारी बल्कि ऐतिहासिक विजय ने साबित कर दिया कि अब केवल भाषण और कोरे आश्वासन से काम चलने वाला नहीं । जनता ने यह भी संदेश दिया कि यह गांधी का धर्मनिरपेक्ष देश है । और देशवासियों की भूख की समस्या तन के लिए कपड़ों की बिजली पानी की समस्या उच्च से उच्च शिक्षा की समस्याएं मुंहज़ोरी, गोडसे और राम मंदिर से सुलझने वाली नहीं । 60 साल पुरानी कांग्रेस को उसकी दोहरी नीति एवं अहंकार ने डुबो दिया, इसलिए उसका खाता तक नहीं खुला । 65 स्थानों पर वह तीसरे स्थान पर रही । दिल्ली में आम आदमी पार्टी को दलितों के 59 प्रतिशत मुसलमानों के 71 प्रतिशत, सिखों के 59 प्रतिशत, ओ०बी०सी० के 54 प्रतिशत वोट मिले । इससे साबित होता है कि आम जनता हर धर्म का आदर करने वाले हर समाज को लेकर चलने वाली धर्मनिरपेक्षता को ही पसन्द करती है ।

**इक़बाल अहमद**

भंडारा, महाराष्ट्र

## भाजपा का बुरा हाल

दिल्ली विधानसभा चुनाव के नतीजे को वास्तव में नरेन्द्र मोदी जी के व्यक्तिगत पराजय के रूप में देखा जा रहा है । जिन्होंने दिल्ली के चुनाव अभियान के दौरान अपने संतरी से मंत्रीगण के साथ एड़ी-चोटी तक पूरी ताक़त लगा दी थी । यहां तक कि 'आप' के नेता केजरीवाल पर किसी भी स्तर से हमले करने से नहीं चुके । लोकसभा चुनाव 2014 में बड़ी जीत मिलने के जोश में भाजपा के कार्यकर्ता

व नेता बेलगाम होकर अहंकार में उलजलूल धमकियां देने लगे । लव जिहाद तथा घर वापसी जैसे धार्मिक उन्माद उठाकर आम जनता का ध्यान समस्याओं तथा चुनावी वादों से हटाये रखा । दिल्ली के मतदाताओं को आम आदमी पार्टी के नेता केजरीवाल की नयी राजनीति रास आ गयी । जिसके नतीजे में 'आप' की बड़ी जीत तथा मोदी जी की सबसे बड़ी हार हो गयी । भाजपा को लव जिहाद और घर वापसी का सबक़ मिल ही गया । यह शर्मनाक हार केवल दिल्ली भाजपा तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव पूरे देश में जाएगा ।

देश में लोकसभा चुनाव 2014 के दौरान बड़ी जीत हासिल करने के बाद देश-विदेश में नरेन्द्र मोदी जी का डंका बजने लगा । जिसके नतीजे में वे देश की सभी प्रांतीय सरकारों पर क़ब्ज़ा करने का सपना साकार करने में लग गये । लोकसभा 2014 के दौरान महंगाई, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार तथा बिजली व पानी से परेशान आम जनता के सामने भाजपा के अलावा कोई दूसरा चेहरा नज़र नहीं आया , जिसके चलते ही नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को बड़ी जीत मिल गयी ।

इसी परिप्रेक्ष्य में महाराष्ट्र, हरियाणा तथा झारखंड में हुए विधानसभाओं के चुनावों में बाज़ी मारकर भाजपा ने अपनी सरकारें बना लीं । सियासी गलियारों में ऐसा लगा कि अब मोदी विजय रथ शायद कोई रोक नहीं पाएगा, लेकिन केजरीवाल ने उसे रोक दिया ।

सियासी नेतृत्व का मुखौटा लगाकर हिटलरगीरी करने वाली पार्टी अपना धार्मिक उन्माद के बल पर जनता का समर्थन प्राप्त कर सकती हैं, तो उसकी सबसे बड़ी भूल है । लोकसभा चुनाव के दौरान नरेन्द्र मोदी जी ने जनता को विश्वास दिलाया था कि अब भाजपा सबको साथ लेकर जनतांत्रिक नियमों पर चलेगी । लेकिन इस गिनती के नौ माह के दौरान सत्ता शक्ति इने-गिने कुछ विशेष हाथों में केन्द्रित होकर रह गयी । पार्टी के बेशुमार पुराने लीडरों को नज़रअंदाज़ कर नये चेहरे लाये गये । इसी परिप्रेक्ष्य में आई॰ पी॰एस॰ अधिकारी किरन बेदी को दिल्ली का भावी मुख्यमंत्री के रूप में दिल्ली के चुनावी दंगल में उतारा गया जिसके ख़ामियाज़े में भाजपा को शिकस्त का मुंह देखना पड़ा ।

**एम॰ एच॰ ख़ां**
कानपुर नगर

## मुसलमानों की अनदेखी

देश की स्वतंत्रता के बाद से मुस्लिम समाज की ओर ध्यान नहीं देने से उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रही है, एक प्रकार से उन्हें हाशिये पर रखा गया है । जिस कारण उनमें उच्च शिक्षा की कमी तथा सभी शासकीय सेवाओं के साथ उनमें अच्छे रोज़गार की कमियां भी दिखायी दे रही हैं ।

सच्चर कमेटी जैसी अन्य कमेटियों ने मुसलमानों के उत्थान के लिए सिफ़ारिशों की सूचियां केन्द्र सरकार के समक्ष पेश की थीं, लेकिन अब तक उन पर किसी तरह का कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया । आरक्षण के मुद्दे पर वर्तमान सरकार तो पहले से ही मुसलमानों को 4.5 प्रतिशत आरक्षण दिये जाने के विरोध में रही है । ऐसी स्थिति में इस सरकार से क्या अपेक्षाएं की जा सकती हैं ।

अब कम से कम मुस्लिम बुद्धिजीवियों के दलों को प्रत्येक राज्य सरकारों से मिलकर आरक्षण के संबंध में अपनी मांगों को लिखित रूप से रखने में किसी तरह की देरी नहीं करनी चाहिए । उन्हें आरक्षण के लाभ हेतु विभिन्न विधानसभाओं में संबंधित प्रस्ताव को पारित करवाने का प्रयास भी करना चाहिए ताकि आगे किसी भी तरह का व्यवधान न आने पाये और मुसलमानों को आरक्षण का पूरा-पूरा फ़ायदा मिल सके ।

राज्य एवं केन्द्र सरकार को भी चाहिए कि वे मुसलमानों के उत्थान हेतु नीतियों में आवश्यक परिवर्तन करने में निष्पक्ष होकर सफल भूमिका को निभाएं ।

**डॉ॰ एम॰ ए॰ रशीद**
नागपुर, महाराष्ट्र

## अच्छी कविताएं

'कान्ति' के अंक नियमित मिल रहे हैं । प्रकाशित सामग्री पठनीय एवं संग्रहणीय होती है । सितम्बर के अंक में डॉ॰ ज्ञानचन्द्र की कविता 'अब सीखो', घर परिवार में 'बच्चों के भय...' और राहित यादव की कविता 'खजूर' अच्छी बन पड़ी है । संपादकीय में 'छोटे राज्यों से अधिक विकास' पाठकों को सोचने के लिए नयी दिशा प्रदान करता है ।

**डॉ॰ गणेश तारे**
सी॰एम॰डी॰, एलबर्ट आइंस्टाइन एजूकेशनल ग्रुप,
बसंत विहार, कोटा (राज॰)

## सुखद एहसास

अभी नेट पर आपकी पत्रिका को देखा तो बहुत अच्छा लगा । आध्यात्मिक पत्रिका का इस 'कान्ति' के साथ निकलना नूर की बूंद-सा एहसास देता है । मैं भी स्वभाव से आध्यात्मिक नागरिक हूं ।

मैंने तीन किताबें लिखी हैं, तीनों ही आध्यात्मिक हैं । मेरी आत्मकथा तो अमेरिका की लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस में रखी गयी है ।

1. अज्ञातवास से ज्ञातवास (कविता)।
2. एक आदिमानव की आत्म कथा (आत्मकथा)।
3. अतिमानव (आने वाली नयी प्रजाति का ब्लू प्रिंट)।

**रविदत्त मोहता**

कार्यक्रम अधिशासी

## बधाई

मासिक पत्रिका 'कान्ति' जनवरी तथा फ़रवरी 2015 के दो अंक मिले, धन्यवाद । पत्रिका के इस अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेख, ग़ज़लें, कविताएं तथा लघुकथाएं ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद तथा उच्च स्तरीय रहे । पत्रिका ने इन लाजवाब अंकों के लिए बधाई ।

**प्रो॰ शामलाल कौशल**

ग्रीन रोड, रोहतक (हरियाणा)

## ढकोसले

'कान्ति' के जनवरी व फ़रवरी 2015 अंक मिले । पत्रिका वक्त की इतनी पाबंद है अन्य मिसाल मिलना मुश्किल है । एक से बढ़कर एक ज्ञानवर्धक रचनाएं पढ़ने को मिलती है, चाहे वह बालवीथी हो, स्वास्थ्य चर्चा हो या फिर अन्य सामग्री । सब कुछ मनभाता है ।

जनवरी अंक में उद्‌गार के तहत 'सत्य नारायण की कथा' के बारे में पढ़ा । लेखिका की बातों से बिल्कुल सहमत हूं । सच पूछिए तो ये कथा का काम पंडितों के हाथों में दे घर वाले भी निश्चिंत रहते हैं ।

इस पूजा के पीछे क्या उद्देश्य निहित है यह आज तक पता नहीं चला । इन्सान की भलाई किसमें है इसे सभी जानते हैं फिर फ़िज़ूल के ढकोसलों में समय व धन की बरबादी कहां तक जायज़ है ।

**माला वर्मा**

हाजीनगर, प॰ बंगाल

## पठनीय अंक

'कान्ति' का दिसम्बर 2014 अंक पढ़ा । आवरण पृष्ठ सुन्दर और रंगीन होकर कलात्मक है, जो अन्दर के पृष्ठों को देखने की ललक जागृत करता है ।

हफ़ीज़ मेरठी की ग़ज़ल आधुनिक राजनीतिक प्रवृत्ति को बड़े सुन्दर ढंग से व्यक्त करती है–ध्यान देने योग्य है । अंक का संपादकीय व्यापक शिक्षा नीति का ख़ाका तैयार करने पर बल देता है । साथ ही चल रही शिक्षा नीति के गुण-दोषों पर ध्यान दिलाकर कार्रवाई को प्रेरित करता है । 'इस्लाम में सहयोग और सहानुभूति का महत्व', लोगों के साथ प्रेम एवं सहानुभूति दर्शाने के साथ-साथ अल्लाह के साथ भी प्रेम दर्शाने के प्रति तवज्जह दिलाता है और विवेक का प्रयोग करने को कहता है ।

संस्कृत में अनूदित पवित्र क़ुरआन का समीक्षात्मक अध्ययन गंभीरता से विचारणीय होकर सम्मानजनक एवं धार्मिक परंपराओं को स्थायी बनाने का सफल साधन समझा जाना चाहिए । यह तवज्जह योग्य है ।

'गिरती-उठती आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था' एवं 'विज्ञापनों का मायाजाल' लेख आधुनिक प्रचलित अर्थव्यवस्था की सच्चाई बयान करते हैं । विज्ञापनों का हक़ीक़त से दूर का भी वास्ता नहीं होता । अंक की अन्य सामग्री भी पठनीय है और ज्ञानवर्धक थी । अंक छुआछूत और इस जैसी अन्य समस्याओं पर भी गहराई से विचार करने को कहता है । अच्छे अंक के प्रकाशन के लिए बधाई ।

**मदन मोहन वर्मा**

राजेन्द्र प्रसाद कालोनी,
तानसेन मार्ग, ग्वालियर

## लेखकों एवं रचनाकारों से

"कान्ति" में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

**-संपादक**

# इसलिए घड़ी ने घोंसला नहीं बनाया

मेरे घर की दीवार पर
एक दीवार घड़ी लटकती है
घड़ी के ऊपर ही
एक कॉलबेल लटकती है
इस कॉलबेल पर
चिड़िया का घोंसला लटकता है
चिड़िया रोज़
बहुत सारे तिनके लाती है
और घोंसला बनाती है
पर हर शाम मैं देखता हूं
घोंसला वहां होता नहीं
बस थकी-हारी चिड़िया होती है
और होते हैं कुछ लटकते तिनके
ऑफ़िस से घर लौटते ही
अपने ही घर को खुलवाने के लिए
मुझे रोज़ कॉलबेल बजानी पड़ती है
मेरा घर तो खुल जाता है
पर चिड़िया का घर बिखर जाता है ।
तब–
दीवार घड़ी मुझे देख हंसती है
और चिड़िया को देख टिक-टिक करते हुए कहती है–
''हे चिड़िया...
तू ये जान ले...कि तू केवल पंख है
चिड़िया नहीं है !
मुझे देख
मुझ में एक क्षण सुई है
जो एक तिनका है
यह तिनका हर क्षण बढ़ता है
मैं हर क्षण एक तिनका लाती हूं
उससे एक मिनट बुनती हूं
दो मिनट तीन मिनट भी
फिर धीरे-धीरे घंटा हो जाती हूं
इस तरह 24 घंटे बुन लेती हूं
और एक दिन हो जाती हूं
पर इतने युग हो गये
मैंने एक क्षण, मिनटों, घंटों
दिनों और युगों से घोंसला नहीं बनाया
अगर मैं ऐसा करती
तो मैं घड़ी घोंसला बन जाती
और कब की बिखर जाती
फ़िर मनुष्य मुझ में
समय को कैसे देख पाता ?
इसलिए हे चिड़िया
ध्यान रख
तू चिड़िया नहीं है
पंख है
जैसे मैं घड़ी नहीं हूं
पर क्षण हूं
मिनट हूं
घंटा, दिन और युग हूं
पर घोंसला नहीं हूं ।

**रविदत्त मोहता**
कार्यक्रम अधिकारी, आकाशवाणी,
जोधपुर (राज०)

# अभीष्ट जीवन

■ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

इस्लामी दृष्टिकोण से वर्तमान संसार मानव का वास्तविक ठिकाना नहीं है । मानव-प्रकृति जिस संसार की खोज में है, वह कोई और ही लोक है, ऐसा लोक जहां हमारी सभी स्वाभाविक मांगें पूरी हो सकें । मानव प्रकृति ऐसी ज़िन्दगी की तलाश में है, जो नष्ट न हो, जहां मिलने वाली ईश्वरीय नेमतें नष्ट न हों, जहां मानव शोक और संकटों से दोचार न हो और जहां सत्य का सौंदर्य पूरी तरह प्रकट हो । स्पष्ट है कि वर्तमान संसार को यह विशेषता और विशिष्टता प्राप्त नहीं है । यहां जीवन के साथ मृत्यु अर्थात निर्माण के साथ विनाश भी अनिवार्य है । यहां की सारी चीज़ें छिन जाने वाली हैं । यहां मनुष्य से उसके प्रियतम् जन भी बिछड़ जाते हैं । सत्यता भी यहां कृत्रिमता के आवरण में गौण दिखायी देती है । तात्पर्य यह कि मानव की इच्छाओं और मनोरम मनोकामनाओं की पूर्ति का कोई उपाय इस संसार में नज़र नहीं आता ।

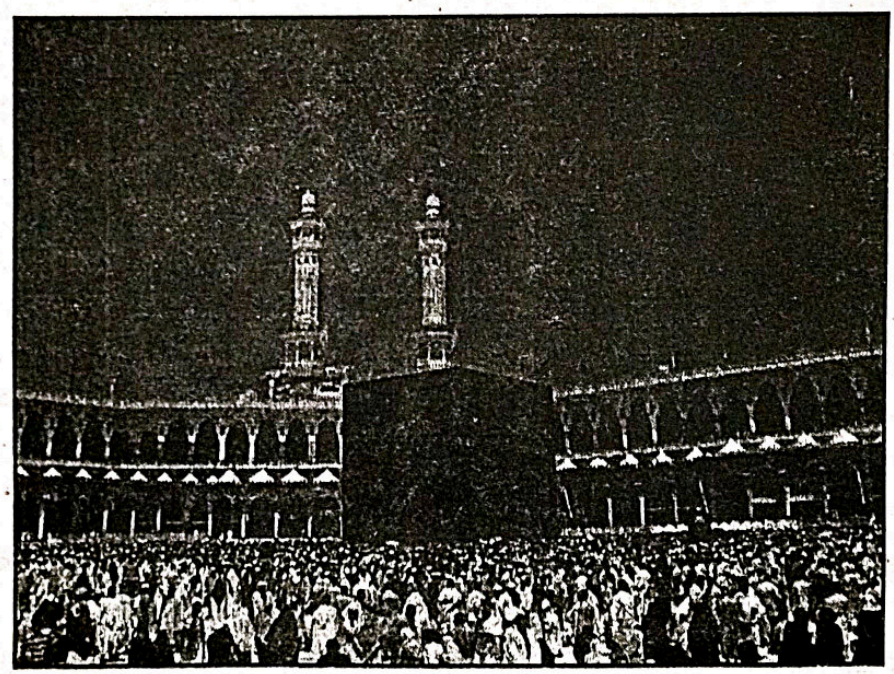

यहां मानव को शक्ति और योग्यता अत्यंत सीमित मात्रा में प्राप्त है, जिसके साथ स्थायित्व का कोई संबंध नहीं । अतः मानव की उच्च अभिलाषाओं की पूर्ति का यदि कोई स्थान है, तो वह किसी दूसरे ही लोक में है । यदि कोई अन्य लोक नहीं है, तो इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि हमारी बहुत-सी इच्छाएं और कामनाएं, जो बहुत ऊंची और श्रेष्ठ हैं, बिल्कुल निरर्थक हैं । हमारी उच्च कामनाओं को तो अस्तित्व है, उनको प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर पाता है, लेकिन उनके निरर्थक होने का कोई तर्क उपलब्ध नहीं है । फिर हम देखते हैं कि दुनिया की कोई चीज़ निरर्थक नहीं है । फूल व्यर्थ नहीं खिलते, हवाएं यूं ही निरुद्देश्य नहीं चला करतीं । सूरज, चांद और तारों की परिक्रमा में इतनी तत्वदर्शिता छिपी हुई है कि उसे आकस्मिक और निरुद्देश्य समझना बुद्धि-विवेक के बिल्कुल विरुद्ध है । हमें भूख-प्यास सताती है ।

यदि यह भूख-प्यास निरर्थक होती, तो इसके उत्तर में प्रकृति अन्न और जल उपलब्ध न कराती । इसी तरह हम देखते हैं कि मनुष्य में जो कामेच्छा पायी जाती है, वह भी व्यर्थ नहीं है । इस इच्छा की पूर्ति के लिए मनुष्य को जोड़े के साथ पैदा किया गया है । नर-नारी एक-दूसरे के बिना अपूर्ण और व्यर्थ हैं । दोनों की रचना किसी महान हस्ती का उपकार है, जो चीज़ें अलग-अलग होकर भी आपस में अत्यंत गहरा संबंध रखती हैं, वे अनिवार्य रूप से कहीं एक होती हैं । वस्तुतः ईश्वरीय ज्ञान और मर्ज़ी की सतह पर ये एक हैं, उसी ने एक की आवश्यकता को दूसरे पर आश्रित किया है ।

विचारणीय तथ्य यह है कि जब यहां हमारी भौतिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति का इतना परिपूर्ण प्रबंध पाया जाता है, तो फिर यह कैसे संभव है कि हमारी उत्तम आकांक्षाएं, एहसास, भावनाएं और हमारी वे पवित्रतम

अभिलाषाएं निरर्थक हों, जिनके स्रष्टा हम स्वयं नहीं, वही है, जिसने हमें अस्तित्व प्रदान किया है । अत: हमें मानना पड़ता है कि इस्लाम ने हमारा जो मार्गदर्शन किया है, वह सर्वाधिक सच्चा मार्गदर्शन है ।

इस्लाम की दृष्टि में मानव की सभी मांगें स्वाभाविक उद्देश्यपूर्ण और सार्थक हैं । ईश्वर मानव की प्रत्येक उचित और स्वाभाविक मांगें पूरी करेगा । उसके समक्ष मानव को एक ऐसे लोक में बसाने की योजना है, जो मानवीय इच्छाओं और स्वाभाविक अभिलाषाओं के अनुसार, बल्कि उससे भी बढ़कर होगा । मानव को वहां वह सब कुछ प्राप्त होगा, जो यहां उसे प्राप्त नहीं हो पाता । मानव को वहां उमर जीवन और अनश्वर नेमतें प्राप्त होंगी । सत्य और असत्य का वहां ऐसा फ़ैसला होगा कि उसके बारे में किसी को संदेह की कोई गुंजाइश नहीं होगी । ईश्वर के आज्ञाकारी और कृतज्ञ बन्दे वहां वह सब कुछ प्राप्त कर रहे होंगे, जो उनकी अभिलाषाओं से कहीं अधिक होगा । हां, अत्याचारी लोगों का जीवन वहां कष्टमय और यातनामय सिद्ध होगा ।

इस्लाम की दृष्टि में मानव की सभी मांगें स्वाभाविक उद्देश्यपूर्ण और सार्थक हैं । ईश्वर मानव की प्रत्येक उचित और स्वाभाविक मांगें पूरी करेगा । उसके समक्ष मानव को एक ऐसे लोक में बसाने की योजना है, जो मानवीय इच्छाओं और स्वाभाविक अभिलाषाओं के अनुसार, बल्कि उससे भी बढ़कर होगा ।

वर्तमान संसार और यहां की नेमतें तो आगामी लोक की मात्र एक झांकी प्रस्तुत करती हैं । यह जीता-जागता संसार किसी और वास्तविक लोक का विश्वास दिलाता है । यहां की चीज़ें मात्र चीज़ें नहीं हैं, बल्कि इनके द्वारा दूसरी ज़िन्दगी हमारे अनुभवों में आती है, अनुभव चाहे कितना ही कम और हल्का क्यों न हो, इसकी महत्ता से इन्कार संभव नहीं ।

पवित्र कुरआन ने सत्य की प्रामाणिकता के लिए बौद्धिक तर्क ही पर बस नहीं किया, बल्कि इसके लिए उसने उपर्युक्त दूसरा उपाय भी अपनाया है । इस संबंध में उसने हमारे सामने सजीव उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, जिनको उसने 'आयात' (निशानियां) कहा है । कुरआन ने एकेश्वरवाद और परलोक इत्यादि महानतम सत्यों के लिए बौद्धिक तर्क के साथ कायनात (ब्रह्माण्ड) और जीवन में पायी जाने वाली 'आयात' और निशानियों की ओर भी संकेत किया है । इन निशानियों को खुली आंखों से देखने के बाद पूरे विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि जिन सत्यों की सूचना कुरआन देता है, उनका खंडन वास्तव में पूरा ब्रह्माण्ड और अपने आसपास, बल्कि स्वयं हमारे अपने अस्तित्व के खंडन के समानार्थी हैं ।

जीवन और यहां विद्यमान वस्तुओं के मनोरम दर्पण में कुरआन ने जीवन की वास्तविकताओं को प्रकट किया है । इसके बाद भी अगर कोई उसकी ओर ध्यान नहीं देता है, तो वह जीवित नहीं मृत है और उसकी छाती चैतन्य आत्मा से रिक्त है । आंखें रहते हुए भी वह अंधा है, कान होते हुए भी बहरा है । सत्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि आदमी के अन्दर जीवन हो । सत्य और वास्तविकता से जिन लोगों को इन्कार है, उनके अन्दर वास्तव में जीवन तनिक भी शेष नहीं है । वह बुद्धि-विवेक के दानवीय स्तर पर जी रहा है सत्य से परिचित तो वही लोग हो सकते हैं, जिनमें जीवन हो, जानने की इच्छा हो । कुरआन ने इसी बात का स्पष्टीकरण इन शब्दों में किया है–

"यह तो एक नसीहत है और साफ़ पढ़ी जाने वाली किताब, ताकि वह हर उस व्यक्ति को सावधान कर दे जो ज़िन्दा हों और इन्कार करने वालों पर हुज्जत (तर्क-प्रस्तुति) क़ायम हो जाए ।"
(कुरआन, 36:69-70)

परलोकवाद के विरुद्ध जो दृष्टिकोण संसार में पाये जाते हैं, उनमें से एक दृष्टिकोण वह है, जिसे भौतिकवादियों ने अपना रखा है । वे कहते हैं कि वर्तमान लोक ही सब कुछ है, इससे हटकर कोई और जीवन नहीं, जिसकी प्रतीक्षा की जाए । मृत्यु सदा-सर्वदा के लिए जीवन का अंत कर देती है । उसके बाद न कोई जीवन है और न कोई हिसाब-किताब और न कहीं स्वर्ग-नरक का अस्तित्व है–

"ये लोग कहते हैं कि बस यही हमारा पहली बार का मरना है और फिर हम दोबारा (जीवित करके) उठाये जाने वाले नहीं हैं । यदि तुम सच्चे हो, तो हमारे पूर्वजों को (जीवित करके) ले आओ ।" (कुरआन, 44:34-36)

इस तरह की बातें करने वाले रुककर अपनी बात पर

विचार नहीं करते वरना उन्हें अपनी भूल का बहुत जल्द एहसास हो जाए । वे नहीं सोचते कि यदि दूसरी बार जीवन की प्राप्ति असंभव है, तो पहली बार संभव कैसे हो गयी ।

कुछ लोग परलोक-जीवन (आख़िरत) को तो मानते हैं, वे स्वर्ग-नरक को भी मानते हैं, परन्तु इसके साथ वे कुछ ऐसी बातें भी कहते हैं, जिससे परलोक धारणा की सार्थकता ही समाप्त हो जाती है । उदाहरणार्थ वे यह कहते हैं कि खुदा ने अपने इकलौते बेटे को सलीब (सूली) पर मौत देकर मनुष्य के कुकर्मों-गुनाहों का प्रायश्चित अदा कर दिया है । अपने बुरे कर्म के बुरे परिणाम से बचने की एक ही राह है और वह यह कि मनुष्य खुदा के बेटे पर विश्वास करे । यह दृष्टिकोण विभिन्न पहलुओं से हास्यस्पद है । ईश्वर को अगर मनुष्य का गुनाह माफ़ ही करना था, तो इसके लिए बेटे को सूली पर चढ़ाने की क्या ज़रूरत थी ? इसके लिए बेटे पर विश्वास करना ही पर्याप्त हो सकता था ।

**वर्तमान संसार और यहां की नेमतें तो आगामी लोक की मात्र एक झांकी प्रस्तुत करती हैं । यह जीता-जागता संसार किसी और वास्तविक लोक का विश्वास दिलाता है । यहां की चीज़ें मात्र चीज़ें नहीं हैं, बल्कि इनके द्वारा दूसरी ज़िन्दगी हमारे अनुभवों में आती है, अनुभव चाहे कितना ही कम और हल्का क्यों न हो, इसकी महत्ता से इन्कार संभव नहीं ।**

इसी तरह कुछ दूसरे लोग इस भ्रांति के शिकार हैं कि कुछ बुज़ुर्ग हस्तियां उन्हें आख़िरत में आने वाली विपत्तियों से मुक्ति दिला सकती हैं, वे अड़ जाएंगी तो खुदा से वे अपनी बात मनवाकर रहेंगी । उनकी सिफ़ारिशों से हमारा बिगड़ा काम बन जाएगा । ऐसे लोग यह नहीं सोचते कि यदि इस प्रकार की सिफ़ारिश और पैरवी से काम चल सकता तो फिर यह दुनिया बनाने की कुछ भी ज़रूरत नहीं थी, जिसमें मानव को कठोर परीक्षा से गुज़रना पड़ता है, जिसमें एक ओर तो उसे अपनी शक्ति और योग्यता और अपनी कृतज्ञता की परीक्षा देनी पड़ती है, तो दूसरी ओर उसे जीवन के विभिन्न मामलों में भी कितने ही संकटों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे पूर्ण रूपेण स्पष्ट होता है कि ये कठिनाइयां और मामले ऐसे कारण और साधन की हैसियत रखते हैं जो चरित्र के निर्माण और उसके विकास के लिए आवश्यक थे । यह बात दूसरी है कि मनुष्य उससे फ़ायदा उठाने के बजाय अपने को विनाश के गढ़े में गिरा दे और वह अवसर जो कायनात (ब्रह्माण्ड) को गर्दिश में लाकर उसके लिए उपलब्ध किया गया है, नष्ट कर दे ।

परलोक में स्वर्ग एक उत्तम स्थान है । यह स्थान अपने बाहरी रूप की दृष्टि से ही उत्तम नही है, बल्कि उद्देश्य और सार्थकता की दृष्टि से भी अंतिम वस्तु है । स्वर्ग का अधिकारी होने के लिए मनुष्य को जिस मार्ग से गुज़रना है, वह ईमान का मार्ग है, क्योंकि यही उसकी लक्षित और वास्तविक पवित्रता और उच्चता की मांग है ।

ईमान अपनी वास्तविकता की दृष्टि से केवल अपने रब की पहचान ही का नाम नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की स्वयं अपनी प्रकृति की पहचान भी है । ईमान से रहित मनुष्य न अपने को जानता है, न उसे अपने रब की कोई पहचान होती है । यह ऐसा दोष है जिसके कारण सत्य की वह दुनिया उसे स्वीकार करने से साफ़ इन्कार कर देती है । स्वर्ग के द्वार उसके लिए नहीं खुलते । विनाश के अतिरिक्त वह किसी अन्य वस्तु का अधिकारी नहीं होता । इसी बुरे अंजाम को कुरआन जगह-जगह आग और जहन्नम के नाम से उल्लेख करता है ।

परलोकवाद विरोधी विश्वासों में एक विश्वास 'आवागमन' का है । इसे 'पुनर्जन्म' भी कहते हैं । इस विश्वास के अनुसार मनुष्य अपने कर्मों का फल पाने के लिए इसी वर्तमान लोक में बार-बार जन्म लेता है । अपने कर्म के अनुसार कभी वह मनुष्य की योनि में पैदा होता है और कभी जानवर और कीड़े-मकोड़े या पेड़-पौधे की शक्ल में संसार में पलटकर आता है ।

इस विचारधारा को एक समय में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त रही है । यूनान में भी कुछ लोग इसे मानने लगे थे और रोम में भी इसको स्वीकृति प्राप्त हो गयी थी । मिस्र के प्राचीन इतिहास में भी इस विश्वास की झलक दिखायी देती है । बाहरी कारणों और प्रभावों के कारण एक समय यहूदियों में भी यह विश्वास प्रवेश कर गया था, लेकिन अब यह विचारधारा या तो संसार के जंगली और असभ्य जातियों में पायी जाती है या फिर भारत के हिन्दुओं, बौद्धों, जैनियों

इत्यादि में इसे प्रसिद्धि प्राप्त है ।

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के जीवन से संबंधित जो जानकारियां उपलब्ध करायी हैं, उन्होंने इन सभी विचारधाराओं का खंडन कर दिया है, जिन पर आवागमन का विश्वास आधारित था । आवागमन की विचारधारा को यदि ज्ञान और तर्क की रोशनी में देखा जाए, तो उसके असत्य होने में कोई संदेह नहीं हो सकता ।

आवागमन का सिद्धांत केवल परलोक के ही ख़िलाफ़ नहीं है, बल्कि स्वयं धर्म और धार्मिक विश्वासों, भावनाओं और एहसासों को भी इससे बहुत नुक़सान पहुंचा है । इस विचारधारा को यदि व्यावहारिक रूप से अपना लिया जाए तो धर्म का कोई मूल्य सभ्य और शिक्षित लोगों की दृष्टि में शेष नहीं रह सकता । फिर तो एक शक्ति बनकर उनके उभरने की सारी ही संभावनाएं ख़त्म होकर रह जाएंगी । इस विचारधारा के मानने वाले भी इसे व्यावहारिक ज़िन्दगी से दूर रखते हैं । वे व्यावहारिक जीवन में इसको नहीं अपनाते और शायद अपना भी नहीं सकते ।

इस विचारधारा में सामान्य बुद्धि के लिए यदि कोई आकर्षण और सार्थकता पायी जाती है, तो वह केवल इसलिए कि इस विचारधारा की दृष्टि से मनुष्य का संबंध अपनी ज़मीन से नहीं टूटता, क्योंकि इस विचारधारा के अनुसार वह मरने के बाद भी किसी न किसी रूप में इस ज़मीन से जुड़ा रहता है । धरती से आदमी का लगाव और संबंध उसे कुछ आगे सोचने का अवसर ही नहीं देता । काश! वह समझ सकता कि जीवन की संभावनाएं इस सीमित संसार से कहीं बढ़कर हैं ।

यहां इसका अवसर नहीं है कि आवागमन की विचारधारा की बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक पहलुओं से विस्तृत आलोचना की जा सके । परंतु एक आधारभूत तथ्य की ओर हम अवश्य ध्यान आकृष्ट कराएंगे । वह यह कि पशुओं और पेड़-पौधों के अध्ययन से प्रमाणित होता है कि जड़ पदार्थों की बात तो दूर स्वयं जानवरों और मनुष्यों के बीच इतनी दूरी है कि उसे पार नहीं किया जा सकता । पेड़-पौधों और जानवरों में आत्मचेतना सिरे से होती ही नहीं । आत्म चेतना केवल मनुष्य में पायी जाती है । यह समझना अत्यंत बेसुधपन और मूर्खता की बात होगी कि जानवरों या पेड़-पौधों में मानव की आत्मा पायी जाती है । जानवरों और पेड़ों आदि में मानवीय आत्मा का कोई चिन्ह नहीं मिलता । फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि मानवीय आत्माओं को जानवरों या पेड़-पौधों के रूप में अपने पिछले कर्मों का फल मिल रहा है ।

यदि कोई 'बुद्धिमान' यह कहे कि दंड के रूप में मानवीय आत्मा को ऐसे जानवरों की आत्मा और जड़ पदार्थों की आत्मा में बदल दिया गया है, जो आत्म चेतनारहित हैं, तो उसे सोचना चाहिए कि मानवीय आत्मा और जानवरों की आत्मा में इतना अन्तर है कि यदि किसी मानवीय आत्मा को जानवरों की आत्मा में बदल दिया जाए, तो वह आत्मा और व्यक्तित्व ही बाक़ी नहीं रहेगा, जो पहले था । इस प्रकार तो एक दूसरी ही आत्मा अस्तित्व में आ जाती है । जब आत्मा और व्यक्तित्व ही बाक़ी न रहा, तो सज़ा किसे मिलेगी । यदि यह स्वीकार कर भी लिया जाए कि जानवर और पेड़ आदि किसी दंड का परिणाम (प्रकटीकरण) हैं, तो यह सज़ा मानवीय आत्मा को नहीं, बल्कि दूसरों ही को मिल रही है, जिनका पाप कर्म से दूर का भी संबंध नहीं । ये पेड़-पौधे और पशु, जड़ और चेतना तो मानव के लिए नेमत हैं । इनको पाप और गुनाह का प्रतिफल कहना अत्यंत घृणित अत्याचार है ।

यदि पाप और गुनाह के द्वारा हमें ये चीज़ें मिलती हैं, तो पाप और गुनाह को मानवता के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता की संज्ञा देनी पड़ेगी, बल्कि यह मानना पड़ेगा

**आवागमन का सिद्धांत वेदों की शिक्षा के भी विरुद्ध है । वेदों के अध्ययन से मालूम होता है कि आर्य आख़िरत या परलोक पर विश्वास करते थे । उनका विश्वास यह था कि मृत्यु के पश्चात मानव को एक-दूसरी ज़िन्दगी मिलती है, जो मनुष्य के अपने कर्मों के अनुसार अच्छी या बुरी होती है । मंत्र और ब्राह्मण काल में पितरलोक की धारणा पायी जाती थी, जिसमें आवागमन की सिरे से कोई गुंज़ाइश न थी ।**

कि संसार की सुन्दरता और आबादी ही पाप और अपराध के कारण विद्यमान है । इस परिस्थिति में हमारे दिलों में ईश्वर के लिए कृतज्ञता की कोई भावना नहीं उभरेगी । हम इस दुनिया को और इसकी नेमतों को किसी और ही दृष्टि से देखने लगेंगे । निर्धन और संकटग्रस्त लोगों को हम इस दृष्टि से देखेंगे कि ये बड़े पापी हैं । पापी न होते तो इस हालत में क्यों पहुंचते ।

आवागमन का सिद्धांत वेदों की शिक्षा के भी विरुद्ध है । वेदों के अध्ययन से मालूम होता है कि आर्य आख़िरत या परलोक पर विश्वास करते थे । उनका विश्वास यह था कि मृत्यु के पश्चात मानव को एक-दूसरी ज़िन्दगी मिलती है, जो मनुष्य के अपने कर्मों के अनुसार अच्छी या बुरी होती है । मंत्र और ब्राह्मण काल में पितरलोक की धारणा पायी जाती थी, जिसमें आवागमन की सिरे से कोई गुंज़ाइश न थी । आगे चलकर सूत्र काल में परलोक की धारणा के साथ आवागमन का सिद्धांत भी सामने आता है । और आगे पुराणों का दौर आते-आते परलोक, आवागमन दोनों ही विचारधाराएं समान रूप से मिलने लगती हैं । वेद आवागमन या पुनर्जन्म के पक्ष में नहीं हैं, यह एक वास्तविकता है, जो लोग वेदों से आवागमन को प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं, वे न्याय से काम नहीं लेते ।

कुछ लोगों ने जो कुरआन से भी आवागमन को प्रमाणित करना चाहता है । परन्तु इस प्रकार के प्रयासों का सत्य और वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है । डॉक्टर राधा कृष्णन ने लिखा है कि वेदों में आवागमन की विचारधारा नहीं मिलती । (Indian Philosophy, Vol. I P. 113-116) और यही विचार अनेक हिन्दू विद्वानों का है । प्रसिद्ध प्राच्य-विद्या विशारद मैक्समूलर, जिसने वेदों पर काम किया है, लिखता है–

''वेदों में आवागमन की विचारधारा नहीं मिलती, बल्कि एक अंतिम दिन–आख़िरत (परलोक) की विचारधारा पायी जाती है ।''

वेद में है–

''अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् । मा नो अतिख्य आ गहि ।'' (ऋग्वेद, 1-4-3)

''वह अंतिम दिन-परलोक की उपेक्षा करके और ज्ञान और बुद्धि को ताक़ पर रखकर हमारी निर्धारित की हुई सीमाओं को पकड़ रहे हैं ।''

''प्रतिदिन जैसे घोड़े के लिए घास निर्धारित की जाती है, हे अग्नि ! धन को जमा करने वालों से भी अंतिम मेरे द्वारा पूछताछ होगी ।'' (यजुर्वेद, 5:11)

सिद्धार्थ विद्यालंकार लिखते हैं–

''वेदों में आवागमन का सिद्धांत नहीं है । इस बात पर तो मैं जुआ भी खेल सकता हूं (अर्थात बाज़ी भी लगा सकता हूं)।'' (आवागमन, पृ॰ 104)

डॉ॰ पराडा चौहान (Dr. Parada Chauhan) ने लिखा है–

''वेदों में पुनर्जन्म मिलता है तो ज़रूर, परंतु उसमें इस जन्म के बाद केवल एक जन्म का उल्लेख है, हज़ारों जन्मों का नहीं ।'' (पुनर्जन्म और वेद, पृ॰ 93)

वेद में है–

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त् समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ।
(ऋग्वेद, 1-11-1)

''अग्नि की महत्ता को जानने के लिए सूरज को प्राप्त करने की कोशिश करो । हमारे माध्यम से दोनों जन्मों को मानने वाले भृगु, मातरिश्वा हुए हैं ।''

जीवन के पश्चात मृत्यु के संबंध में कुरआन ने जो स्पष्ट धारणा प्रदान की है, उसके सही होने में किसी संदेह की गुंजाइश नहीं है । यह धारणा किसी अनुमान पर आधारित होने के बजाय ईश्वरीय संकेत पर आधारित है । कुरआन अपनी विभिन्न विशेषताओं के अतिरिक्त संरक्षक और साक्षी भी है । अर्थात इसने पिछली सभी ईश्वरीय शिक्षाओं को अपने अन्दर सुरक्षित कर रखा है । जिसने कुरआन का अध्ययन कर लिया उसने मानो सभी ईश्वरीय ग्रंथों और ईशदूतों की आधारभूत शिक्षाओं का अध्ययन कर लिया । मूल रूप से कुरआन कोई नया दृष्टिकोण, नया संदेश लेकर नहीं उतरा है । जब कुरआन परलोक विश्वास का समर्थन और पुष्टि करता है तो इसके अर्थ ये होते हैं कि जीवन के पश्चात मृत्यु के संबंध में परलोक विश्वास का दृष्टिकोण ही सभी सत्य धर्मों का दृष्टिकोण रहा है ।

प्राचीन ग्रंथों में स्पष्ट रूप से ऐसे संकेत और उल्लेख मिलते भी हैं, जिनसे इस दृष्टिकोण का समर्थन होता है कि सत्य धर्म सदा ही परलोक विश्वास का वाहक रहा है । दूसरे विश्वास और दृष्टिकोण मात्र लोगों की अपनी कल्पनाओं की उपज है ।

# उपयोगी हैं फलों और सब्ज़ियों के छिलके

■ डॉ॰ अनुराग कुमार श्रीवास्तव

सामान्यत: लोग बाज़ार से महंगे दाम पर फल तथा सब्ज़ियां ख़रीदकर लाते हैं तथा खाने के बाद उनके बेहद ग्रणकारी तथा औषधीय तत्वयुक्त पौष्टिक छिलकों को या तो डस्टबिन में फेंक देते हैं या पालतू जानवरों को खिला देते हैं । यदि लोगों को इन फलों तथा सब्ज़ियों के छिलकों की लाभकारी विशेषताओं के संबंध में पता चल जाए तो वे संभवत: इनको फेंकने की भूल कभी न करें ।

सेब में एंटीआक्सीडेंट तथा विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है लेकिन गूदे से पांच गुना अधिक एंटीआक्सीडेंट इसके छिलके में पाया जाता है । जर्नल ऑफ़ एग्रीकल्चर एंड फूड केमिस्ट्री के शोध-कर्ताओं तथा अध्ययन-कर्ताओं ने अपने प्रयोगसिद्ध निष्कर्ष में पाया है कि इसके छिलकों में एंटी डिजीज व एंटी कैंसर जैसे गुण होते हैं । इसलिए सेब को छिलका समेत खाया जाना सेहत की दृष्टि से लाभदायक होगा ।

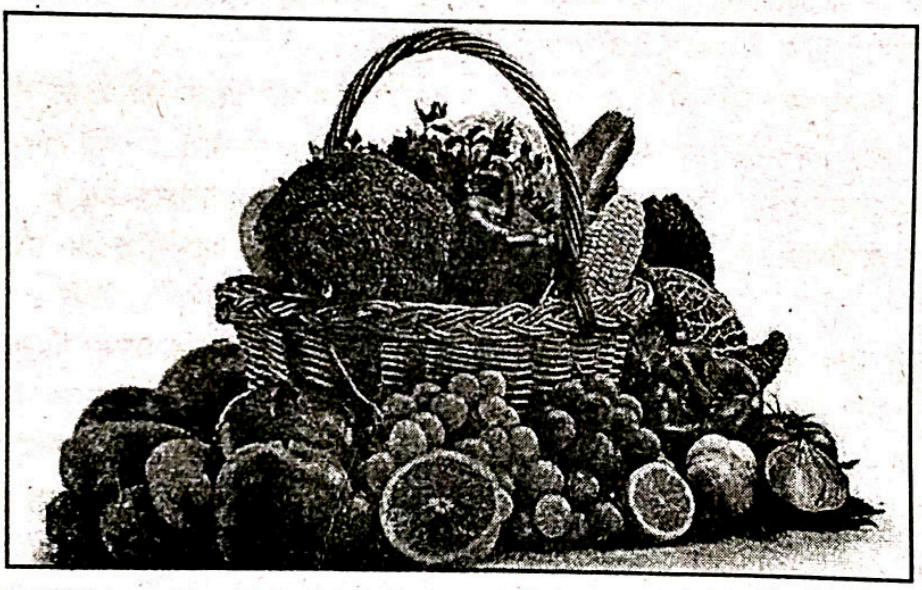

केले के छिलके में अनेक पौष्टिक गुण पाये जाते हैं । ताइवान के वैज्ञानिकों के शोध तथा अध्ययन के अनुसार केले के छिलके में डिप्रेशन से मुक़ाबला करने की ताक़त मौजूद है ।

इसलिए हृदयाघात होने पर चिकित्सक मरीज़ को छिलकेदार केला खाने की सलाह और हिदायत देते हैं । पाक वैज्ञानिकों के अनुसार कच्चे केले की सब्ज़ी बनाते समय उसका छिलका नहीं उतारना चाहिए ।

जिस महिलाओं को अधिक मासिक स्राव होता है, वे अनार के सूखे छिलकों को पीसकर एक चम्मच पानी के साथ लें । इससे रक्तस्राव कम होगा । जिनको बवासीर की शिकायत हो वे अनार के छिलकों को कूटकर उसके चूर्ण को गुड़ में मिलाकर बारीक-बारीक गोलियां बना लें । कुछ दिनों तक इसका नियमित सेवन करने से उन्हें बवासीर में निश्चित से आराम महसूस होगा ।

अमेरिकी वैज्ञानिकों तथा केमिस्टों ने अपने अध्ययन में पाया है कि अंगूर तथा बेरी के छिलकों में कोलेस्ट्रोल घटाने की क्षमता पायी जाती है । इसी प्रकार अमरूद के छिलकों में एंटीऑक्सीडेंट गूदे से अधिक मात्रा में पाया जाता है । इसलिए मिक्सर में अंगूर व बेरी का जूस तैयार कर पीने के बजाय उन्हें चूसकर खाना चाहिए । जूस बनाने से उनके छिलकों में विद्यमान पौष्टिक तत्व पिसकर नष्ट हो जाया करते हैं । गृहणियां रसोईघर में सब्ज़ी बनाते समय उनके छिलके उतार देती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से ग़लत है । इससे छिलकों के साथ पौष्टिक तत्व बाहर चले जाते हैं ।

छिलका सहित सब्ज़ी खाने से शरीर में डायबिटीज़ नियंत्रित होती है । पालक, बथुवा व मेथी का पत्तीदार साग खाने से शरीर में आयरन, कैल्शियम तथा अन्य पौष्टिक तत्वों की पूर्ति होती है । छिलका सहित करेला के सेवन से जांडिस की बीमारी में लाभ होता है ।

गेहूं के आटा का चलनी में चालकर प्रयोग नहीं करना चाहिए । चोकर युक्त आटे की रोटी के सेवन से कोष्ठबद्धता तथा बदहज़मी में लाभ होता है । हां, सभी छिलकों को खाने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना ज़रूरी है कि कहीं इन पर कीटनाशकों का प्रयोग तो नहीं किया गया है । यदि कीटनाशकों की अल्पमात्रा भी होगी, तो स्वास्थ्य के लिए सर्वथा हानिकारक सिद्ध होगी ।

# सत्य धर्म : इस्लाम

❖ अबरार अहमद
(कोटा, राज॰)

इस्लाम किसी की निजी संपत्ति नहीं है । यह संपूर्ण मानवजाति की संयुक्त निधि है । ये ईश्वर के बताए हुए वे नियम हैं, जिन्हें अपनाकर इन्सान लोक और परलोक दोनों जगह सफलता प्राप्त कर सकता है । अतः इन्हें अपनाने में ही हमारी भलाई है, क्योंकि ईश्वर ने दुनिया को व्यर्थ पैदा नहीं किया है ।

"हमने इस आसमान और ज़मीन को, और इस दुनिया को जो उनके बीच है, व्यर्थ पैदा नहीं कर दिया है ।"
(कुरआन, 38:27)

हम देखते हैं कि ये सूरज, चांद, सितारे, ये रात और दिन, ये आग, हवा और पानी, ये वनस्पतियां और इस धरती और आकाशों में स्थित एक-एक चीज़ एक अटल क़ानून में जकड़ी हुई है ।

"और वह अल्लाह ही है जिसने रात और दिन बनाए और सूरज और चांद की रचना की । सब एक-एक कक्ष में तैर रहे हैं ।" (कुरआन, 21:33)

"न सूरज के बस में यह है कि वह चांद को जा पकड़े और न रात दिन से आगे बढ़ सकती है । सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं ।" (कुरआन, 36:40)

हर चीज़ ईश्वर के आगे नतमस्तक है–

"वह तो अल्लाह ही है जिसको ज़मीन और आसमान की हर चीज़ स्वेच्छापूर्वक और विवशतापूर्वक सजदा कर रही हैं और सब चीज़ों की परछाइयां भी सुबह और शाम उसके आगे झुकती हैं ।" (कुरआन, 13:15)

"और क्या ये लोग अल्लाह की पैदा की हुई किसी चीज़ को भी नहीं देखते कि उसकी छाया किस तरह अल्लाह के सामने सजदा करते हुए दाएं और बाएं गिरती है ? सबके सब इस तरह विवशता दिखा रहे हैं ।"
(कुरआन, 16:48)

"ज़मीन और आसमानों में जितने भी जीवधारी हैं और

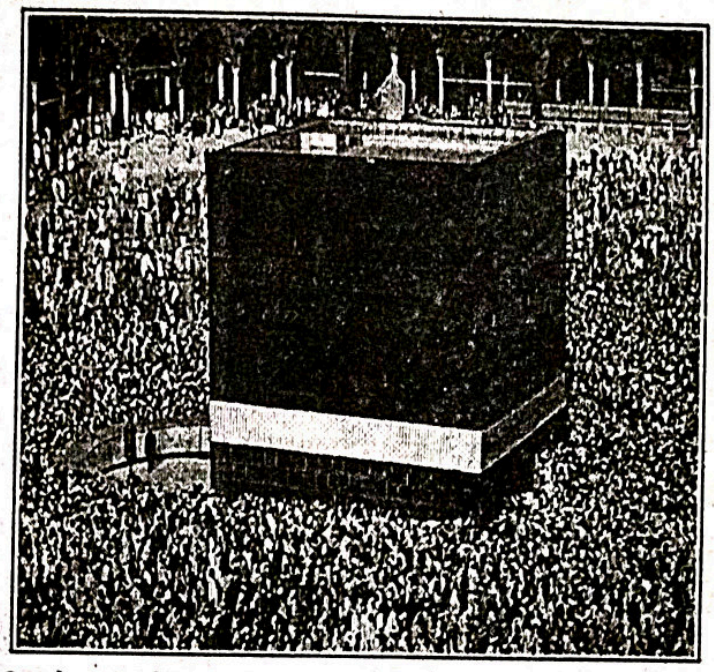

जितने फ़रिश्ते, सब अल्लाह के आगे सजदे में हैं ।"
(कुरआन, 16:43)

संसार की सारी वस्तुएं कुछ निश्चित नियमों की पाबन्द हैं, जिनके अनुसार काम करके ही सभी व्यक्ति उनसे बराबर सेवा का काम ले सकते हैं ।

"जिसने सूरज और चांद को तुम्हारे लिए काम में लगा दिया कि लगातार चले जा रहे हैं और रात और दिन को तुम्हारे लिए वशवर्ती किया ।" (कुरआन, 14:33)

"वह और बहुत-सी चीज़ें (तुम्हारे फ़ायदे के लिए) पैदा करता है जिनका तुम्हें ज्ञान तक नहीं है ।"
(कुरआन, 16:8)

"उसने तुम्हारी भलाई के लिए रात और दिन को और सूरज और चांद को वशीभूत कर रखा है और सब तारे भी उसी के आदेश से वशीभूत हैं ।' (कुरआन, 16:12)

"वही जिसने तुम्हारे लिए हरे-भरे पेड़ से आग पैदा कर दी और तुम उससे अपने चूल्हे रोशन करते हो ।"
(कुरआन, 36:80)

वैज्ञानिक इन नियमों को बनाते नहीं हैं, बल्कि लगातार अवलोकन करके यह मालूम करते हैं कि अमुक विषय में

प्राकृतिक नियम क्या हैं ?

चूंकि प्रत्येक वस्तु से संबंधित इन नियमों को ईश्वर ने उसकी प्रकृति में इस प्रकार रख दिया है कि वे किसी अवस्था में भी उससे अलग नहीं हो सकते, इसी कारण इनको प्राकृतिक नियम कहते हैं ।

"उसी का है वह सब कुछ जो आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और विशुद्ध रूप से उसी का धर्म (संपूर्ण ब्रह्माण्ड में) चल रहा है ।" (कुरआन, 16:52)

"कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी प्रशंसा के साथ उसकी तसबीह (पाकी बयान) न कर रही हो, मगर तुम उनकी तसबीह समझते नहीं हो ।" (कुरआन, 17:44)

जिस प्रकार ईश्वर ने अपनी सृष्टि और उसकी एक-एक वस्तु के लिए अटल प्राकृतिक नियम बना दिये हैं, ठीक उसी प्रकार इन्सान के नैतिक और सामाजिक जीवन के लिए भी ईश्वर के निर्धारित अटल और निश्चित नियम मौजूद हैं, जिनकी ठीक-ठीक पैरवी करने से ही मानवजाति को इस संसार में पूर्ण शांति का जीवन और मरने के बाद मुक्ति प्राप्त हो सकती है ।

"इनसे कहो अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, तुमको सुनने और देखने की शक्तियां दीं और सोचने-समझने वाले दिल दिये ।" (कुरआन, 67:23)

परन्तु इस संसार में प्रकृति और मानवता के लिए ईश्वर के निर्धारित किये हुए प्राकृतिक नियमों में यह अन्तर है कि प्रकृति में ईश्वर ने अपने प्राकृतिक नियमों को बलपूर्वक लागू कर दिया है, जबकि मानवता के लिए ईश्वर ने अपने प्राकृतिक नियमों को बलपूर्वक लागू नहीं किया है, बल्कि उन नियमों की पालना करने या न करने को ईश्वर ने मानव की इच्छा पर छोड़ दिया है ।

"दीन के मामले में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है ।" (कुरआन, 2:256)

"अगर तेरे रब की इच्छा यह होती (कि ज़मीन में सब ईमान वाले और आज्ञाकारी ही हों), तो ज़मीन के सारे वासी ईमान ले आये होते । फिर क्या तू लोगों को मजबूर करेगा कि वे ईमान वाले हो जाएं ?" (कुरआन, 10:99)

चूंकि इस सृष्टि की संपूर्ण प्राकृतिक व्यवस्था ईश्वर के प्राकृतिक नियमों के अधीन है, इसलिए इन नियमों को न मानने के परिणाम तुरंत सामने आ जाते हैं । परन्तु नैतिक तथा सामाजिक नियमों को न मानने का परिणाम तुरंत सामने नहीं आता ।

"अगर कहीं वह लोगों को उनके किये हुए करतूतों पर पकड़ता तो ज़मीन में किसी जीवधारी को जीता न छोड़ता । मगर वह उन्हें एक नियत समय के लिए मुहलत दे रहा है ।" (कुरआन, 35:45)

नैतिक और सामाजिक जीवन से संबंधित ईश-नियमों की शिक्षा को लोगों तक पहुंचाने के लिए ईश्वर ने हर क़ौम में ईशदूतों को भेजा, जिन्होंने ईश्वर की शिक्षाएं ठीक वैसी की वैसी बिना कम और ज़्यादा किये हुए अपनी-अपनी क़ौम तक पहुंचा दी ।

"हमने हर समुदाय में एक रसूल भेज दिया, और उसके द्वारा सबको सूचित कर दिया कि "अल्लाह की बन्दगी करो और बढ़े हुए अवज्ञाकारी (ताग़ूत) की बन्दगी से बचो ।" (कुरआन, 16:36)

"और कोई समुदाय ऐसा नहीं हुआ है जिसमें कोई चेतावनी देने वाला न आया हो ।" (कुरआन, 35:24)

ईश्वर के उन सभी दूतों ने अपने-अपने समय में हर जगह इन्सानों को ईश्वर के सिवा दूसरों की बन्दगी से निकालकर एक ही सत्य धर्म पर जमा किया और उन्हें बताया कि एक ईश्वर को छोड़कर जिन-जिन की भी तुम बन्दगी करते हो, वे सब तुम्हारी तरह उसके बन्दे हैं ।

सभी ईशदूतों की शिक्षा एक ही थी कि यह चांद, ये सितारे, सूरज तथा ज़मीन और आसमान की संपूर्ण शक्तियां, ईश्वर की सृष्टि है । अतः इनकी बन्दगी न करो, बल्कि एक ईश्वर की बन्दगी करो ।

सभी इन्सान आदम (अलैहि०) की संतान हैं, अतः सभी इन्सान आपस में बराबर हैं । महानता इन्सान की नस्ल, वंश, रूप-रंग, इलाक़े में नहीं है, बल्कि ईशभय में है । जो जितना ईश्वर से डरता है, वह उतना ही महान है ।

जब सभी इन्सान एक ही जाति से संबंध रखते हैं, एक ही स्वभाव के मालिक हैं, तो उनके लिए उनके पैदा करने वाले की ओर से देश या काल के कारण विभिन्न धर्म कैसे आ सकते थे ?

दरअस्ल हज़रत आदम (अलैहि०) से लेकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तक तमाम ईशदूतों का एक ही धर्म लेकर आना बुद्धि की मांग है और यही क़ुरआन से प्रमाणित है और ऐतिहासिक सत्य भी यही है । अतएव क़ुरआन में है–

"ऐ नबी, हमने तुम्हारी ओर उसी तरह प्रकाशना भेजी है जिस तरह नूह और उसके बाद के पैग़म्बरों की ओर भेजी थी। हमने इबराहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और याक़ूब की संतान, ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून और सुलैमान की ओर प्रकाशना भेजी। हमने दाऊद को ज़बूर दी। हमने उन रसूलों पर भी प्रकाशना भेजी जिनकी चर्चा हम इससे पहले तुम से कर चुके हैं और उन रसूलों पर भी जिनकी चर्चा तुम से नहीं की। हमने मूसा से इस तरह बातचीत की जिस तरह बातचीत की जाती है। ये सारे रसूल ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजे गये थे ताकि उनको भेज देने के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में कोई तर्क न रहे और अल्लाह हर हाल में प्रभावशाली और तत्वदर्शी है।" (क़ुरआन, 4:163-165)

अन्य ईश-ग्रंथों तथा क़ुरआन में यह अन्तर है कि अन्य ईश-ग्रंथों में धर्म के ठेकेदारों ने परिवर्तन कर लिया, परंतु चूंकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ईश्वर के आख़िरी सन्देष्टा थे, अतः पवित्र क़ुरआन को सुरक्षित रखने का ज़िम्मा ईश्वर ने स्वयं ले लिया। अतः क़ुरआन के नाज़िल होने से क़ियामत तक क़ुरआन पूरी तरह सुरक्षित रहेगा।

"रहा ये ज़िक्र (क़ुरआन), तो इसको हमने उतारा है और हम ख़ुद इसके रक्षक हैं।" (क़ुरआन, 15:9)

अतः सत्य प्रेमियों को चाहिए कि पवित्र क़ुरआन का अध्ययन अवश्य करें, ताकि सीधी राह मिल सके। पवित्र क़ुरआन के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि इसमें वे सारी शिक्षाएं मूलरूप से मौजूद हैं, जो विभिन्न समुदायों और विभिन्न देशों में समय-समय पर आरंभ से ईश्वर की ओर से उतारी जाती रही हैं।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूर्व आये सभी ईशदूत सच्चे थे तथा मुसलमान होने के लिए आवश्यक है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के साथ-साथ उन सब पर भी ईमान लाया जाए। उनमें से किसी एक का भी इन्कार मनुष्य को सत्य धर्म से विमुख कर देता है। अतः क़ुरआन में है–

"मुसलमानों कहो कि, "हम ईमान लाए अल्लाह और उस मार्गदर्शन पर जो हमारी ओर उतरा है और जो इबराहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और याक़ूब की संतान की ओर उतरा था और जो मूसा और ईसा और दूसरे सभी पैग़म्बरों को उनके रब की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह के मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।" (क़ुरआन, 2:136)

इस्लाम किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं है, यह तो उसी का है, जो उस पर चले। चाहे उसका देश, समुदाय, परिवार, रंग-रूप, वंश आदि कुछ भी हो।

अतः इन्सान को सत्य धर्म से परिचित होने का कष्ट अवश्य करना चाहिए।

## हंस कर भी तो तू रोया है

सांसे तेरी अटकी-अटकी,
इच्छाएं हैं भटकी-भटकी।

पाप कर्म में लगा रहेगा,
कैसे फिर तू पार लगेगा।

राहों में जो भूले-भटके,
उन्हें निकालो, जो हैं अटके।

कुछ पाया है, कुछ खोया है,
हंस कर भी तू रोया है।

बहुत मौत से तू लड़ा है,
हिम्मत तेरी तू खड़ा है।

सांसें केवल पूरी करना,
फिर कैसा है तेरा जीना।

ताक़त पर मत, मीत अकड़ना,
जीवन मिलना और बिछुड़ना।

जीवन की बस यही कहानी,
मत कर मानव तू मनमानी।

जीवन को तूम समझो नौका,
बार-बार न मिलता मौक़ा।

जीवन में आये हो भाई,
कुछ तो कर लो मीत भलाई।

**रोहित यादव**
सैदपुर, मंडी अटेली (हरि०)

# अनाथ लड़कों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN BOYS

## यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

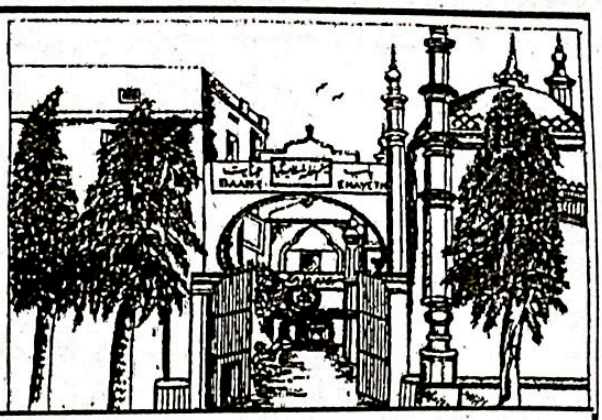

**एक परिचय**

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 97 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2014-2015 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 15000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 24 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 100 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

**नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम अंतिम पड़ाव पर है।**

**यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।**

**नोट :** यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

**Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले**

**अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM,**

**UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)**

**में अपनी रक़म भेज सकते हैं**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE**

**चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता**

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

**LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले**

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 9955655960, 09801213022

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

**Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।**

**नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।**

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन  एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

# इन्सानों की बुनियादी समस्याएं और उनका हल

■ डॉ॰ एम॰ अजमल फ़ारूक़ी

आज अगर हम पूरी दुनिया के हालात पर नज़र डालते हैं, तो पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक उन्नति प्राप्ति से उन्नतिशीलता तक हर जगह और मानव-समाज के हर क्षेत्र में और समाज को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था के हर चीज़ में फ़साद व बिगाड़ असाध्य रोग की तरह बढ़ चुका है। इस सिलसिले में कुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है–

"थल और जल में बिगाड़ पैदा हो गया है लोगों के अपने हाथों की कमाई से ताकि मज़ा चखाये उनको उनके कुछ कर्मों का, शायद कि वे बाज़ आएं।"

(कुरआन, 30:41)

पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति के ध्वजावाहकों ने यह फ़साद व बिगाड़ जाने-अनजाने दोनों तरीक़ों से पैदा किया है और इसे परवान चढ़ाया है। इस फ़साद को और-अपनी करतूतों, मक्कारियों और साज़िशों को छुपाने के लिए तरह-तरह की फ़र्ज़ी, जाली और कृत्रिम समस्याओं को पैदा कर दिये हैं। मानव समानता, लोकतंत्र, आतंकवाद, महिला अधिकार, स्वतंत्रता, मुक्त व्यवसाय और न जाने क्या-क्या दूसरी और महत्वहीन समस्याओं और उनके कारणों को मीडिया के बल-बूते पर सर्वसाधारण के दिल व दिमाग़ में भर देते हैं।

यूनीवर्सिटी ऑफ़ कैलीफ़ोर्निया सान्ता बारबरा के पर्यावरण विद् मार्क ब्राउन ने एक शोध में दुनिया के 18 समुद्री किनारों (हिन्दुस्तान, ब्रिटेन, संगापुर सहित) से पानी के नमूने प्राप्त करके, पाया कि उनमें कृत्रिम तत्वों से बनाये गये कपड़ों की धुलाई के दौरान प्रति धुलाई एक हज़ार नौ सौ फ़ाइबर प्लास्टिक के कण निकलते हैं और ये सब समुद्र में जमा हो रहे हैं और ये सूक्ष्म कण समुद्री जानवरों के गोश्त और त्वचा में जगह बना रहे हैं।

प्लास्टिक खाने वाले जानवरों के पेट में हज़म होकर ये कण उनके ख़ून और मांस में इकट्ठा होकर इन्सानों के भोजन में शामिल होकर इन्सानों को रोगग्रस्त कर रहे हैं। हालात व परिस्थितियों के बिगाड़ में धनिक वर्ग, पदाधिकारी वर्ग, उद्योगों और शिल्पकारों की भूमिका सबसे ज़्यादा आपराधिक है।

ये सब मिलकर मीडिया विशेष रूप से इलेक्ट्रानिक मीडिया और शैक्षिक व्यवस्था की भौतिकतावादी सोच के ज़रिये समाज को अधिक से अधिक उपभोग करने की कमज़ोरी, पदाधिकारियों और उद्योगपतियों की अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने की आदत को बढ़ावा दे रहे हैं। विश्व के सारे प्राकृतिक संसाधन जंगल, ज़मीन, नदी, नाले, खनिज पदार्थों की खानें, जल प्रपात, जानवर सब कुछ नफ़ाख़ोर व्यापारियों, पूंजीपतियों, पदाधिकारियों की हवसगिरी का शिकार हैं। जनता को मीडिया के ज़रिये नया से नया और ज़्यादा से ज़्यादा लाभ प्राप्त करने की होड़ में लगा दिया है और एक ऐसी दौड़ जिसमें हर एक के लिए पराजय होगी और पूरी इन्सानियत को ही नुक़सान उठाना होगा।

**एक और पहलू यह है कि इन्सान विशेष रूप से मानव अधिकार, स्वतंत्रता, उन्नति विकास और शिक्षा की ठेकेदारी का दावा करने वाले अमेरिका और यूरोप ने दुनिया भर में इन्सानों की आबादी से ज़्यादा बरबादी पर धन ख़र्च कराने का शैतानी काम अपनी शैतानी हरकतों के ज़रिये कर रखा है।**

एक और पहलू यह है कि इन्सान विशेष रूप से मानव अधिकार, स्वतंत्रता, उन्नति विकास और शिक्षा की ठेकेदारी का दावा करने वाले अमेरिका और यूरोप ने दुनिया भर में इन्सानों की आबादी से ज़्यादा बरबादी पर धन ख़र्च कराने का शैतानी काम अपनी शैतानी हरकतों के ज़रिये कर रखा है।

दुनिया भर में आज की तारीख़ में 33, सशस्त्र संघर्ष व लड़ाइयां जारी हैं। पूरी दुनिया हथियारों की ख़रीदारी पर

1765, अरब डॉलर हर वर्ष ख़र्च कर रही है, जिसका बड़ा हिस्सा दुनिया के पांच देश अमेरिका, रूस, फ्रांस, जर्मनी और इसराईल के खाते में जाता है । इन हथियारों का इस्तेमाल दुनिया भर में गोरिल्ला युद्धों, आज़ादी की लड़ाइयों और गृह युद्धों में हो रहा है ।

इन्सानों की बुनियादी समस्याओं में से एक समस्या यह भी है कि किसानों को मिलने वाली क़ीमतों में कमी और आम ग्राहक को महंगा अनाज मिलना । खाद्यय वस्तुओं की कमी को बड़ी समस्या बताया जाता है । मगर आंकड़े बता रहे हैं कि 2003 से 2013 के बीच दस वर्षों में अनाज की पैदावार बढ़ी है । गत 5 या 6 वर्षों में थोक भावों में क़ीमत बढ़ रही है ।

जब मूल्य में वृद्धि होती है तो आम जनता को दाम ज़्यादा देने पड़ते हैं, मगर जब मूल्य वैश्विक मंडियों में कम हो जाता है, तो उसका लाभ जनता को नहीं मिलता और इस गबन पर रोकथाम के लिए कोई व्यवस्था भी प्रशासनों के पास नहीं है । अस्ल फ़ायदा जमाख़ोरों, मुनाफ़ाख़ोरों और सट्टेबाज़ों को होता है ।

वैश्विक संस्थाओं ने गत दस वर्षों की एक संयुक्त सूची जारी की है, जिसमें बढ़ती पैदावार और घटते थोक मूल्यों को दिखाया गया है । जैसा कि हम सब भुगत रहे हैं ।

ये तो केवल कुछ मुख्य समस्याएं हैं, जिनसे यह पता चलता है कि दुनिया में आज जो भी समस्याएं हैं, चाहे शांति व्यवस्था का हो, खाद्य पदार्थों का हो; पर्यावरणीय, रोज़गार या बढ़ती महंगाई का हो, हर एक की जड़ में इन्सानों का धनिक वर्ग और पदाधिकारी वर्ग ही मौजूद है, मगर यह गिरोह अपनी मक्कारी से इसका आरोप झूठी और मनगढ़ंत समस्याओं पर थोप देता है । इन समस्याओं की तह में जाया जाए, तो मालूम होगा कि यह पूंजीपति, उद्योगपति, प्रशासनिक अधिकारी वर्ग किस तरह राष्ट्र, क़ौम, रंग, नस्ल के हितों की रक्षा के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का लूट मचाना है, मूल्य वृद्धि के लिए प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करता है, राष्ट्रों के मध्य युद्धों को भड़काता है और निर्धन कमज़ोर जनता को समस्या की जड़ बताता है, जबकि आंकड़े बताते हैं कि समस्या की जड़ जनसंख्या नहीं है, बल्कि हद से ज़्यादा ख़र्च और संसाधनों का उपभोग करना है । क़ुरआन मजीद में है–

"और खाओ-पियो और सीमा से आगे न बढ़ो, अल्लाह सीमा से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता ।"

(क़ुरआन, 7:31)

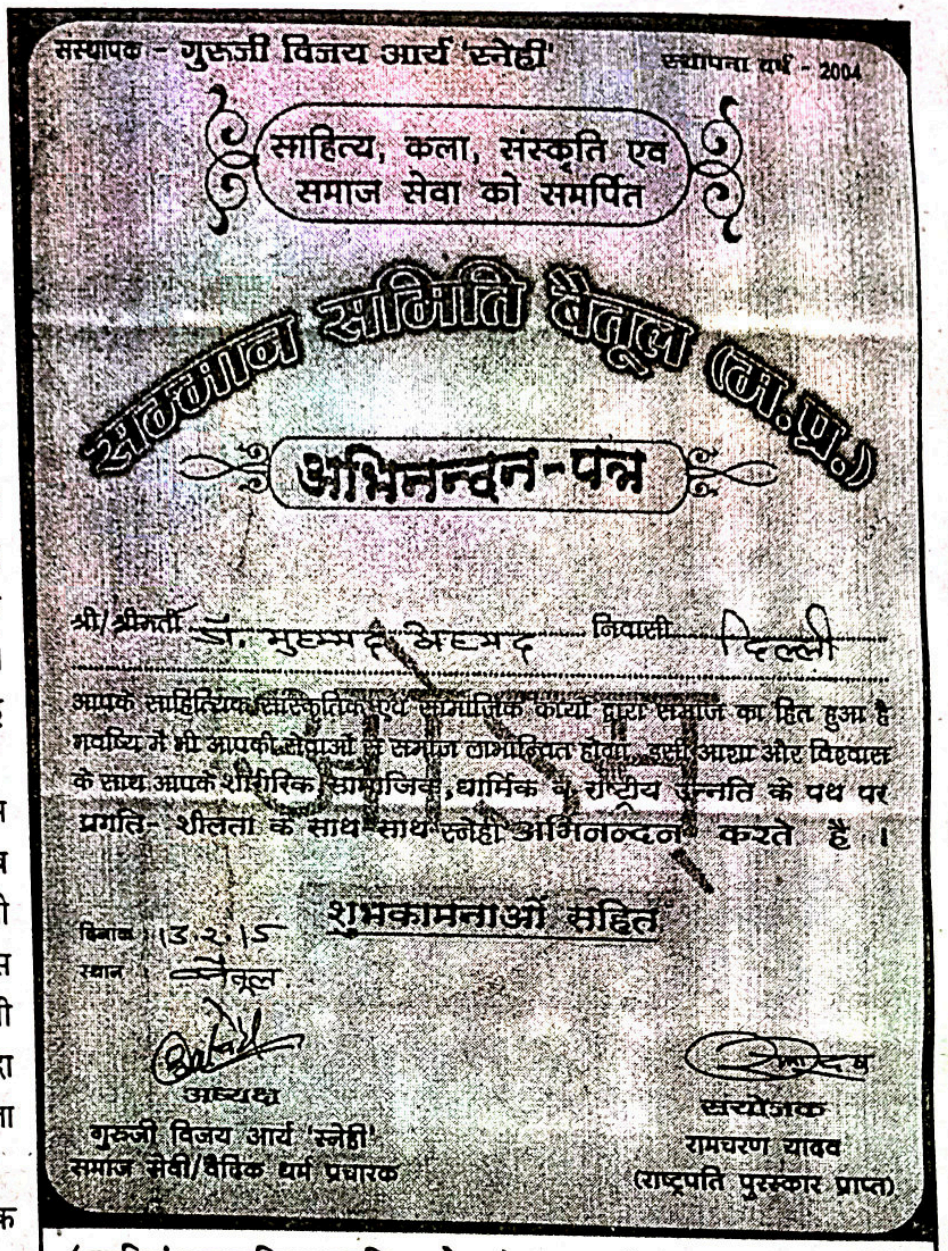


**'कान्ति' साप्ताहिक/मासिक के संपादक डॉ॰ मुहम्मद अहमद को साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए सम्मान समिति बैतूल मध्य प्रदेश द्वारा विगत 13 फ़रवरी 2015 को सम्मानित किया गया ।**

# 'न माधो को कुछ देना न ऊधो को कुछ लेना'

■ जयप्रकाश वाल्मीकि
(जयपुर, राज०)

शाम का समय था । मैं साइकिल से जयपुर महानगर ऐसे रोड़ से गुज़र रहा था जो चौड़ा था तथा उस पर लंबी विभाजन रेखा बनी हुई थी । इसलिए वाहन अबाध गति से गुज़र रहे थे ।

मैं आगे बढ़ा तो देखा कुत्ते का बच्चा किसी वाहन से टकरा कर तड़प रहा था । लोग देखते और आगे बढ़ जाते । मैंने भी उसे देखा और अपनी साइकिल आगे बढ़ा दी । किन्तु मन नहीं माना, मैं वापस उस जगह पर आ गया । साइकिल को किनारे खड़ी कर मैं यह देखने के लिए उसके पास जाना चाहा कि वह कितना घायल है । किन्तु कारों का तेज़ क़ाफ़िला उस तक पहुंचने में बाधक बन गया । मैं किनारे पर ही खड़ा रहा ।

उस दौरान मैंने देखा–एक कुतिया जो उस घायल बच्चे की मां थी । वह भी उस तक पहुंचने की न जाने कब से प्रयन्त कर रही थी । अब मेरा पूरा ध्यान उस कुतिया पर केन्द्रित हो गया । वह जैसे ही अपने घायल बच्चे के पास जाने को आगे बढ़ती, चार-पांच गाड़ियों का रेला फर्राटे के साथ आ जाता । वह फिर से पीछे हट जाती और मौक़ा देखकर फिर से आगे बढ़ने को होती और तेज़ गति से गुज़रने वाली कारें उसे फिर से पीछे लौटने को मजबूर कर देतीं, लेकिन अपने बच्चे के पास जाने की उसकी जिद्दोजहद बराबर बनी रही ।

भले दूर से ही सही उसकी कातर दृष्टि अपने बच्चे पर ही थी । उसका अधीर मन रह-रहकर उसके चेहरे पर उतर आता । ख़ैर, जैसे-तैसे वह अपने बच्चे के पास पहुंचने में सफल हो गयी, पास पहुंचकर उसने अपने मुंह से बच्चे को हिलाया-डुलाया, फिर वह कुछ देर उसके पास खड़ी उसे निहारती रही । शनैःशनैः अंधेरा छाने लगा, पर गाड़ियों का आना कम न हुआ, इसलिए वह ज़्यादा देर अपने बच्चे के पास खड़ी न रह सकी और फुटपाट पर लौट आयी ।

मैंने भी पास जाकर उस बच्चे को देखा । उसके प्राण पखेरू उड़ गये थे । मृत शरीर ख़ून से लथपथ बेजान पड़ा था । मैंने उसे छड़ी से डिवाइटर से सटा दिया ताकि दूसरी गाड़ियां उसे कुचल न सके और कुटपाथ पर आकर अपनी साइकिल संभाली और रवाना होने से पूर्व उस कुतिया को देखा वह उदास खड़ी अभी भी अपने मृत बच्चे को ही देख रही थी । न जुबां पर कोई भाषा न मुंह से चीत्कार । पर उसका मौन और हृदय में उठ रहा ममत्व का भाव मैं स्पष्ट तौर पर महसूस कर रहा था ।

मैं रास्ते में सोचने लगा...कुतिया का वह बच्चा बड़ा होकर क्या अपनी मां का सहारा बनता ? हम सभी जानते हैं कि पशु-पक्षियों में ऐसा थोड़े ही होता है । चिड़ियाएं कहीं-कहीं से दाना चुनकर लाती है और घोंसले में पल रहे अपने बच्चों के मुंह से अपने बच्चों को चुगाती है । एक दिन ऐसा आता है, बच्चों के पंख निकल आते हैं और वे घोंसले से फुर्र से निकल जाते हैं और ऐसे में 'न माधो को कुछ देना न ऊधो को कुछ लेना' वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है ।

फिर भी पशु-पक्षियों की अपने बच्चों के प्रति ममता देखने लायक़ होती है । बकरी अपने मेमने को, गाय अपने बछड़े को देखकर थनों में दूध पावसने लगती है । पशु पालक जानवरों की इसी लगावपूर्ण प्रवृत्ति का लाभ उठाने के लिए दूध दोहन के समय बछड़ों, मेमनों को पहले दूध पीने के लिए छोड़ते हैं और जैस ही गाय, भैंस और बकरी दूध पावस देती है, तो पशुओं के बच्चों को थन से हटा लिया जाता है और इस तरह पूरा दूध दूह लिया जाता है ।

ख़ैर, ऐसा ही ममत्व के भाव से सराबोर उस कुतिया का अरण्यरोद्दन को देखकर मैंने अनुभव किया कि इन्सानों में ही नहीं पशु-पक्षियों में मां तो मां ही होती है । फिर भी इन्सानों के मन-मस्तिष्क के एक कोने में एक-दूसरे के प्रति कुछ अपेक्षाएं तो ज़रूर होती है । वे पलती रहती हैं । जैसे ही अपेक्षाएं खंडित हुई । हमारा अनुराग दुख, क्रोध और आरोपण में बदल जाता है । पशु-पक्षी इन भावों से विरत रहते हैं ।

# आचार्य विनोबा भावे का सुप्रयास

■ राजेश सरकार
(संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

पेरिस में "शार्ली अब्दो" के कार्यालय पर हमले की घटना निर्विवाद रूप से भर्त्सना योग्य है । कोई भी सभ्य समाज हिंसा की वकालत नहीं कर सकता । किन्तु हमारा भी यह दायित्व है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रयोग करते समय हमारी अभिव्यक्ति इतनी नकारात्मक न हो कि वह समाज को भड़काने वाला सिद्ध होने लगे । लोकतांत्रिक व्यवस्था में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का विशेष महत्व है किंतु इस स्वतंत्रता की अपनी सीमाएं हैं । कभी-कभी इस स्वतंत्रता की अति सामाजिक एवं धार्मिक तनाव को जन्म देती है ।

यूरोप में समाज के स्थान पर व्यक्तिवाद को पोषित किया, किन्तु भारत का चरित्र सदा से ही बहुलतावादी रहा है । हमारे संविधान निर्माताओं ने इस सत्यता को स्वीकार करते हुए वाक् स्वतंत्रता की मर्यादा को सुनिश्चित करके अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया । किन्तु क्या चरमपंथियों का यह कृत्य धर्मसम्मत था ? क्या वह इस्लाम की शिक्षा है ? क्या यह पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का आदेश है ? क्या इसे वैध कहा जा सकता है ? यदि अरब के इतिहास एवं पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन चरित्र पर दृष्टिपात करें तो इस प्रसंग में एक घटना स्मरण में आती है कि अरब में जब विधर्मियों के द्वारा आपके विरुद्ध दुष्प्रचार का अभियान छेड़ा गया तब आप पर दोषारोपण किया जाना लगा ।

उस समय शक्ति सम्पन्न होते हुए भी आपके द्वारा किसी भी प्रकार के हिंसात्मक मार्ग को स्वीकार नहीं किया गया । अपितु इसके शांतिपूर्ण प्रतीकार के लिए आपने तत्कालीन अरबी के प्रसिद्ध कवि हस्सान बिन साबित (रज़ि०) ने आपका सहयोग किया । उन्होंने कहा कि हे पैग़म्बर (सल्ल०) "मैं अपनी कविताओं द्वारा आपको इन दुष्प्रचारों के मध्य से वैसे ही निकाल लूंगा, जिस प्रकार गुंथे आटे से कील निकाल ली जाती है ।" जिसने स्वयं को

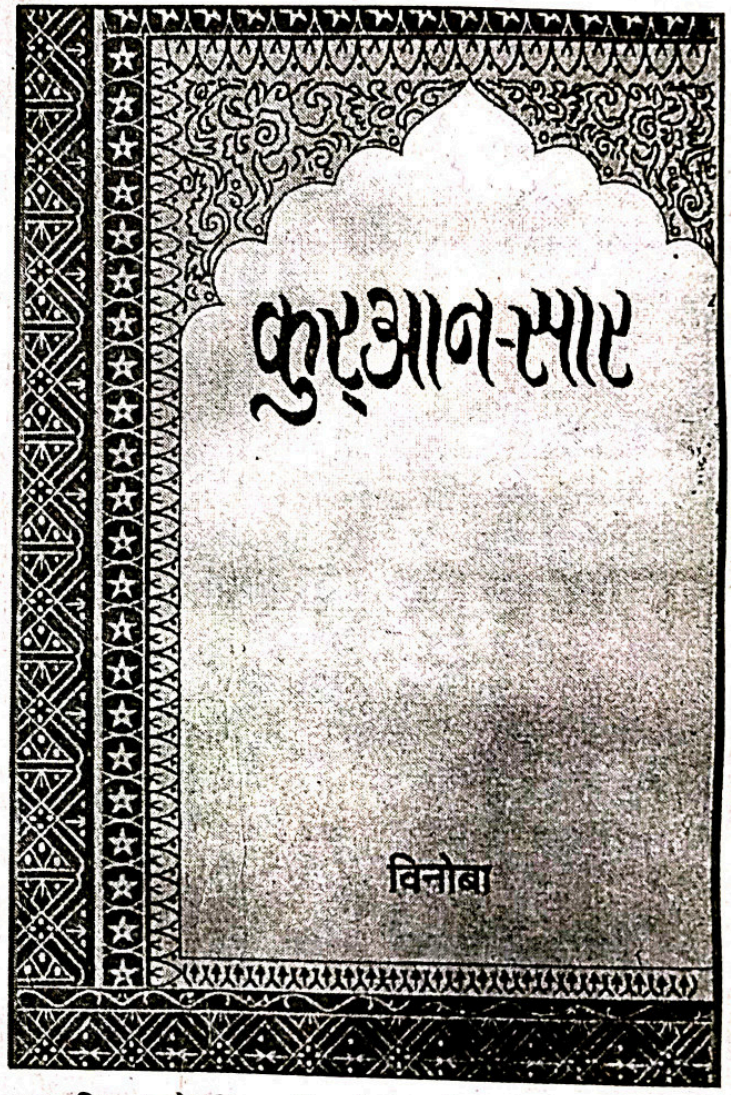


अपमानित करने, प्रियजनों एवं स्वजनों की हत्या करने वाले विरोधियों तक को क्षमा कर दिया, यह उस महापुरुष की शिक्षा कदापि नहीं हो सकती ।

निश्चित रूप से यह कार्य इस्लाम की मूलभूत शिक्षाओं के विरुद्ध था । यह घटना धर्म की मूलभूत शिक्षा को भली प्रकार न समझने का दुष्परिणाम था । वर्तमान समय में सभी धर्मों की मूलभूत शिक्षाओं के सार को समझना बहुत आवश्यक हो गया है । समय-समय पर मनीषियों के द्वारा इस संबंध में प्रयास किये जाते रहे हैं ।

इसी प्रसंग में कुछ वर्षों पूर्व भूदान आन्दोलन के प्रवर्तक, गांधी जी के शिष्य आचार्य विनोबा भावे द्वारा मूल

# क़ुरआन सार : एक परिचय

**वर्तमान समय में सभी धर्मों की मूलभूत शिक्षाओं के सार को समझना बहुत आवश्यक हो गया है । समय-समय पर मनीषियों के द्वारा इस संबंध में प्रयास किये जाते रहे हैं । इसी प्रसंग में कुछ वर्षों पूर्व भूदान आन्दोलन के प्रवर्तक, गांधी जी के शिष्य आचार्य विनोबा भावे द्वारा मूल अरबी सहित क़ुरआन का गंभीर अनुशीलन कर जनमानस के लिए बोधगम्य मराठी भाषा में 'रूहुल क़ुरआन' नाम से संक्षिप्त क़ुरआन सार तैयार किया गया । संपूर्ण क़ुरआन में से 1065 आयतें क़ुरआन सार में उद्धृत की गयी है । कौन आयत किस सूरह (अध्याय) की है, उसका संदर्भ यथास्थान दे दिया गया है ।**

अरबी सहित क़ुरआन का गंभीर अनुशीलन कर जनमानस के लिए बोधगम्य मराठी भाषा में 'रूहुल क़ुरआन' नाम से संक्षिप्त क़ुरआन सार तैयार किया गया । संपूर्ण क़ुरआन में से 1065 आयतें क़ुरआन सार में उद्धृत की गयी है । कौन आयत किस सूरह (अध्याय) की है, उसका संदर्भ यथास्थान दे दिया गया है । इस ग्रंथ में 'क़ुरआन-शरीफ़' से निम्नलिखित सूरह संपूर्ण रूप में लिए गये हैं–

1, 92, 93, 94 96, 99, 101, 102, 103, 104, 107, 112, 113, 114 इस संपूर्ण क़ुरआन सार का हिन्दी अनुवाद आचार्य विनोबा भावे के शिष्य अच्युत देश पांडे जिन्हें विनोबा प्रेम से मियां जी कहकर बुलाते थे ने किया है । इस सार को तैयार करने के लिए आचार्य द्वारा मूल क़ुरआन (अरबी), विभिन्न अनुवाद एवं सहायक ग्रंथों की सहायता ली गयी है । जो इस प्रकार है–

**क़ुरआन शरीफ़ के अंग्रेज़ी अनुवाद और भाष्य–**

(1) एम॰ पिक्थाल का अनुवाद, (2) पामर का अनुवाद, (3) यूसुफ़ अली का अनुवाद, (4) मौलवी शेर अली का अनुवाद ।

**उर्दू अनुवाद और भाष्य–**

(1) "क़ुरआनुल मजीद"–हज़रत शैखुल हिन्द मौलाना मुहम्मद हसन और मौलाना शबीर अहमद उस्मानी (देवबंदी)।

(2) "क़ुरआनुल हकीम"–शाह रफ़ीउद्दीन साहब 'देहलवी' और मौलाना अशरफ़ अली थानवी ।

(3) "तफ़्सीरे सग़ीर"–हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन अहमद साहब, इमाम जमायते अहमदिया ।

(4) "हिमाइल शरीफ़"–शमसुल उलमा जनाब हाफ़िज़ नज़ीर अहमद ख़ां ।

**अंग्रेज़ी सन्दर्भ ग्रंथ–**

"कन्कोर्डनस एंड ग्लौसरी ऑफ़ क़ुरआन"–क्रिश्चियन मिशन बनारस द्वारा प्रकाशित ।

**उर्दू सन्दर्भ ग्रंथ–**

'लुग़ातुल क़ुरआन' (6 जिल्दें) प्रकाशक-नदवतुल मुसन्निफ़ीन, जामा मस्जिद, देहली ।

विनोबा जी ने क़ुरआन का अध्ययन स्थानीय मौलाना से प्रारंभ किया । इसके अतिरिक्त विनोबा जी को क़ुरआन पढ़ने समझने के लिए एक और गुरु मिल गया वह था ऑल इंडिया रेडियो (दिल्ली) से प्रसारित होने वाला क़ुरआन का पाठ । विनोबा जी रेडियो खोल देते और अपनी सहज स्वभाव सिद्ध एकाग्रता से क़ुरआन पाठ सुना करते थे ।

क़ुरआन-सार के खंडों का जो अनुक्रम निश्चित किया गया है वह संस्कृत में अनुदित 'सूरह-बक़रा' की प्रारंभिक पांच आयतों के क्रम के समान है । 'क़ुरआन-सार' के 9 खंडों तथा 90 प्रकरणों के नाम कंठस्थ करने के लिए

विनोबा जी द्वारा निम्नलिखित श्लोक रचा गया है ।

**( खंड नाम )**

1. आरम्भे, 2. तदनुध्यानं, 3. भक्त्या, 4. भक्तैर्निषेवितम्, 5. धर्म, 6. नीति, 7. मनुष्याणां, 8. प्रेषितैर्, 9. गूढशोधनम् ।

**( प्रकरण नाम )**

1. सप्तकं, 2. सारतत्वं च, 3. सरलं तत्, 4. शुचिः पठेत्, । 1

5. एक एवा, 6. द्वितीयश्च, 7. प्रकाशो, 8. ज्ञानमेव च-2

9. दयालुर्, 10. दानवान्, 11. कर्त्ता, 12. सुरूपः, 13. सुप्रकेतनः,

14. सर्वशक्तिः, 15. स्वतंत्रेच्छो, 16. मनोवाधामगोचरः,

17. नामभिर्घोषित, 18. श्चावि:, 19. प्रार्थनीयः पुनः पुनः ।

20. उपासनोपदिष्टेयं, 21. या धृता भौतिकैरपि,-3

22. निंष्ठा, 23. त्यागस्, 24. तपश्चर्या, 25. धैर्यमद्भक्तिलक्षणम्,

26. सत्सङ्गः, 27. क्षणिको भावो, 28. वैराग्यं च तदुद्भवम्,

29. लक्षण्याः, 30. प्रार्थनावन्तो, 31. नैष्ठिकाः, 32. धैर्यशालिनः -4

33. अहिंसका ये मद्भक्ता, 34. मद्दूतैरभिरक्षिताः,

35. नास्तिका, 36. भ्रान्त चित्तास्तु, 37. मोघा, 38. निरयगामिनः,

39. धर्मनिष्ठा, 40. सहिष्णुत्वं, 41. लोकसंग्रह-योजना-5

42. सत्यधीरो, 43. वदेद् वाक्यं सत्यं, 44. शिवम्, 45. अनिन्दनम्-6

46. न्यायं रक्षेत्, 47. परं न्यायात् करुणैव गरीयसी,

48. अहिंसायां दृढ़ श्रद्धा, 49. स्नेहेन सह जीवनम्,

50. पापैरसहकारश्च, 51. प्रतीकारश्च संयतः,

52. अस्वादो, 53. वासनाशुद्धिर्, 54. अस्तेयं, 55. मित-संग्रहः,

56. दानं, 57. शिवानुसन्धानं, 58. नीतिर, 59. आचार-पालनम्,

60. वैशेष्येऽपि मनुष्याणां, 61. दौर्बल्यं, 62. पाप वश्यता-7

63. निर्मातरि कृतघ्नत्वं, 64. नास्तिकास्तिकयोर्भिदा,

65. साधारणा, 66. मनुष्यास्तु, 67. धीरा ये, 68. तत्स्मृतिः शुभा,-8

69-72, अत्र प्रकाशिताः केचित्, 73. सन्त्यन्येऽप्यप्रकाशिताः,

74. प्रातिभं, 75. चेश्वरादेशो, 76. घोषणा, 77. गुण-संश्रयः,

78. कार्यं पञ्चविधं यस्य, स 79. चाशीर्वादमर्हति,

80. विश्वं, 81. जीवं, 82. 'परात्मानं नैवं तर्केण योजयेत्-9

83. श्रद्दधानः संविधानं, 84. विपाकं, 85. मरणोत्तरम्,

86. समुत्तिष्ठ दिनं 87. पश्य, 88. विविध्य विविधो गतीः

89. तुष्टामन् प्रविशोद्यानं, 90. प्राप्नुहि प्रेम चैश्वरम् ।

**विनोबा जी ने कुरआन का अध्ययन स्थानीय मौलाना से प्रारंभ किया । इसके अतिरिक्त विनोबा जी को कुरआन पढ़ने समझने के लिए एक और गुरु मिल गया वह था ऑल इंडिया रेडियो ( दिल्ली ) से प्रसारित होने वाला कुरआन का पाठ । विनोबा जी रेडियो खोल देते और अपनी सहज स्वभाव सिद्ध एकाग्रता से कुरआन पाठ सुना करते थे ।**

विनोबा जी रचित उपर्युक्त श्लोकों के माध्यम से सामान्य जन भी 'कुरआन-सार' के 9 खंडों एवं 90 प्रकरणों को सरलता से स्मरण कर सकता है । इसी संस्कृत सूत्रों के आधार पर विनोबा जी बंगाल की पदयात्रा के समय 11-15 से अक्तूबर 1962 ई॰ में प्रतिदिन प्रातः आधा-पौन घंटा 'कुरआन सार' का परिचय दिया करते थे ।

आपने कुरआन के कुछ अरबी शब्दों को समझाने के लिए विशिष्ट पर्याय शब्द गढ़े हैं, जो इस प्रकार हैं–

रहमान (कृपावान्) रहीम (करुणावान्) अहले किताब (ग्रंथवान्) तस्बीह (जयजयकार) इनफ़ाक (दान) वह्य (प्रज्ञान्) सजदा (प्रणिपात) शिर्क (विभक्ति) मुशरिक (विभक्त) इस्लाम (शरणता) वसवसा (विकार) ईमान

(श्रद्धा) मोमिन (श्रद्धावान्) काफ़िर मुल्हिद (श्रद्धाहीन, अभक्त, नास्तिक) नबी (सन्देष्टा) पैग़म्बर (प्रेषित) इत्यादि।

अलिफ़ लाम मीम, यासीन, ताहा इत्यादि कूट पदों को यथावात रहने दिया गया है। अनूदित 'कुरआन सार' के 'सूरततुल फ़ातिमा' जिसका अनुवाद 'मंगलाचरण' नाम से किया गया है–इस संदर्भ में द्रष्टव्य है।

अल-फ़ातिहा (मंगलाचरण)

प्रारंभ करता हूं परमात्मा के नाम से, जो परम कृपालु अतीव करुणावान् है।

प्रत्येक स्तुति परमात्मा के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है। -2

परम कृपालु अत्यंत करुणावान्, -3

अंतिम दिन के स्वामी, -4

हे परमात्मन्, हम तेरी ही भक्ति करते हैं और तुझ से ही याचना करते हैं, -5

हमे सीधा रास्ता दिखा, -6

रास्ता उन लोगों का, जिनके ऊपर तूने दया की है, न कि उनका, जिन पर तेरा प्रकोप हुआ, और न उनका जो भ्रमित हुए। -7 (कुरआन, 1:1-7)

इस कुरआन सार में आयतों का चयन करते समय विनोबा जी कौन-सी आयत लेनी है उसके नीचे निशान लगा देते थे। कौन-सी आयत पूरी लेनी है और कौन-सी अंश मात्र उस पर विचार करते। इस प्रकार जितनी आयतों को रखना उन्होंने आवश्यक समझा, उन्हें विषयानुसार भिन्न-भिन्न विषयों के नीचे ज़माने के लिए किताब के विभाग, अध्याय और प्रकरण निश्चित कर दिये। उनका उद्देश्य कुरआन की आध्यात्मिक शिक्षाओं को संसार के सम्मुख प्रस्तुत करना था जैसा कि उन्होंने उर्दू में प्रकाशित होने वाली 'भूदान तहरीक' पत्रिका के संपादक अहमद फ़ातमी साहब को एक पत्र में लिखा था–

'कुरआन की रूहानी तालीम (आध्यात्मिक सीख) दुनिया के सामने पेश करने के लिए इस किताब का उपयोग होगा।'

इस ग्रंथ की रचना में विनोबा जी निरंतर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान और राष्ट्रपिता गांधी जी से प्रेरणा पाते रहे। राष्ट्रपिता के उद्गार इस प्रकार थे–

'हम में से किसी को तो यह कार्य करना ही था। विनोबा कर रहा है, यह आनन्द का विषय है।'

इससे ही इस पुस्तक का महत्व स्पष्ट है। पुस्तक 108 पुष्ठ की है। पुस्तक का संपादन विनोबा जी द्वारा किया गया है। इसके बारह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। बारहवें संस्करण (2013) में इसकी 3000 प्रतियों के साथ अब तक 4100 प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। ग्रंथ सर्वसेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी से प्रकाशित है एवं इसका मूल्य 60 रुपये है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो॰ सैयद हसन अब्बास, डॉ॰ अक़ील अहमद (फ़ारसी विभाग काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय) अपने धर्ममर्मज्ञ अनुज अरमान अहमद (शोध छात्र अरबी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) एवं इस्लाम धर्मदर्शन पर शोध कार्य में संलग्न मित्र महफ़ूज़ अशरफ़ से इस्लाम धर्मदर्शन का जितना भी ज्ञान प्राप्त किया, उसी आधार पर मैंने इस समीक्षा को करने का दुस्साहस किया है। जो भी हो वर्तमान संदर्भ में धर्म की मूलभूत सकारात्मक शिक्षाओं की आवश्यकता कहीं अधिक गढ़ गयी है। युवा वर्ग को संबल देने के लिए अध्यात्म की सकारात्मक शिक्षा की उपयोगिता कहीं अधिक बढ़ी है अन्यथा हमें उस दुष्परिणाम से कोई नहीं बचा सकता जिसकी घोषणा अकबर इलाहाबादी ने अपने इस शेअ्र में बहुत पहले ही कर दिया था–

भूलता जाता है यूरोप आसमानी बाप को
बस खुदा समझा है उसने चिमनियों और भाप को।
गिर जाएगी सब चिमनियां उड़ जाएगी भाप इक दिन
देखना यारो बचाए रखना अपने आपको।

**For Information On**
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
**Syed Shahbaz Alam Barvi**
Business Development Director (09049185093)
**Visit us:**
www.shoppinglanes.com

# यह बढ़ता पीढ़ी दर पीढ़ी अन्तर

■ प्रो॰ शामलाल कौशल

कोई ज़माना था जबकि पिता, दादा, चाचा, ताऊ आदि सभी इकट्ठे रहते थे । बच्चों को कहानियों के द्वारा अच्छे संस्कारों की शिक्षा संयुक्त परिवारों के द्वारा ही दी जाती थी । बड़ों, बुज़ुर्गों, युवकों, पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों में एक-दूसरे के प्रति मान-सम्मान, त्याग, प्रेम, सहयोग, समझ तथा समर्थन की भावना होती थी । घर के बड़े बुज़ुर्ग के द्वारा कहा हुआ प्रत्येक शब्द आदेश या उपदेश होता था जिसकी अवहेलना करने की किसी में हिम्मत नहीं होती थी और बड़े बुज़ुर्ग भी परिवार के सभी सदस्यों के लिए कुछ भी करने के लिए तत्पर होते थे ।

लेकिन अब ज़माना बदल गया है । आज पीढ़ी के अन्तर के कारण सोच, समझ, पसन्द आदि में काफ़ी फ़र्क़ आ गया है । बेशक तब्दीली प्रकृति का नियम है लेकिन अगर वह तब्दीली अच्छी न होकर बुरी हो तो इस तब्दीली का स्वागत तथा प्रशंसा कोई नहीं करेगा । वैसे तो पीढ़ी का अन्तर सदा रहा है तथा रहेगा लेकिन अगर इसी पीढ़ी के अन्तर या जेनरेशन गैप के कारण बुज़ुर्ग तथा युवा वर्ग एक-दूसरे का सम्मान करने के बदले में एक दूसरे की अवमानना, तिरस्कार तथा अवहेलना करने लग जाए, एक-दूसरे की आलोचना करें तो वह अच्छी बात नहीं । आज विचारों, पसन्द तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर के कारण युवा वर्ग तो बुज़ुर्गों को "पिछड़ा हुआ" या दकियानूस या पागल कहने लगा है तथा पुरानी पीढ़ी के लोग नयी पीढ़ी के लोगों के प्रति कोई अच्छे विचार नहीं रखते । उनका कहना है कि आज की युवा पीढ़ी स्वार्थी, गुस्सैल, अहंकारी, हर बात में जल्दी करने वाली, झगड़ालू, कामचोर, लापरवाह, संवेदनशील, फ़िज़ूलख़र्च तथा कृतघ्न हैं । अपने माता-पिता, बड़े-बुज़ुर्गों तथा गुरुजनों का मान-सम्मान तथा सेवा करने वाले नहीं है । उनमें संयम बिल्कुल नहीं वे किसी क़ाम को धीरे-धीरे करने के बदले में एकदम और बहुत जल्दी बड़ी सफलता प्राप्त कर लेना चाहते हैं । वे परिवार के सदस्यों के साथ मिल-जुलकर रहने के बदले में अकेले ही रहना बेहतर समझते हैं । संस्कारों के प्रति उनका कोई रुझान नहीं । आज की पीढ़ी जीवन में नैतिकता को कोई महत्व नहीं देती । अपनों के बदले में बेगानों के साथ मेल-मिलाप बढ़ाना ज़्यादा पसन्द करती है, जबकि पुरानी पीढ़ी नैतिकता के प्रति अपेक्षाकृत ज़्यादा सजग थी । इस तरह पीढ़ी का अन्तर बढ़ता ही जा रहा है । इसी अन्तर के कारण आज की युवा पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से पीछा छुड़ाने के लिए उसे घर के एक अपेक्षित कोने में धकेल देती है । उसकी सम्पत्ति हड़प कर लेती है । मार-पीट करती है तथा वृद्धाश्रम में धकेल देती है ।

मोबाइल, एस॰एम॰एस॰, ई-मेल, इंटरनेट के युग में आज की पुरानी पीढ़ी अपने आपको असहज समझती है । जिस तरह आजकल बच्चे-युवा वर्ग स्वतंत्रतापूर्वक एक-दूसरे के साथ निस्संकोच हंसते, खेलते, उठते-बैठते तथा घूमते-फिरते हैं पुरानी पीढ़ी उसे सहन नहीं कर सकती । पीढ़ी के अन्तर का मुख्य कारण तेज़ी से होता आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन तथा संपर्क का अभाव है । पीढ़ी का अन्तर तो सदा रहेगा ही । लेकिन इस अन्तर को कम करने का तरीक़ा यही है कि दोनों पक्ष एक-दूसरे को समझें, एक-दूसरे के दोष न निकालें । एक-दूसरे की अच्छी बातें ग्रहण करें । अगर बुज़ुर्ग पीढ़ी के पास ज्ञान तथा अनुभव है तो नयी पीढ़ी के पास जोश तथा आधुनिक तकनीक है । पुरानी पीढ़ी को भी चाहिए कि वह नयी पीढ़ी को समझे, पुराने व्यर्थ के मूल्यों को अपनाने के लिए उसे बाध्य न करे तथा बदले हुए समय के साथ यथासंभव समझौता करे । नयी पीढ़ी को भी चाहिए कि वह इस तथ्य को समझे कि उसे जो विरासत में अच्छी बातें मिली हुई हैं, उनको संभाल कर रखे, बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करे, उनकी ज़रूरतों को पूरा करे, उनकी देखभाल करे । अगर कोई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की सेवा करेगी, उसकी ज़रूरतों को पूरा करे, उनकी देखभाल करेगी तो इस पीढ़ी के बच्चे भी अपने बुज़ुर्गों से सम्मान तथा सद्भावना से पेश आएंगे । अगर कोई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के अन्तर को कम करने का तरीक़ा ही यही है दोनों में सामंजस्य, सम्मान, समर्पण भावना, समझ तथा आपसी सहयोग हो । स्वस्थ समाज के लिए दोनों ज़रूरी है । दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, प्रतियोगी नहीं ।

# पंजाब के हिन्दी कथा-साहित्य की दिशा

■ बोस्की मैंगी

(प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, हिन्दू कन्या महाविद्यालय,
धारावाल, गुरदासपुर, पंजाब)

हिन्दी कथा-साहित्य के विकास में पंजाब की अमूल्य देन है । पंजाब के हिन्दी कथाकारों के बिना हिन्दी कथा-साहित्य की संपूर्णता की कल्पना ही नहीं की जा सकती । पंजाब के कथाकार ने अपने विशेष प्रयोगों से इस प्रांत के विविध रंगों और अपनी संवेदनाओं से कथा-साहित्य को ऊंचाइयां प्रदान करवाने में अहम योगदान दिया है । पंजाब के हिन्दी कथा-साहित्य में जिन प्रवृत्तियों एवं विषयों की व्यापकता पायी जाती है, उनका विश्लेषण निम्न शीर्षकों के अंतर्गत किया गया है–

### 1. देश विभाजन एवं साम्प्रदायिकता का चित्रण

स्वतंत्रता उपरांत देश विभाजन एवं साम्प्रदायिक तनाव का दंश पंजाबी जनमानस को सहना पड़ा । कथाकारों ने विभाजन व इससे उत्पन्न वेदना, संत्रास, लूट के यथार्थ चित्र अपने साहित्य में प्रस्तुत किये । उपेन्द्रनाथ अश्क की 'चारा काटने की मशीन' भीष्म साहनी की 'अमृतसर आ गया' और विष्णु प्रभाकर की 'अगम अथाह' विभाजन की विभीषिका को चित्रित करती है । अज्ञेय जी की 'शरणदाता' में साम्प्रदायिक विषमता, पंजाब का विभाजन और विभाजन के उपरांत स्थिति का चित्रांकन हुआ । महीप सिंह की कहानी 'पानी और पुल' विभाजन के बाद की स्थिति को दर्शाती है, जिसमें पात्र नरेन्द्र का मामा कहता है–"पहले तो मार-मारकर यहां से निकाल दिया । अब कहते हैं, वापस आ जाओ । यही है जटिल यथार्थ ।"[1] विभाजन के इस दुर्घटना का असर क्षणिक नहीं था ।

विष्णु प्रभाकर के अनुसार–"हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष का कारण सामाजिक अलगाव है । धीरे-धीरे विद्वेष फिर दंगों के रूप में फूट पड़ता है इसी कारण देश का विभाजन हुआ और फ़लस्वरूप मानवता के इतिहास में एक कलंक लगा ।"[2] राकेश वत्स कृत 'कर्फ्यू में भी विभाजन व विभाजनोपरांत दो स्थितियां हैं । लोगों की दयनीय दशा है । वही स्वतंत्रता उपरांत गोली चलने से शहर में कर्फ्यू लगा है, जहां सिख नायक अपनी ही मिलिट्री की गोली का निशाना बन जाता है ।[3] इसके अतिरिक्त सत्य प्रकाश संगर कृत 'कोलाहल', राजी सेठ कृत 'किसका इतिहास', कुलदीप सिंह बग्गा कृत 'दंगा-दंगा खेले', अशोक लव कृत 'पत्थरों से बंध पंख', मधु की 'एक ओर छिन्नमस्तका' प्रमुख है ।

विभाजन त्रासदी एवं साम्प्रदायिकता तनाव की असर नारी की मनःस्थिति पर भी पड़ा । इस दृष्टिकोण को दर्शाती राजेन्द्र सिंह बेदी की 'लाजवंती', मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक' है । माताओं के खंडित मातृत्व को दर्शाती भीष्म साहनी की 'पाली' प्रमुख है । वही 'शरणदाता' में नारी ने साम्प्रदायिकता वातावरण में जोखिम उठाकर मानवता का परिचय दिया है । सन 1984 में साम्प्रदायिक दंगों पर आधारित अनेक हिन्दी कहानियां नारी क्षति को प्रत्याक्षित करती है, जिनमें सुरेश सेठ की 'विरासत', 'रातभर' और सिम्मी हर्षिता की 'विस्थापित' एवं महीप सिंह 'पहले जैसे दिन' प्रमुख हैं ।

### 2. आतंकवाद

आतंक की बीज साम्प्रदायिकता की संकीर्णता में पनपता है । लगभग डेढ़ दशक तक पंजाब प्रांत में आतंकवाद के भयानक दौर को झेला है । अजय शर्मा कृत 'हरी साड़ी वाली औरत' में पंजाबी लोग आतंकवाद से बचने हेतु ग्रीन कार्ड हासिल करना चाहते हैं । पुष्पाल सिंह की 'यंत्रणा', 'तारीख़ का इन्तिज़ार' आतंकी संदर्भ में लिखी कहानियां हैं । पुष्पा महाजन कृत 'नया पन्ना' में आतंकी साये का डर इस हद तक देखा जा सकता है कि लोग शादियां रात की बजाय दिन में करते हैं । रात की बस सर्विस भी बंद है । मधु संधु कृत 'लिफ्ट' में नित्य चौराहों, बस अड्डों, बसों में बम फूटते हैं । कर्फ्यू लगते हैं । पंजाब के हिन्दू परिवार पीले पटके और कड़े को सुरक्षा कवच मानते हैं । सन 1984 का ऑपरेशन ब्लू-स्टार तथा आतंकवादी हत्याओं से अपनी उपजी दुखों की गिरफ़्त पात्रों को झिंझोड़ रही है ।[4]

लेखराज कृत 'माहौल ठीक है', 'भीतर तक एक

घाव', विनोद शाही कृत, 'देश आज़ाद है', 'पोस्टमार्टम', वीरेन्द्र मेहंदीरत्ता कृत 'डायलिसिस', सैली बलजीत की 'अब वहां सन्नाटा उगता है', 'पराये शहर में', 'किसकी मिट्टी' गांव उदास है' आदि आतंकी व्यथा पर आधारित कहानियां है ।' पंजाब ने आतंकवाद की जितनी परते देखीं, झेली एवं भोगी हैं, इसका चित्रण हमें सुरेश सेठ कृत 'ताम्रपत्र'[5] में देख सकते हैं ।

### 3. राजनीति बनाम यथार्थ धरातल

पंजाब का कथाकार यथार्थवादी है । यथार्थ के आलोक में दुर्व्यवस्थाओं को उजागर करना वह अपना कर्तव्य समझता है । पंजाबी कथाकारों द्वारा रचित कहानी केवल विश्वसनीय लगने पर ही ज़ोर नहीं देती, बल्कि विश्वसनीयता की अनुभूति की प्रमाणिकता पर भी खरी उतरती है । वह जीवन के यथार्थ से प्रतिबद्ध होकर चलती है । ''आधुनिक युग के सभी जागरूक कथाकारों के लिए कहानी कल्पना की बनावट न होकर, जीवन का एक यथार्थ अंश बन गयी है ।''[6]

आधुनिक नेता और अनेक कार्य-कलाप समाज को आक्रांत किये हुए है । पंजाब की हिन्दी कहानी इन राजनेताओं को कलई खोलती है । आज के नेता 'तपूं राज ते राजों नरक'' को सार्थक कर रहे हैं । जनता को दिये गये वादों को भूलकर उनका शोषण करने में लगे हैं । पंजाब के कथा-साहित्य में इस विषैली राजनीति को पूरे यथार्थ के साथ उभारा गया है । विष्णु प्रभाकर कृत 'हंसा जाई अकेला-अकेला', मोहन राकेश कृत 'एक ठहरा हुआ चाकू-आज के साये' और कृष्ण बलदेव वैद की 'माई की महिमा बीच का दरवाज़ा' प्रमुख है । राजनीति से उत्पन्न आम आदमी की पीड़ा को दर्शाती विनोद शाही कृत 'ख़ालिस लोग'[7] सिम्मी हर्षिता कृत 'विस्थापित सदी' और स्वदेश दीपक कृत 'अपाहिज' कहानी भ्रष्ट मंत्रियों के कृत्य दर्शाती हैं ।

### 4. भ्रष्टाचार एवं रिश्वत

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक स्तर पर जितना भ्रष्टाचार पनपा उसकी सजीव अभिव्यक्ति पंजाब के कथाकार ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत की है । भीष्म साहनी कृत 'चीफ़ की दावत', कमलेश्वर कृत 'गाय की चोरी', विष्णु प्रभाकर कृत 'धरती अब भी घूम रही है' कहानियों के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को दर्शाया गया है । गोपाल कृष्ण शर्मा फ़िरोज़पुरी कृत 'छापामार' में भ्रष्ट प्रशासनिक कर्मचारियों की करनी दर्शायी गयी है । तरसेम गुजराल की 'धूल भरे हीरे' में बताया है कि कम्पीटीशन क्वालिफिकेशन में नहीं रिश्वत के दामों में है । पुष्पाल सिंह कृत 'स्पेशल सीट' में भी शैक्षिक भ्रष्टाचार को वर्णन मिलता है । वहीं मोहन राकेश कृत 'क्लेम' और परमात्मा का कुत्ता', विनोद शाही की 'भ्रष्ट तंत्र, में भ्रष्टाचार, रिश्वतख़ोरी का चित्रण किया है ।

### 5. अर्थ

आधुनिक जीवन के अर्थ का विशिष्ट महत्व है । अर्थ सामाजिक संबंधों का परिचालक है । अर्थ के कारण मैत्री संबंधों के बंधन ढीले पड़े हैं । पति-पत्नी के संबंधों में प्रेम की ऊष्मा नहीं रही । ख़ून के रिश्तों में अपनापन नहीं रहा । भाई-भाई (भीष्म साहनी ख़ून का रिश्ता) भाई-बहन (ऊषा प्रियम्बदा-ज़िन्दगी और गुलाब के फूल) पिता-पुत्र (कंमलेश्वर कृत दुख भरी दुनिया) के संबंध में अर्थ ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है । अर्थ हेतु वेश्यावृत्ति, बेकारीजन्य जैसी अनेक समस्याएं उभरी हैं, जो हिन्दी कहानियों के कथानकों का स्रोत है । विष्णु प्रभाकर कृत 'आकाश की छाया', मेंहदीरत्ता कृत 'महत्वाकांक्षी' आदि कहानियों के माध्यम से इन समस्याओं को उठाया गया है । अर्थ देन पूंजीवादी तंत्र ने आदमी को अकेला एवं आत्मकेन्द्रित बना दिया है । रवीन्द्र कालिया की कहानी 'सदल और सिंधाल' इसी चित्र फलक को रेखांकित करती है । इस प्रकार पंजाब के कथाकार ने अर्थ के प्रभाव व इससे उत्पन्न समस्याओं पर अपनी लेखनी विस्तार से चलायी है ।

### 6. पारिवारिक विघटन

वर्तमान परिवार संक्रांति काल की अवस्था से गुज़र रहा है । भीष्म साहनी कृत 'ख़ून का रिश्ता', कृष्ण बलदेव कृत 'ऋण' कथानकों का स्रोत परंपरागत परिवार के विघटन को दर्शाता है । नये मूल्यों की टकराहट से आज एकल परिवार में भी दरारें आ गयी है । एकल परिवार की स्थिति एवं इनकी समस्याओं के विषय को पंजाब के कथाकार ने विशेष रूप से ग्रहण किया है । कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया', कृष्ण बलदेव की 'भूत', मोहन राकेश की 'एक और ज़िन्दगी' और धर्मवीर भारती की 'बंद गली का आख़िरी मकान' आदि में एकल पारिवारिक विघटन को

दर्शाया गया है । पुष्पा महाजन, सुरेश सेठ, सुरेन्द्र मंथन, फ़कीरचंद शुक्ला, राकेश वत्स आदि कहानीकारों ने पारिवारिक दायरों से छटपटाते एवं दबे कोणों को अपना कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है ।

### 7. मनोवैज्ञानिक

आज का लेखक व्यक्ति को समझने के लिए किसी वाद का सहारा न लेकर मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से उसका व्यक्तित्व चित्रित करने में प्रयासरत है । क्योंकि ''मनुष्य का चरित्र उस आइसबर्ग के समान है, जिसका अधिकांश भाग पानी के भीतर छिपे हुए उस बर्फ के शेष भाग को भी भली-भांति समझना होगा । केवल ऊपरी भाग के आधार पर कोई निर्णय दे देना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं होगा, क्योंकि वह अपूर्ण ज्ञान पर आधारित निर्णय है ।''[8]

इस दृष्टिकोण को पंजाब के कहानीकार ने समझा है । इसी कारण उनकी कहानियों के अधिकांश पात्र मानसिक धरातल के साथ नज़र आते हैं । मोहन राकेश कृत 'मिस पाल' की पात्र मिस पाल, 'एक और ज़िन्दगी का प्रकाश, 'मरुस्थल' की 'इन्दू', उषा प्रियम्बंदा कृत 'पैरम्बलेटर' की कालिन्दी, निर्मल वर्मा कृत 'परिन्दे' में लतिका ऐसे पात्र हैं । इससे स्पष्ट है कि कथा-साहित्य मनुष्य के स्थूल जगत को छोड़कर उसके मनो-जगत की ओर अग्रसर होता गया है ।[9]

### 8. नारी-विमर्श

साहित्य में नारी आज सर्वत्र चर्चा के केन्द्र में है । स्वतंत्रता उपरांत पंजाब के कथा साहित्य में नारी चेतना का स्वर दिनों-दिन बुलंद हो रहा है । स्वतंत्रता पूर्व नारी का आदर्शमय रूप मुखरित था जैसे कृष्ण सोबती कृत 'एक दिन' में प्रस्तुत हुआ है । परंतु आज बदलते परिवेश ने नारी स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया है । आज नारी सशक्त, विद्रोही रूप भी लिये हैं । यशपाल के कथनानुसार ''आधुनिक नारी अपने जीवन लक्ष्य और महत्वाकांक्षा केवल पति सेवा और अधिक संतानों की माता बनना नहीं मान सकती । वह आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता और अपने व्यक्तित्व की सार्थकता भी चाहती है ।''[10] हिन्दी कहानी लेखन में स्त्री पात्र का आदिम भावनाओं की बेजोड़ अभिव्यक्ति की शुरुआत वास्तव में पंजाब की ही कृष्ण सोबती कृत 'मित्रो मरजानी' द्वारा हुआ था ।

इसके अतिरिक्त राजी सेठ, गीता डोगरा, इन्दुबाली, सिम्मी हर्षिता, मधु संधु की कहानियों में प्रमुख रूप से नारी प्रधान तत्व देखा जा सकता है । पुष्पा महाजन कृत 'सुकेशी', मधु संधु कृत 'म्यूजियम' तरसेम गुजराल कृत 'ज़लता हुआ घर', गोपाल कृष्ण की 'कोमल कृतिका' आदि कहानियों में नारी का सशक्त चित्रण देखने को मिलता है ।

### 9. महानगरीय बोध

पंजाब के कथाकारों में एक बहुत बड़ा वर्ग वह है, जो महानगरीय विडम्बनाओं को अपने-अपने कोणों से शब्दागत करने में प्रयत्नशील है । इसमें से कुछ स्वतंत्रता पूर्व अश्क, अज्ञेय आदि है तो कुछ स्वतंत्रता उपरांत उभरकर सामने आये हैं । सबसे पहले पंजाब के मोहन राकेश और निर्मल वर्मा की कहानियों से आधुनिक मानव के महानगरीय संस्कारों का कलात्मक एवं सहज रूप देखने को मिला । वर्तमान महानगर की भयभीत आतंक पैदा कर देने वाली परिस्थितियों ने मानवीय चेतना को बदलकर रख दिया है । आज का शहरी व्यक्ति जटिलताओं, विडम्बनाओं, विसंगतियों से भरा जीवन व्यतीत करने का मजबूर है । महीप सिंह कृत 'पारदर्शी' में स्कूल दुर्घटना में मौत और नवविवाहित लड़की तृप्ता के वैधव्य का भय आतंकित कर देता है । महानगरीय बोध के अन्य कथाकारों में कृष्णा सोबती, कृष्ण बलदेव वैद, उषा प्रियवंदा, विजय चौहान आदि प्रमुख हैं ।

### 10. दलित चेतना

पंजाब के हिन्दी तथा साहित्य का अपना स्वर्णिम इतिहास रहा है । भूमंडलीकरण के इस दौर में लेखक ने जो बदलाव देखे उसका प्रभाव उसकी रचना धर्मिता पर भी पड़ा । दलित चेतना के अनछुए पहलू पर भी पंजाब के कथाकारों ने अलग-अलग कोणों को हुआ है । जय प्रकाश कर्दम के शब्दों में ''हिन्दी कथा साहित का उज्ज्वल पक्ष यही है कि कुलीनता और अभिजात्य की परिधि से बाहर निकलकर उसने समाज के हाशिये पर खड़े मनुष्य की पीड़ा और दर्द को समझने की चेष्ट के साथ-साथ अपनी अस्मिता के लिए उसके संघर्ष को भी प्रतिपाद्य बनाया है ।''[11] दलित चेतना को उजागर करती 1990 में 'इन्द्रपस्थ भारती' में प्रकाशित भीष्म साहनी कृत 'बबली' विनोद शाही कृत 'ख़ालिस लोग'[12], सैली बलजीत कृत 'चांडाल नहीं'[13] है जिसमें जात से ब्राह्मण पढ़े-लिखे व्यक्ति की चांडाल बनने तक व्यथा का अंकन किया गया है ।

## 11. आंचलिकता

भारत गांवों का देश है । अधिकतर नगर भी गांवों से परिणत होकर बने हैं । इसी तरह अधिकतर कथा-लेखक भी या तो गांवों के हैं या गांव से नगरों में आकर बसे हुए हैं । इनके द्वारा रचित रचनाओं में पंजाबियत के विधि रूप आस्था, त्योहार, रीति-रिवाज, अंधविश्वास, लोक-गीतों में देखे जा सकते हैं ।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की 'सिकन्दर डाकू', कृष्ण सोबती की 'सिक्का बदल गया', कमलेश बख़्शी की 'श्रंग से सागर' में आस्था तत्व देखा जा सकता है । वहीं पंजाबी रीति-रिवाजों का अंकन आदर्श मदान, इन्दुबाली, पुष्पाल सिंह आदि की कहानियों में मिलता है ।

अश्क की कहानी 'ख़िलौने' में बाबा सोड़ल के मेले का चित्रण मिलता है । वही बदलते परिवेश में लोहड़ी, दीवाली कैसे मनाया जाता है, इसका चित्रण भी देखा जा सकता है । लोक-जीवन में प्रचलित अंधविश्वास का अंकन यशपाल कृत 'उत्तराधिकारी', 'पहाड़ की स्मृति', 'सच बोलने की भूल' में दिखायी पड़ती है । विनोद शाही की कहानियों में भी अंधविश्वास स्पष्ट दृष्टिकोण होता है । जैसे वीरवार की झड़ी पूरा हफ़्ता लगती है । काली जीभ वाले के मुंह से जो भी बातें निकले वह अवश्य पूरी होती है ।

कुल मिलाकर पंजाब के कथाकार ने समय के अनेक प्रासंगिक पहलुओं को कथा साहित्य के माध्यम से सामने रखा है । पंजाब के कथा-साहित्य की सरिता निरंतर प्रभावित हो रही है और नित्य नये लेखक इस कथा-धारा को निरंतर बनाये रखने के लिए अपना योगदान दे रहे हैं । पंजाब से प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाएं भी अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभा रहे हैं । दूरदर्शन और आकाशवाणी भी पंजाब के कथा-साहित्य को समृद्ध करने में अपना पूरा योगदान दे रहा है, मेरे विचार से पंजाब कथा-साहित्य का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है ।

### संदर्भ


1. पंजाब की हिन्दी कहानी (स्वातंत्रोत्तर), तरसेम गुजराल, (लेख पंजाब की मिट्टी की महक), पृ॰ 4, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर ।
2. विष्णु प्रभाकर-अधूरी कहानी-धरती अब भी घूम रही है ।
3. हिन्दी लेखक कोश, पंजाबी संवेदना के संदर्भ में, पृ॰ 136, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर ।
4. नियति और अन्य कहानियों : मधु संधु, शब्द संसार, दिल्ली-2001
5. 'धर्मयुग', सुरेश सेठ-ताम्र पत्र, 1993 ।
6. मार्कण्डेय-हंसा जाई अकेला, भूमिका से ।
7. हंस पत्रिका, वर्ष 1999 ।
8. हिन्दी कहानी का उद्‌भव और विकास, डॉ॰ सुरेश सिन्हा, पृ॰ 91-92 ।
9. कथा साहित्य और मनोविज्ञान-डॉ॰ देवराज उपाध्याय, पृ॰-9 ।
10. 'केरल ज्योति', पृष्ठ 23, अगस्त 2007 ।
11. हिन्दी कहानी में दलित चेतना-सुरेन्द्र प्रसाद, पृष्ठ 69 'आम आदमी' अंक-90, जून-मार्च, 2008 ।
12. हंस, मई 1999 ।
13. हंस, अप्रैल 2000 ।


## सबका हम सम्मान करें

छोटा-बड़ा भले हो कोई,
सबका हम सम्मान करें ।

कोई किसी जाति का भी हो,
कोई किसी धर्म को माने ।
नहीं परस्पर भेदभाव हो,
सबको हम समान ही जानें ।

मन से भी हर्गिज न किसी का,
कभी न हम अपमान करें ।

अपने और परायेपन के,
हम ओछे विचार को त्यागें ।
जो हैं पीछे उन्हें साथ लें,
बढ़ें सतत सत्पथ पर आगे ।

पथ में आयी सभी मुश्किलें,
मिल-जुलकर आसान करें ।

जिन्हें ज़रूरत हो आश्रय की,
उन्हें सहारा दें मिल-जुलकर ।
जो निज पथ से भटक गये हैं,
लाएं उनको सही राह पर ।

जन-जन के प्रति श्रद्धा-आदर,
हम सब एक समान करें ।


**डॉ॰ त्रिलोकी सिंह**
हिन्दुपुर, करछना, इलाहाबाद (उ॰प्र॰)

# कालाधन वापस लाने का सुन्दर सपना और भाजपा

■ सी॰ के॰ रहमानी

काले धन और भ्रष्टाचार को लेकर अब राजनीति में चर्चा नहीं हो रही है, हां मीडिया में ज़रूर कभी-कभार लेख या ख़बर छप जाती है । यह वही काला धन और भ्रष्टाचार है जिसने यू॰पी॰ए॰ सरकार की नींव हिला दी थी और पिछले दस साल से हाशिये पर रहने वाली पार्टी बी॰जे॰पी॰ प्रचंड बहुमत के साथ केन्द्र में सत्तासीन हुई । यानी काला धन और भ्रष्टाचार एक पार्टी के लिए अभिशाप साबित हुआ तो दूसरी के लिए वरदान । एक पार्टी ग़म के आंसू रो रही है दूसरी बल्ले-बल्ले कर डांस कर रही है ।

काले धन और भ्रष्टाचार क़ो लेकर 2011 में कांग्रेस पार्टी के ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त तूफ़ान आया था । इसकी अगुआई समाजसेवी अन्ना हज़ारे ने की थी । इस आन्दोलन से पहले अन्ना हज़ारे को लोकल लोगों के अलावा पत्रकार ही जानते थे । इस आन्दोलन के बाद अन्ना को पूरा देश जान गया । बाबा रामदेव को लोग केवल योग गुरु के रूप में ही जानते थे लेकिन दिल्ली के रामलीला मैदान में हुए आन्दोलन से उन्होंने अपना राजनीतिक कैरियर भी शुरू किया था लेकिन वह राजनीति के क्षेत्र में दौड़ नहीं पाये । ज़्यादा उछाल मारने और बड़बोलापन के कारण बहुत आगे नहीं जा पाये ।

बाबा रामदेव सक्रिय राजनीति में तो नहीं आ पाये लेकिन वह राजनीति में दख़ल देने की स्थिति में ज़रूर आ गये । आज उन्हें सरकार की तरफ़ से कड़ी और बड़ी सुरक्षा मिल रखी है जिसमें कमांडो भी शामिल हैं । अन्ना आन्दोलन के कारण जहां कांग्रेस बैकफुट पर चली गयी वहीं एक नयी राजनीतिक पार्टी का उदय भी हुआ । इस राजनीतिक पार्टी ने अपना नाम रखा 'आम आदमी पार्टी' जिसे मीडिया ने शार्ट नेम दिया 'आप' । जिस समय 2011 में राजनीति के क्षेत्र में कोहराम और कौतूहल का दृश्य और हालात थे उसी समय भाजपा भी मैदान में कूद पड़ी । हालांकि भ्रष्टाचार और काले धन को लेकर जो आन्दोल शुरू हुआ था, कहने वाले कहते हैं कि वह आन्दोलन भाजपा के इशारे या उसकी शह पर हुआ था ।

इस आन्दोलन ने जनता को एक बहुत ही ख़ूबसूरत सपना दिखाया कि काला धन आने के बाद हर आदमी को 15-15 लाख रुपये मिल जाएंगे । यानी काला धन देश के ग़रीब लोगों के लिए कुबेर का ख़ज़ाना साबित होने वाला था । यूं भी हम भारतीय बहुत लालची होते हैं । लालच इस हद तक कि पांच लाख पाने के लालच में पचास लाख गवां बैठते हैं ।

इधर, काले धन और भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ जनता में आक्रोश पैदा किया जा रहा था, उसे उकसाया जा रहा था । उधर भाजपा चुनाव की रणनीति बना रही थी । भाजपा के हाथ कालेधन और भ्रष्टाचार का अचूक मुद्दा लग चुका था । इधर जनता महंगाई से परेशान थी उसमें भ्रष्टाचार और कालेधन का तड़का लगा दिया । नतीजा, जनता गले तक भर आयी । उसे लगने लगा कि इस रावणा राज से मुक्त करने के लिए कोई राम आये जो रामराज ले आये । यह वह समय था जब जनता को कांग्रेस छोड़कर हर नेता में खेवनहार नज़र आ रहा था । ऐसे में उसे कुछ नया या ऐसा आश्वासन चाहिए था जो उसे सुखद और चमत्कारक लगे । आश्वासन भले ही झूठा हो तो भी चलेगा क्योंकि उसे फ़ौरी तौर पर मन खुश करने को कुछ तो मिले । जिस तरह एक ज्योतिषी ग्रहों का खेल बताकर आपको फ़ौरी तौर पर खुश कर देता है उसी तरह का भी भरोसा मिले तो भी चलेगा । भाजपा को ऐसे ही मौक़े की तलाश थी । वह मौक़ा लगभग आ चुका था । जैसे ही लोकसभा 2014 के चुनाव की घोषणा हुई और उधर भाजपा की ओर से मोदी का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए पार्टी ने प्रस्तावित किया वैसे ही

मीडिया उनके पक्ष में खड़ा हो गया । लोगों को याद होगा कि मीडिया ने तो चुनाव से पहले ही मोदी को प्रधानमंत्री बना दिया था । मीडिया मोदी की हर बात को ऐसे पेश कर रहा था जैसे प्रधानमंत्री की बात हो ।

मोदी के लिए यही वक़्त था जनता को भरमाने का । मोदी अच्छे वक्ता होने के साथ-साथ कुशल मार्केट मैनेजर भी हैं । उन्हें मार्केट करना भली-भांति आता है । उनके अन्दर वह कला है जो एक सफल विज्ञापन में होती है । उन्होंने आश्वासन का माल बेचा । उन्होंने जनता के सामने कालेधन का मुद्दा बेहतरीन तरीक़े से पेश किया । जनता महंगाई को भूल गयी, उसे भ्रष्टाचार से भी सरोकार नहीं रहा । उसे बस काला धन याद रहा । वह इसलिए कि देश में काला धन आते ही हर भारतवासी को 15 लाख मिल जाएंगे । यह काला धन विदेश से कौन ला सकता है यह बात भाजपा और मोदी जी लगातार बता ही रहे थे कि हमारे सिवाय इस भागीरथी काम करे कोई नहीं कर सकता ।

इस तरह के मनमोहक आश्वासन मिलने के बाद जनता ने उन सब दलों से किनारा कर लिया क्योंकि उस समय भाजपा के अलावा ऐसा कोई दल नहीं था जो हर भारतीय को 15 लाख दिलाने का वादा कर रहा हो । नतीजा, जनता ने 15 लाख मिलने की आश, महंगाई से छुटकारा पाने की उम्मीद और भ्रष्टाचारियों को मज़ा चखाने के लिए भाजपा को प्रचंड बहुमत दिया । जनता ने कहा कि जो काम 'निकम्मी कांग्रेस' नहीं कर पायी वह सब मुद्दे हल कर दो । लेकिन यह क्या ! छह महीने गुज़रने के बाद जनता ख़ाली हाथ है । छह महीने गुज़रने के बाद दो गाने ज़ेहन में गूंजने लगे 'क़स्मे वादे प्यार वफ़ा, सब बातें हैं बातों का क्या' और 'वादा तेरा वादा वादे पे तेरा मारा गया बंदा मैं सीधा सादा ।' यह बात भी ज़ेहन में आयी कि राजनीति और प्यार में छल-कपट झूठ, धोखा सब कुछ जायज़ है । यह बात भी सामने आयी कि सत्ता संभालना और सत्ता से बाहर रहकर विरोध क़रना दोनों अलग-अलग बातें हैं ।

जब भाजपा विपक्ष में थी तो वे बहुत मुखर थे । मोदी कहा करते थे कि कांग्रेस या दूसरी सरकार जान-बूझकर कालाधन देश में नहीं ला रही है । बात-बात में यह भी कहते थे कि उस पाकिस्तान के साथ सरकार सख़्ती से पेश नहीं आ रही जो हमारे सैनिकों के सिर काट कर ले गये । अब सत्ता पूरी तरह भाजपा के पास हैं । इस बार उसे यह कहने का भी मौक़ा नहीं है कि उसके पास पर्याप्त बहुमत नहीं है । जिन बातों के लिए भाजपा हाय-तौबा मचाती थी उसे अब वह हल करे लेकिन वह करेगी नहीं क्योंकि घर (देश) चलाना आसान नहीं होता । दुनिया में सबसे ज़्यादा आसान है आलोचना करना और सबसे ज़्यादा मुश्किल होता है सबसे साथ लेकर घर (देश) चलाना ।

रही बात काले धन की । सबसे पहले यह जान लेने की ज़रूरत है कि धन का कोई रूप नहीं होता । धन तो काला हो ही नहीं सकता । जिसे हम कालाधन बता रहे हैं दरअस्ल वह अघोषित संपत्ति है जिसका सरकार को टैक्स नहीं दिया गया । जो अघोषित धन विदेशों में जमा है उसे लाना इतना आसान नहीं है जितना विपक्ष में रहते हुए भाजपा बता रही थी । अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून और संधि से देश बंधे होते हैं । अब वही बात अरुण जेटली कह रहे हैं जिसे कभी कांग्रेस के नेता कहा करते थे । वह भी अन्तर्राष्ट्रीय संधि और क़ानून मानने की बात कर रहे हैं । पहले भाजपा ऐसा नहीं मानती थी । भाजपा सरकार ने जो 627 लोगों की सूची जारी की है उसमें सिर्फ़ तीन नाम ही उजागर क्यों किये यह समझ से परे हैं । जो लिस्ट जारी की उसके आधे खातों में एक पायी तक नहीं है । सरकार ने जो लिस्ट सुप्रीम कोर्ट को सौंपी है दरअस्ल वह लिस्ट आठ साल पुरानी है । यह लिस्ट फ्रांस ने भारत को सौंपी है ।

पिछली सरकार के समय में ही जब काले धन की चर्चा चली थी तभी ख़ातेदारों ने अपने रुपये निकाल लिए होंगे । जब इतने लंबे समय से कालेधन की बात चल रही है तो विदेशी बैंक में कोई क्यों पैसा छोड़ेगा ? पहली बात तो यह है कि कालेधन के बारे में किसी को पता ही नहीं कि किसका कहां और कितना रुपया जाम है । जब यह पता ही नहीं तो फिर किस आधार पर दावा किया गया कि विदेशों में इतना धन जमा है कि हर भारतीय के हिस्से में 15 लाख आ जाएंगे । अगर पता है तो फिर वह पैसा क्यों नहीं लाया जा रहा । अगर ऐसा कुछ नहीं है तो इतना सुन्दर सपना दिखाने का क्या मतलब ? क्या यह सब सपने चुनाव जीतने के लिए थे । कहां महंगाई कम हुई, कहां भ्रष्टाचारियों को जेल हुई और कहां कालाधन आया ? तो फिर यह कहें 'बहुत शोर सुनते थे कमबख़्त दिल का, चीरा तो क़तरे-ए-ख़ूं निकला ।'

यानी बहुत शोर सुनते थे भारतीय जनता पार्टी और मोदी का लेकिन बदलाव तो कुछ नहीं आया । आम जनता की पहली ज़रूरत रोटी, कपड़ा और मकान होता है उसे तो पूरा करो । जनता यह महसूस कर रही है कि मोदी का ध्यान देश की समस्याओं पर कम विदेश घूमने पर ज़्यादा है ।

# मीडिया-सामग्री में शालीनता आवश्यक

■ ख़ालिद मुहसिन

आजकल विज्ञापन बनाने में जिन सिद्धांतों व नियमों पर अमल किया जाता है, उसमें यह कोशिश होती है कि विज्ञापन ऐसा आकर्षण करने वाला हो कि उस पर नज़र पड़ते ही पाठक या दर्शक का ध्यान अपने आप ही उसकी ओर आकर्षित हो जाए। वह इतना दिलचस्प व रोचक हो कि लोग उसे देखने पर विवश हो जाएं और यह दिलचस्पी उस वक़्त तक बनी रहे, जब तक कि पूरा विज्ञापन दर्शक की नज़र से गुज़र न जाए। इन सिद्धांतों व नियमों पर अमल करते हुए विभिन्न मानव कमज़ोरियों, उक्साहटों एवं इच्छाओं को इस्तेमाल किया जाता है।

आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, लैंगिक आकर्षण, आरामदेह व शांतिप्रिय वातावरण की इच्छा, ज़्यादा लाभ कमाने का शौक़, सफलता और श्रेष्ठता की प्राप्ति, सामाजिक हैसियत को बढ़ाने की चिंता, मनोरंजन एवं साहस की भावना इत्यादि ऐसी ही दूसरी कई उकसाहटों व उत्तेजनाएं हैं, जिसको विज्ञापनबाज़ी में इस तरह इस्तेमाल किया जाता है कि पाठक पर उनका प्रभाव ग़ैर-महसूस अंदाज़ में पड़े। इस मानसिकता के साथ तैयार किये जाने वाले विज्ञापन घोर नैतिक संकट को जन्म देने वाले प्रमाणित हो रहे हैं।

जिस आर्थिक व्यवस्था को सुचारू रूप से बनाए रखने के लिए आधुनिक विज्ञापन उद्योग संलग्न हैं, वह अपने अन्दर कोई नैतिक मूल्य नहीं रखता, इसलिए यह अनुभूति होती है कि इस अनैतिक विज्ञापनबाज़ी को नैतिक नियमों व सिद्धांतों के द्वारा नियंत्रित किया जाए। अगर ये उत्पाद बनाने वाली कंपनियां नैतिक नियमों का पालन करें, तो प्रचार माध्यमों से यह आशा की जा सकती है कि वे नैतिकता के सीमा में रहेंगी। विज्ञापन कैसा हो यह उत्पाद की क़िस्म पर निर्भर करता है। ऐसी चीज़ों की एक लंबी सूची बनायी जाए, जिससे आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ बच्चे और दूसरे लोग भी प्रभावित न हों।

विज्ञापन उद्योग का एक पक्ष मीडिया भी है। उसे भी नीतिशास्त्र की पाबंदी करनी होगी। यह बात सच है कि विज्ञापन के प्रकाशन का अस्ल ज़िम्मेदार विज्ञापन देने वाला होता है, मगर अख़बार और दूसरे संचार माध्यम भी चूंकि इसके प्रकाशन का माध्यम बनते हैं, इसलिए वे भी इसके ज़िम्मेदार हैं। पत्र-पत्रिकाओं और टी॰वी॰ चैनलों के मालिक विज्ञापन प्राप्त करने के लिए वास्तविक स्थिति से आंखें बन्द कर लेने और अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध सामग्री प्रकाशित कर देने को अपना कारोबारी मांग बताकर ऐसे विज्ञापनों के प्रकाशन में ज़्यादा बुराई का अनुभव नहीं करते, लेकिन मुस्लिम अख़बार मालिकों का एक मुस्लिम होने की हैसियत से यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि वे इस्लामी सिद्धांतों का पालन करें। उन्हें विज्ञापन प्रकाशित करते समय आर्थिक लाभ से ज़्यादा यह देखना चाहिए कि इस्लामी शिक्षाओं की दृष्टि से इसमें कोई अड़चन तो नहीं है। उन्होंने इस संबंध में जो सहयोग किया है, उसका नेचर क्या है। इस सिलसिले में अल्लाह तआला फ़रमाता है–

"जो काम नेकी और ईश-भक्ति के हैं उनमें सबको सहयोग दो और जो गुनाह और ज़्यादती के काम हैं उनमें किसी को सहयोग न दो। अल्लाह से डरो, उसकी सज़ा बहुत सख़्त है। (क़ुरआन, 5:2)

विज्ञापनबाज़ी का उद्देश्य लोगों को शौक़ दिलाकर उत्पादकों को ख़रीदने और उसे प्राप्त करने के लिए उद्यत करना है। ऐसी स्थिति में विज्ञापनबाज़ी किसी पार्टी या चीज़ की सिफ़ारिश चाहता है। इस बारे में क़ुरआन में कहा गया है–

"जो भलाई की सिफ़ारिश करेगा वह उसमें से हिस्सा पाएगा और जो बुराई की सिफ़ारिश करेगा वह उसमें से हिस्सा पाएगा, और अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखने वाला है।" (क़ुरआन, 4:85)

अश्लील विज्ञापनों के प्रकाशन के संदर्भ में यह हदीस भी ज़ेहन में रहनी चाहिए कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"अल्लाह के निकट अश्लील कर्म करने वाला और उसे प्रचारित व प्रसारित करने वाला दोनों बराबर के शरीक हैं।" (हदीस)

विज्ञापनों को शिष्टाचार या नैतिक मूल्यों का प्रतिबद्ध बनाने के लिए आवश्यक है कि कुछ सामाजिक और रचनात्मक मूल्यों को परिचित कराया जाए और विज्ञापन

बनाते समय निम्नलिखित मूल्यों को दृष्टिगत रखा जाए ।

आधुनिक विज्ञापनों में अतिश्योक्ति या उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने का प्रचलन आम हो गया है । अपने प्रोडक्ट्स को अतिश्योक्ति के साथ पेश करना प्रचारकों की आदत हो गयी है । अतिश्योक्ति में झूठ का तत्व भी विद्यमान होता है । अपने माल को उत्तम साबित करने के लिए ऐसा करना मुस्लिम व्यापारियों और विज्ञापनदाताओं की नीति नहीं होनी चाहिए । हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"अल्लाह तआला झूठी क़समें खाकर अपने व्यापार को बढ़ाने वालों से क़यामत के दिन न बात करेगा और न उनकी तरफ़ रहमत की नज़र से देखेगा और न उनको गुनाहों से पाक करेगा ।" (हदीस)

विज्ञापन निर्माताओं की कोशिश होती है कि लोगों को विज्ञापन के प्रति लोभ-लालच दिलाकर उनकी क्रयशक्ति को बढ़ाया जाए । ज़्यादा लाभ कमाने का शौक़, धनवान बनने, सामाजिक हैसियत बढ़ाने की चिंता, सस्ती और घटिया भावनाओं को उत्प्रेरित करके ग्राहकों को आकर्षित करना व्यापारी की नज़र में जो भी हो, मगर समाज के हित में यह उचित नहीं है । विज्ञापन में हानिकार चीज़ों का प्रचार-प्रसार करना अनैतिक कार्य है । शराब, सिग्रेट और दूसरे मादक पदार्थों का प्रचार-प्रसार करना, तो दूर इसका उपयोग ही ग़लत है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने शराब पीने, पिलाने वाले और शराब निचोड़ने वाले सब लोगों को अपराध में शामिल क़रार दिया है । सरकार का यह उत्तरदायित्व है कि वह हानिकारक चीज़ों के प्रचार-प्रसार पर पाबन्दी लगाए । विज्ञापनों से अश्लीलता को ख़त्म किया जाए ।

लैंगिक आकर्षण को धुरी बनाकर विज्ञापनबाज़ी करना भी सरासर अनैतिक कार्य है । इन्सान हर चीज़ को भौतिक़तावादी ऐनक से देखता है । जहां उसे कोई आर्थिक लाभ नज़र आये, वहां उसे हर बुराई में अच्छाई नज़र आने लगती है और हर शैतानी काम अच्छा लगने लगता है । यहां पहुंचकर इन्सान की क़ीमत भी लगती है, और उसका शरीर आय का स्रोत बन जाता है, जिसके प्रदर्शन से पैसों की बारिश होती है । उस समय इन्सान इन्सानियत का बहुमूल्य तत्व खो देता है, और हैवानियत अंगीकृत कर लेता है, जिसके लिए भौतिक वस्तुएं ही सब कुछ हैं और जिसका आत्मा से कोई लेना-देना नहीं है ।

## लघुकथाएं

# स्वाभिमानी बच्चे

स्पेन के गृह युद्ध में फासिस्ट सेनाएं शहर को घेरे पड़ी थीं । वहीं उन दिनों रोटी के लिए मनुष्यों और कुत्तों में छीना-झपटी चल रही थी ।

एक दिन सेना ने हवाई जहाज़ों से शहर पर बढ़िया डबल रोटियां बरसाई ।

लेकिन शहर के उन बच्चों ने, जो कि भूखे थे, उन सारी डबल रोटियों को अख़बार में बन्द किया और थाने में जमा करवा दी । अगले दिन वह फासिस्टों को सौंप आये जिस पर लिखा था–

मैड्रिड को फ़ासिस्ट रोटियों से नहीं जीता जा सकता । उसे जीतने के लिए तुम्हें युद्ध लड़ना होगा । हमारा स्वाभिमान रोटियों से कई गुना बड़ा है ।

जी हां, रोटियों से बड़ा है स्वाभिमान ।

# भूल सुधार

विद्यालय से आते ही अनिल ने अपने बस्ते में से एक चमचमाता हुआ क़ीमती स्टील का नल निकाला और दादाजी को दिखाते हुए कहा–देखिए दादाजी, मैं यह स्कूल के वाटर रूम में से लाया हूं ।

अनिल ने सोचा दादाजी उसे देखकर खुश होंगे परन्तु वे बोले–आजकल पानी का वैसे ही संकट है, तुम इसे चुरा लाए । वह टोंटी बहेगी और पानी का भरपूर नुक़सान भी होगा और क्या तुम इसे अच्छा काम कहते हो ?

उसी समय दादाजी मुहल्ले के एक नल सुधारने वाले को साथ में लाये । उन्होंने साइकल पर अनिल को बैठने को कहा । दोनों विद्यालय गये और जहां से वह नल निकाला गया था, उसे वही लगाकर आये ।

दादाजी संतुष्ट थे, अनिल भी कम सुख महसूस नहीं कर रहा था ।

उसे कुछ अच्छा करने और अपनी भूल का सुधार करने का एहसास हो रहा था ।

**ललित नारायण उपाध्याय**

खंडवा, म॰प्र॰

# भ्रष्टाचार उन्मूलन कैसे ?

■ संपादन प्रभाग

आज भी ऐसी ख़बरें नहीं आ रही हैं कि रिश्वतख़ोरी और भ्रष्टाचार में कमी आ गयी हो । ऐसा क्यों न हो ? गांव का ग़रीब और फटेहाल व्यक्ति जब पंचायत का चुनाव जीत कर प्रधान या सरपंच बनते ही रातोंरात पंचायत फंड के लाखों रुपये अपनी मर्ज़ी से ख़र्च करने का अधिकार पा जाता है और कोई आस्था या क़ानून उसके मार्ग का रोड़ा नहीं बन पाता, तो आसमान से अचानक टपके हुए इस ख़ज़ाने के एक बड़े हिस्से को वह अपने आप पर और अपने सगे-संबंधियों पर ख़र्च करने से क्यों बचे ?

इसी तरह जब एक प्रदेश या केन्द्र के मंत्री की क़लम की नोंक पर करोड़ों नहीं, बल्कि अरबों रुपये नृत्य करते हों तो उनमें से अपना माक़ूल हिस्सा (उचित भाग) निकालकर अपनी कई पीढ़ियों तक की व्यवस्था क्यों न कर ले ? उसको पता है कि बड़ी ख़ूबसूरती से किये गये इस काम की पहले तो किसी को कानों कान भनक तक नहीं लगेगी और कुछ हुआ भी तो कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित होने और सरसरी छानबीन के बाद मामला स्वयं ही ठंडे बस्ते में चला जाएगा । इतने बड़े देश में बहुत तेज़ी से लगातार सामने आने वाले भ्रष्टाचार की अनेक घटनाओं में उसकी घटना किसको याद रहेगी । कुछ दिनों के लिए मंत्रिमंडल से अलग हो भी हो गये तो अगले मंत्रिमंडल में शामिल होने से उसको कौन रोक सकेगा ?

मान लीजिए कि भाग्य ने थोड़ी देर साथ न दिया और कुछ महीने जेल में ही गुज़र गये तो उससे क्या होता है ? रिहाई के बाद उसको फूल की माला पहनाकर सर पर बिठाने वाले समर्थकों की कब कमी होती है ? और सबसे बड़ी बात यह कि अपनी चतुराई से जो रुपये उसने जमा कर लिये हैं उन्हें सरकार या अदालत उनसे थोड़े ही ले पाएगी ?

पंचायत से पार्लियामेंट तक का उल्लेख तो बस नमूने के तौर पर किया गया है । वर्ना सच्चाई तो यह है कि जीवन का कोई विभाग ऐसा मिलना असंभव-सा है जहां भ्रष्टाचार और लूट-खसोट न हो । गांव के सरपंच से लेकर केन्द्रीय मंत्री तक, चपरासी से लेकर उच्च अधिकारी तक, ऑटोरिक्शा वाले से लेकर हवाई जहाज़ के पायलटों तक, बस कंडक्टर से लेकर रेलवे के टी०टी० तक, दूध और घी के व्यापारी से लेकर दवा बेचने और दवा बनाने वालों तक, देश की सीमाओं और हवाई अड्डों पर तैनात क़स्टम अधिकारियों से लेकर देश की सीमा की सुरक्षा करने वाले सैनिकों तक, भ्रष्टाचार से कौन कितना पाक है यह कहना कठिन है । यह न समझा जाए कि इस सूची में जिन अनगिनत कामों, पेशों और विभागों के नाम दर्ज नहीं किये गये हैं वे सब बड़े पाकबाज़ और अत्यधिक ईमानदार हैं ।

लेकिन अस्ली सवाल यह है कि यह देश भ्रष्टाचार की दलदल में आया क्यों ? भौतिकवादी व्यवस्था ने सारी दुनिया को अपने पंजे में जकड़ लिया है । दुनिया में जीने वाला हर इन्सान आज भोगवादी जीवन का ग़ुलाम बन चुका है । समाज की चमक-दमक, सुविधाएं, मनोरंजन और मस्ती प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य बन गया है ।

जब किसी व्यक्ति की आय उसकी इच्छाओं और अभिलाषाओं की पूर्ति नहीं करती तो वह समाज में अपनी साख बनाने के लिए आमदनी के अन्य स्रोतों की ओर ध्यान देता है और फिर वह अपनी और अपने परिवार की "ज़रूरतों" को पूरा करने के लिए जायज़-नाजायज़ में अन्तर नहीं करता है । रिश्वत, भ्रष्टाचार, घपले, घोटाले आदि अब बुराई नहीं समझे जाते, बल्कि इन्हें वर्तमान समय की आवश्यकता का नाम दिया गया है, जो हर दृष्टि से अनुचित और ग़लत है । व्यक्तिगत रूप से ज़रूरतमंदों की सुनवाई हो या सामूहिक तौर पर किसी प्रोजेक्ट की मंज़ूरी या ठेके की अनुमति, अपराधियों की पर्दापोशी या दोषियों की रिहाई, इन सब नामों में भ्रष्टाचार अनिवार्य हो गया है, जिसमें दफ़्तर के चपरासी से लेकर मंत्री तक लिप्त हैं ।

घटले और घोटाले रिश्वत का बड़ा रूप हैं, जिसमें अधिक लोग लिप्त होते हैं और मामला भी बड़ी धनराशि का

होता है । रिश्वत और भ्रष्टाचार का हाल आज यह है कि कोई भी इससे बचकर नहीं रह सकता । बच्चे के जन्म और पिता की मृत्यु का प्रमाण पत्र भी आज बिना रिश्वत के नहीं मिल सकता । घोटाले और भ्रष्टाचार का प्रदर्शन इससे अधिक और क्या हो सकता है कि एक ग़रीब राज्य का मुख्यमंत्री भी एक वर्ष में जनता के ख़ज़ाने से दस हज़ार करोड़ रुपये उड़ा लेता है और एक विभाग का मंत्री जनता की कमाई के एक लाख 76 हज़ार करोड़ रुपये हड़प कर जाता है ।

ऐसा नहीं है कि देश के क़ानून निर्माताओं ने इस ओर से आंखें मूंद ली हों, बल्कि एंटी क्रप्शन ब्यूरो, इन्फोर्समेंट डायरेक्ट्रेट और सी॰बी॰आई॰ जैसी कई संस्थाएं और संगठन हैं, लेकिन सब बेकार बल्कि इन संस्थाओं और संगठनों में भी भ्रष्टाचार के होने से इन्कार नहीं किया जा सकता । अन्ना हज़ारे को अन्य शरीफ़ लोगों की तरह इन घपलों और घोटालों से काफ़ी दुख हुआ और उन्होंने भ्रष्टाचार के विरुद्ध सरकार को भी क़दम उठाने पर मजबूर कर दिया, लेकिन सवाल यह है कि अगर अन्ना हज़ारे जी का सुझाया हुआ जनलोकपाल बिल बन भी जाता है तो क्या रिश्वत और भ्रष्टाचार समाप्त हो सकेगा ?

जिस समाज और देश में बुराई को बुराई नहीं समझा जाता हो, जनता की संपत्ति को अमानत (धरोहर) नहीं समझा जाता हो, जहां जवाबदेही और अपना जायज़ा लेने का काम नहीं होता, जहां क़ानून को लागू करने वाली एजेंसियां अपने काम के प्रति ईमानदार नहीं हैं, क्या वहां भ्रष्टाचार को रोका जा सकता है ?

यह हमारे देशवासियों का दुर्भाग्य है कि जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न विचारों और सिद्धांतों को अपनाया और विभिन्न क़ानूनों और नियमों का सहारा लिया, लेकिन पालनहार के बनाए हुए क़ानून की ओर से मुंह फेर लिया । आइए देखते हैं कि सृष्टि के रचयिता और पालनहार ने भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए क्या मार्गदर्शन किया है–

(1) इस्लाम ने धन-सम्पत्ति के लालच को इन्सानों के दिलों से निकाला और आवश्यकता से अधिक धन संग्रह की हवस व लालच को अनुचित बताया । क़ुरआन की सूरह अत-तकासुर में है–तुम लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा और एक-दूसरे से बढ़कर दुनिया प्राप्त करने की धुन ने धोखे में डाल रखा है ।

(2) इस्लाम ने संतोष की शिक्षा दी है और अपव्यय और दिखावे से बचने को कहा है । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा–मालदारी धन-संपत्ति की अधिकता का नाम नहीं है, बल्कि वास्तविक मालदारी संतोष है ।

(3) इस्लाम अमानत और ईमानदारी पर बहुत ज़ोर देता है और कहता है जिसको भी संसार में कोई सत्ता या कोई पद मिला हुआ है उसे हर हाल में क़ियामत में उसके प्रति उत्तरदायी ठहराया जाएगा । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–तुम लोगों में से जिसको भी हम किसी काम का ज़िम्मेदार बनाएं फिर वह एक सुई या उससे भी छोटी कोई चीज़ हमसे छिपाये तो यह बेईमानी होगी और क़ियामत के दिन वह उसे ज़रूर लेकर आएगा (इसकी सज़ा पाएगा) और जिस किसी को हम किसी काम पर लगाएं तो अपनी निर्धारित आय के अलावा जो कुछ भी वह किसी भी रूप में लेगा वह बेईमानी होगी ।

(4) इस्लाम रिश्वतख़ोरों, भ्रष्टाचारियों और घोटालेबाज़ों को यह सूचना देता है कि प्रलय के दिन उनका अंजाम दुखद होगा । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–रिश्वत लेने और देने वाला दोनों नरक में जाएंगे ।

ये चार ऐसे बुनियादी उसूल हैं कि अगर इनका सच्चे दिल से पालन किया जाए, तो समाज और देश से भ्रष्टाचार का अंत हो जाएगा । दुनिया में कोई क़ानून या कोई विचार ऐसा नहीं है जो इन्सान की अंतरात्मा को संबोधित करता हो । विशेष रूप से ऐसे समय में जब हमारे देश के क़ानूनविद् किसी क़ानून के बनने से पहले ही उस क़ानून से बचने के उपाय निकाल लेते हैं । अन्ना हज़ारे जी इसके लिए यक़ीनन मुबारकबाद के योग्य हैं कि वे भ्रष्टाचार पर बेचैन हो उठे और इसकी समाप्ति के लिए जान की बाज़ी लगा दी । भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए इस ओर ध्यान देना चाहिए कि मनुष्य के अन्तर को कैसे बदला जाए ? कैसे लोगों को अपनी अंतरात्मा की आवाज़ पर चलने के लिए तैयार किया जाए ? लोगों में भलाई और बुराई, सत्य और असत्य में अन्तर करने की शक्ति कैसे उत्पन्न की जाए और इन्सान को अन्दर से इस प्रकार बदल दिया जाए कि वह अपने रचयिता और स्वामी की मर्ज़ी का पाबन्द हो जाए और संसार का लालच भी उसे अपने स्रष्टा व पालनहार के आज्ञापालन से रोक न सके ।

# तपोवन

■ मासूम अंसारी

"गृहस्थ जीवन तपोवन है । संयम धैर्य रखें ।"

"रूम ख़ाली करें डॉक्टर साहब राउंड पर हैं चलिए बाहर चलिए सिर्फ़ एक व्यक्ति मरीज़ के साथ रहेगा ।"

वार्ड ब्वाय ने पूरा खचाखच भरा वार्ड ख़ाली कराया ।

वह वार्ड से बाहर निकल आयी और लॉबी में टहलने लगी । दीवार पर सामने लगी प्लेट पर उसकी नजरें बार-बार पड़ती । "गृहस्थ जीवन तपोवन है । संयम धैर्य रखें ।"

इस वाक्य में जाने क्या कशिश थी कि वह इसे बार-बार पढ़ती दोहराती और कुछ समझने की कोशिश करती तो कुछ न समझने का साहस जुटा पाती ।

डॉक्टर राउंड से जा चुके थे । वार्ड में फिर से मरीज़ों के मिलने-जुलने वालों से भीड़-सी लग गयी थी । उसका सत्तरह वर्षीय पुत्र 'गगन' कैंटीन से चाय पीकर आ गया था । उसकी सर्जरी होनी थी डॉक्टर ने भी उसकी वार्षिक परीक्षा के बाद उसकी सर्जरी की डेट थी । उस वार्ड में ज़्यादातर स्कूली बच्चे थे जो छुट्टियों में अपनी सर्जरी कराने आये । उनका लाड-प्यार उठाते उनके माता-पिता उनसे ज़्यादा चिंतित नज़र आ रहे थे ।

मई की तपती गर्मी थी और उसकी तमाम कोशिशों के बावजूद प्राइवेट रूम न मिल सका । दूसरा दिन हो चुका था मगर एक भी ख़ाली रूम न था । वह अपने चारों तरफ़ नज़रें दौड़ाती सब तरफ़ मरीज़ ही मरीज़ सभी सर्जरी वाले । सबके हाथों-पैरों कमर पर सर्जरी का कच्चा प्लास्टर चढ़ा परेशानहाल नज़र आ रहे थे । गगन की यह कोई पहली सर्जरी नहीं थी यह उसकी चौथी सर्जरी थी । जब वह तीन साल का था तब उसकी पहली सर्जरी हुई । जब गगन पहली बार ओ॰टी॰ में गया तो उसकी सांसें थमने का नाम नहीं ले रही थीं । सांस अन्दर जाती तो बाहर न आती ।

गगन अच्छा देख सकता था । अच्छा सुन सकता था । अक़्ल अच्छी थी । क़द-काठी अच्छी थी बस ऊपर वाले ने बीसों की बीस उंगलियां नहीं दी थीं । और नाख़ून दे दिये थे । जब दुनिया में आया तो उसकी दोनों हाथों की मुट्ठियां बन्द थी दोनों पैरों के पूरे-पूरे तलवे थे पर एक भी उंगली न थी । जब उसने गगन को देखा तो बेहोश हो गयी और दो घंटे बाद होश आया । वह जब भी गगन की बन्द मुट्ठियों को देखती तो यह गीत उसके गानों में गूंज उठते ।

"नन्हे-मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है ? मुट्ठी में है तक़दीर हमारी, मैंने क़िस्मत को बस में किया है ।"

जाने कौन-सी तक़दीर गगन अपनी मुट्ठियों में बन्द करके लाया था । डॉक्टरों की कोशिशों से गगन के हाथों के दो छोटे-छोटे अंगूठे बाहर निकल आये थे । जिससे उसको काफ़ी राहत मिली थी । वह चीज़ें हाथ से पकड़ने लगा था, लिखने लगा था । अपने हाथों से खाने-पीने लगा था । इस बार ग्यारहवीं की परीक्षा देकर गगन अपनी सर्जरी कराने आया था । उसके तलबों में ऊपर वाले ने उंगलियां तो नहीं दी थीं पर नाख़ून दे दिये थे जो उसे चलने-फिरने में तकलीफ़ देते थे । गगन के तलबों की सर्जरी थी यही एक हल डॉक्टर निकाल पाये थे ।

वह दिन था जब वह गगन को पहली बार स्कूल लेकर गयी थी । नज़रों का सामना करना कितना भारी पड़ रहा था और फिर मासूम गगन के सवाल "मम्मा मुझे सब देखते क्यों हैं, मुझे टीचर्स भी देखते हैं । मैं सबके जैसा क्यों नहीं हूं ।" वह सीने पर पत्थर रखकर ख़ुद पर क़ाबू पाकर गगन को अपने तौर पर बड़े प्यार से समझाती और गगन के समझ में भी सब कुछ आ जाता । मगर जो तपता था उसके अन्दर वह तपन गगन को कैसे बताती और जो तपन वह गगन को महसूस करती थी उसे कैसे मिटाती ।

वह और उसका बेटा तप कर रहे थे लोगों की भीड़ में । आग की भट्टी में लोहे की तरह तप रहे थे ।

यह गगन की आख़िरी सर्जरी थी । इस सर्जरी से गगन उदास था क्योंकि डॉक्टर ने उसके नाख़ून ऑपरेट करके निकाल देने को कहा था । जब गगन ने यह बात सुनी तो बोला "मम्मा नाख़ून निकल जाएंगे तो बुरा लगेगा ।"

वह गगन से नज़रें चुराते हुए बोली–"बेटा इस प्रॉब्लम से छुटकारा पाना है तो कुछ तुम्हें सहना पड़ेगा । जूते-चप्पल

तो पहने रहोगी, छुपा रहेगा सब । अगर ज़ख़्म गहरे हो गये तो नासूर बन जाएंगे जिससे तकलीफ़ और बढ़ेगी । इतना कहकर वह एकदम चुप-सी हो गयी और गगन से अपने आंसुओं को छुपा गयी ।

इस बार जब वह आ रही थी तो ढेर सारी मन्नतें मान कर, गगन के वज़न के बराबर शक्कर चावल देकर आयी थी । उसकी पड़ोसन मित्र ने बताया था एक बड़े अच्छे तपस्वी बाबा हिम पर्वत पर वास करते हैं । बारह साल का उनका तप है । उनके दर्शन को चली जाना और उनसे अपने पाप ऊपर वाले से माफ़ करवा लेना, प्रभु उनकी ज़रूर सुनेंगे । ताकि तुम्हारे पापों का फल आगे गगन को न सहना पड़े ।''

पड़ोसन के यह वाक्य उसके सीने में तीर की तरह घुपे । उसके परिजनों ने उसे इतना पापिन कहा कि पड़ोसी भी यह स्वीकार करने लगे कि यह उसके ही पापों की सज़ा है । कहने वालों में सबसे ज़्यादा उसकी सासू मां थी ससुर भी हां में हां मिलाते ।

''मेरा बेटा तो बहुत नेक है पूजा-पाठ, सत्यवादी निर्मम है । आज तक उसने किसी को अपशब्द नहीं कहे हैं । यह तुम्हारे ही पापों की सज़ा है, जो तुम्हारे साथ मेरा पुत्र झेल रहा है ।'' गगन उसका पुत्र था उसका पाप नहीं । अपने- अपने कर्मों का फल खुद भोगी भुगतेगा । कोई दूसरा क्यों ? ईश्वर इतना बेइन्साफ़ कब से हो गया । यह तो उसके पुण्य थे जिनको सोने के समान ईश्वर तपा कर और निखार रहा था । सहनशक्ति बढ़ा रहा था ।

पड़ोसन की बात सुनकर उसने तपस्वी बाबा का पता लिया और सर्जरी के बाद तुरंत वह और उसका परिवार बाबा की सेवा में उपस्थित होनें के लिए निकल पड़े । जून का महीना लग गया था ठंडे इलाक़े पहुंच कर गर्मी और शहर के शोर-शराबे से राहत महसूस की ।

गगन साइंस का स्टूडेंट था वह किसी पुष्प को लेकर अपने बड़े भाई अंगद से बहस कर रहा था । थोड़ी देर बाद उसका बड़ा पुत्र घुड़सवारी पर चला गया । गगन के घाव कच्चे थे वह थोड़ी दूर चलकर रुक गया वह भी थक गयी और गगन के पास घास पर बैठ गयी । अंगद और उसकेपिता आगे निकल गये थे । उसने गगन को चोर आंखों से देखा ।' वह उन दोनों की दौड़ देखने में खोया था जब वह दोनों दूर निकल गये तो गगन का ध्यान खुद पर गया । उसने पहले बन्द हाथों को देखा, घुमा कर मोड़कर फैलाकर जैसे उन्हें खोल देना चाहता हो । उसकी मुट्ठियां तो नहीं खुलीं, लेकिन न जाने कहां से उसमें हिम्मत आ गयी और वह अपनी तकलीफ़ें भूल गया । उसे लगा कि वह अपने इन्हीं हाथों से सारे काम कर सकता है । फिर उसने भी घुड़सवारी की इच्छा जतायी और एक घोड़े पर सवार होकर अपने भाई अंगद से आगे निकल गया ।

डॉक्टर ने उसके पैरों के नाख़ून निकाल दिये थे । अब उसे जूते पहनने में कोई तकलीफ़ नहीं थी । वह एक आम नवजवान था, जो सारे काम कर सकता था और उसे अब अपनी ओर उठने वाली निगाहों की भी परवाह नहीं थी । उसने हीन भावना पर क़ाबू पा लिया था ।




# रमेशचन्द्र शाह को साहित्य अकादमी पुरस्कार



■ मुहम्मद इलियास हुसैन

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पद्मश्री रमेशचंद्र शाह को हिन्दी के लिए उनके उपन्यास 'विनायक' पर वर्ष 2014 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया ।

श्री शह का जन्म 1937 में उत्तर प्रदेश के अल्मोड़ा में हुआ था । उनकी इंटर तक की शिक्षा अल्मोड़ा में ही हुई । आगे की शिक्षा इलाहाबाद और आगरा में पूरी करने के बाद वह 1961 में हमीदिया महाविद्यालय (भोपाल) में अंग्रेज़ी के अध्यापक नियुक्त हुये और 1997 में वहीं से अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए । बाद में निराला सृजन पीठ के निदेशक भी रहे। स्वयं डॉक्टर शाह के अनुसार, उन्होंने पाठकों के अनुरोध पर 'गोबर गणेश' का अगला हिस्सा 'विनायक' के रूप में लिखा है । 'विनायक' पर ही उन्हें वर्ष 2014 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया ।

पद्मश्री रमेष्ठाचंद्र शाह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं । उन्होंने हिन्दी साहित्य की गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखा है, बहुत कुछ लिखा है और बहुत ख़ूब लिखा है । कहानी, कविता, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना, नाटक, यात्रावृत्तान्त, डायरी की रचाना करके हिन्दी साहित्य के भंडार को भरा है। एक समीक्षक के अनुसार, 'उनकी कविताओं में गंभीरता और विनोद वृत्ति, सामाजिकता और निजता, अत्यधिक एकाग्रता और फ़िर भी उसके साथ एक चंचलता-पर्युत्सुकता, आसक्ति और अनासक्ति मानो एक साथ सक्रिय रहते हैं। बाद में ये तत्त्व शाह की गद्य रचनाओं में आने लगे ।'

रमेशचंद्र शाह कविता को एक ऐसी कला मानते हैं, जिसकी सारी सामग्री मनुष्य की अपने को अभिव्यक्त करने की छटपटाहट से ही उपजती है। उनकी कविता में विचारों की बहुलता उन्हें कभी-कभी दार्शनिक मुद्रा में खड़ा कर देती हैं । आइए, उनकी कविता का आनन्द लें–

'कछुए की पीठ पर' शीर्षक कविता-संग्रह में सजीव कविता, जो मानव-जीवन पर अपना प्रभाव छोड़ती है, के बारे में कवि कहता है–

'ज़िन्दा कविता सन्निपात का पुल है
इस बेख़बर बहाव में
भीगने से इन्कार करते हुए
मेरी निगाह ठहर जाती है
सड़क के आरपार
लेटी हुई
छाया पर।'

आज का समय काव्य-रचना के अनुकूल नहीं है। ऐसे कठिन और कवि-विमुख समय में कविता लिखना बहुत कठिन काम है। कवि के शब्दों में–

'सरल हुआ जाता उतना ही/ लिखना कविता/ एक सरल कवि-समय बना है/ कवच और आयुध अमोघ/ कुछ काल-कूट कवियों का/ कौन किसे समझाए/ ऐसे कठिन और कवि-विमुख समय में/ सरल नहीं होती है कविता किसी काल की।'

'सपने में वायसराय' शीर्षक कविता में एक अंग्रेज़ वायसराय कवि से कहता है–

'हमने ही तो राज-काज तुमको सिखलाया
हमने ही तो
देश तुम्हारा कितना, क्या तुमको जतलाया
तुम्हीं बताओ
कब थे इतने एक
हज़ारों बरसों के अपने अतीत में?
राष्ट्र-प्रेम, एकता और संप्रभुता
हां-हां, अखंडता तक
नहीं हमीं से सीखे क्या तुम?
रेल, तार, अख़बार, विश्वविद्यालय
सब तो
हमने तुमको दिए, और
बदले में थोड़ी स्वतंत्रता ही तो ली-जिसका यों भी वैसे
कोई मतलब ख़ास तुम्हारे लिए नहीं था
सच पूछो, तोध स्वतंत्रता का मूल्य
हमीं ने तुमको पहचनवाया।'

'चोटियां' शीर्षक कविता में विचारों और बिम्ब-प्रतिबिम्बों का मणिकांचन संयोग मन को मोह लेता है। देखिए–

चोटियां/रहने के लिए नहीं होतीं/और घाटियां / सिर्फ़ बहने के लिए होती हैं।
चोटियां /गल-गल कर/घाटियों तक पहुंचती हैं।
घाटियां/कल-कल कर/उन्हीं का स्वर गुंजाती हैं।
दोनों से अलग/दोनों की सुनता मैं/इस भूगोल का क्या करूं ?
जो न रहने की बात जानता है/न बहने की,
जो जानता है सिर्फ़ अपने/दहने को, सहने को।

पुरस्कार मिलने पर एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था कि यह पुरस्कार उन्हें देर से मिला । उनका संकेत शायद इस ओर था कि अगर उनकी साहित्यकार पत्नी ज्योत्ना मिलन (19 जुलाई 1941–5 मई 2014) के निधन से पहले यह पुरस्कार प्राप्त हो जाता, तो दोनों को और अधिक खुशी मिलती।

## प्रमुख कृतियां

**उपन्यास–** 'गोबर गणेश' (1978), 'क़िस्सा गुलाम' (1986), 'पूर्वापर' (1990), 'आख़िरी दिन (1992), 'पुनर्वास' (1995), 'चाक पर गणेश', 'विनायक' (2011), सफ़े परदे पर आत्मनायक (2012), असबाबे-वीरानी (2012), आप कहीं नहीं रहते विभूति बाबू, **कहानी-संग्रह–** 'जंगल में आग' (1979), 'मुहल्ले का रावण' ()1982, 'मानपत्र' (1992)., थिएटर (1998), प्रतिनिधि कहानियां, **कविता-संग्रह–** कछुए की पीठ पर, हरिश्चंद्र आओ, नदी भागती आई, प्यारे मुचकुंद को, देखते हैं शब्द भी अपना समय, चाक पर समय, अकेला मेला, 'उकाव हुलार', 'अनागरिक', 'आधुनिक कवि माला', **निबंध-संग्रह–** 'रचना के बदले' (1967), 'शैतान के बहाने' (1980), आड़ू के पेड़ (1984), 'सबद निरंतर' (1987), 'पढ़ते-पढ़ते' (1990), स्वाधीन इस देश में (1995), स्वधर्म और कालगति (1996), जड़ की बात, अगुन शगुन बीच (2012), हिंदी की दुनिया में, **समालोचना–** 'छायावाद की प्रासंगिकता' (1973), 'समानांतर' (1973), 'वागर्थ' (1981), 'सबद निरंतर' (1987), 'भूलने के विरुद्ध' (1990), अज्ञेय : वागर्थ का वैभव (1995) आलोचना का पक्ष (1998), जयशंकर प्रसाद, समय संवादी, अल्मोड़ा, स०ही० वात्स्यायन 'अज्ञेय' (जीवन और लेखन), **नाटक–** मारा जाई खुसरो, मटियाबुर्ज, **साक्षात्कार–** मेरे साक्षात्कार, **डायरी–** आज और अभी (2013), **यात्रावृत्तान्त–** एक लम्बी छाँह (2000)।

## पुरस्कार एवं सम्मान

भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार, वीर सिंह देव पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद (कोलकाता) का कृति सम्मान, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् सम्मान, मध्य प्रदश संस्कृति विभाग का शिखर सम्मान (1987-88), राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, व्यास सम्मान (2001, 'आलोचना का पक्ष' पर), पद्मश्री सम्मान (2004), साहित्य अकादमी पुरस्कार (2014), गजानन माधाव मुक्तिबोध राष्ट्रीय साहित्य सम्मान (2015) इत्यादि ।

# रिक्शा चालक

दो दिन से भीषण बरसात हो रही थी । चारों ओर त्राहि-त्राहि हुई थी । ऐसे में बंगले वाले तो सुरक्षित थे ही साथ ही मध्यमवर्गीय भी सीमेंटेड (पक्के) मकानों में ठीक-ठाक थे । इतना तो उनके पास होता ही है कि दो चार दिन काम न भी करें तो बैठे-बैठे खा सकते थे लेकिन झोंपड़ी में रहने वाले मज़दूरों, ग़रीबों को क्या जो रोज़ कमा कर खाते थे और फिर भी पूरी भूख नहीं मिटा पाते थे । ऐसे में दो दिन घर में ख़ाली बैठना पेट को भूखा रहने का अभ्यास कराना ही था ।

रुल्दू ने उन तमाम जगहों पर ख़ाली बर्तन रख दिये जहां पर पानी टपक रहा था । अब पानी टप-टपकर बर्तनों में गिरने लगा । मारे भूख के रुल्दू और उसकी बीवी का बुरा हाल था । जो थोड़ा बहुत था वो पकाकर मुन्नू को खिला दिया था । मुन्नू सो रहा था । ज़मीन पर । बादलों की गड़गड़ाहट वातावरण को कंपकंपा देती थी । रुल्दू रिक्शा चलाता था । उसका रिक्शा बाहर पानी में खड़ा भीग रहा था । भूख की पीड़ा दोनों के चेहरे से झलक रही थी ।

''ये पानी तो जान ही लेकर थमेगा'' रुल्दू की बीवी जगनी ने कहा ।

''पानी थमे तो कुछ कमाने निकलूं रुल्दू ने आहत भाव से कहा । ''दो दिन से भूखे हो । मुझ से तो देखा नहीं जाता । अब मुन्नू उठकर खाना मांगेगा तो क्या दूंगी उसे जगनी ने उदास होकर कहा ।

''तू भी तो दो दिन से भूखी है ।''

''मेरी छोड़ो मैं तो औरत हूं ।''

''तो क्या औरतों को भूख नहीं लगती है ।''

''औरतों में सहन करने की शक्ति होती है'' कहने को तो कह दिया पर अस्ल में भूख से उसका दम निकला जा रहा था ।

फिर दोनों ने एक-एक लोटा जल भरके पेट को तृप्त किया और ज़मीन पर बिछौना के नाम पर एक-एक लंबा फटा-चिथा कपड़ा बिछाया और सोने की कोशिश करने लगे । रुल्दू थोड़ी देर बाद पानी से भरे बर्तनों में से पानी फेंक देता और फिर उन्हें रख देता और पानी फिर टप-टपकर भरने लगता । दोनों पति-पत्नी सोने की कोशिश करते मगर भूखे पेट नींद भी कहां आती है ।

''नींद नहीं आ रही है'' जगनी ने कहा ।

''तू भी तो जाग रही है ।''

जगनी ने जवाब दिया ।

मुन्नू जाग गया । उसने मां से कहा–

''मां भूख लगी है ।''

''हां बेटा थोड़ी देर ठहर जा । फिर मिलेगा खाना ।''

''कब मिलेगा मां ।'' ''जब तेरे बाबा कमाने जाएंगे ।''

''बाबा कब कमाने जाएंगे मां ।''

''जब पानी रुकेगा ।'' ''पानी कब रुकेगा मां ।''

''जब भगवान चाहेगा ।''

थोड़ी देर तो मुन्नू चुप रहा । फिर खाने की मांग करने लगा ।

''मां मुझे भूख लगी है ।'' ''ले थोड़ा-सा पानी पी ले बेटा ।'' ''नहीं मुझे खाना चाहिए ।''

मुन्नू ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा । जगनी ने गुस्से में थप्पड़ रसीद कर दिया । फिर सीने से लगाकर मुन्नू के साथ वह भी रोने लगी ।

रुल्दू–''क्यों मार रही है बच्चे को ।''

''तो रोटी कहां से लाकर दूं ।'' ''मैं कुछ जुगाड़ करता हूं ।'' ''ऐसे पानी में कहां जाओगे ?''

''घर में बैठे भूखे मरने से अच्छा है कि कुछ हाथ-पांव चलाऊं ।'' ''भूखे हो कहीं चक्कर-वक्कर आ गया तो बैठे-बिठाए और मुसीबत हो जाएगी ।''

''अब भूखे रहने से अच्छा कि मुसीबत आ जाए पर भूख अब सहन नहीं होती । मैं खुद तो भूखा रह लूं पर मुन्नू को भूखा नहीं देख सकता ।''

''पर इतनी बारिश में क्या कमाई होगी । उल्टे सर्दी अलग लग जाएगी । कपड़े तो भीगेंगे ही ।''

''भगवान से प्रार्थना कर कि कोई सवारी मिल जाए'' रुल्दू ने रिक्शा लिया और तेज़ बारिश में बाज़ार की ओर चल दिया ।

**देवेन्द्र कुमार मिश्रा**
भरत नगर, पाटनी कालोनी,
छिन्दवाड़ा (म०प्र०)

# अनाथ लड़कियों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN GIRLS

## मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

**संक्षिप्त परिचय**

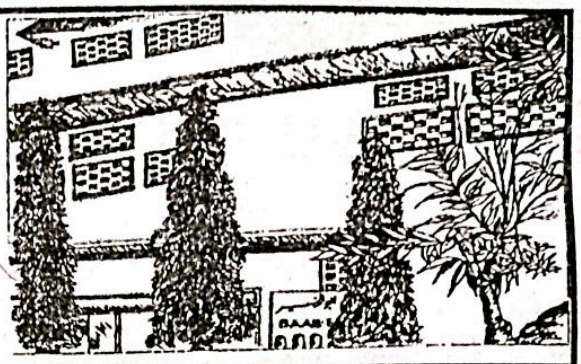

**लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा**

• 28 वर्षीय सेवाएं • 19 विभाग • शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक • पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science • 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया • प्रौढ़ शिक्षा • वोकेशनल सेन्टर • कटिंग और सिलाई: 8 बैच 88 छात्राएं • ज़री वर्क्स : 5 बैच 53 छात्राएं • 1993 ई॰ से 2014 ई॰ तक 120 अनाथ बच्चियों और 51 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया • वार्षिक ख़र्च : 30 लाख रुपये से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है • किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 15,000/- रुपये है—आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : • ज़कात • सदक़े • अतिया • पैदावार की ज़कात • दीनी क़िताबें • ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी • स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक • मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना • यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । • इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

**नोट** : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

**यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।**

**विदेशी चन्दा देने वाले** : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

**Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले**

**विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042**

**Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"**

**Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता**

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

**LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले**

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

**Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT** जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

**नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।**

**संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां**

# शालीन ड्रेस की ज़रूरत

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

भौतिकता के बढ़ते प्रभाव से महिला शोषण भी बढ़ा है । एयर होस्टेस पर किये गये एक अध्ययन में यह बात सामने आयी है कि जिस ग्लेमरस पोशाक को दुनिया भर के एयर होस्टेस को पहनने के लिए मजबूर किया जाता है, वह उनके लिए बड़ी मुसीबत बन गया है । भारत समेत जापान, ब्रिटेन और जर्मनी समेत कई निजी और सरकारी एयरलाइंस की एयरहोस्टेस ने अपनी ग्लैमरस यूनीफॉर्म पर आपत्ति दर्ज करायी है ।

इन एयरहोस्टेस का कहना है कि ऐसी ड्रेस पहनने से उन्हें काम करने में काफ़ी दिक़्क़त होती है । ये इतनी कसी होती हैं कि छेड़खानी के ख़तरे के अलावा खुद से भी चोट पहुंचने तक की आशंका बढ़ जाती है । महिलाकर्मियों के मुताबिक़, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ डिजाइनरों द्वारा बनायी गई ये ड्रेसेस स्टाइलिश होती हैं । इनमें पारंपरिक पोशाक 'सारोंग केबाया' दिखने में तो ख़ूबसूरत है, लेकिन इसे पहनकर आराम महसूस नहीं होता ।

दुनिया भर में हर एयरलाइंस की अपनी ड्रेस अलग- अलग होती है, लेकिन कई एयरलाइंस के ड्रेस बेहद असुविधाजनक और अश्लील होते हैं । ऐसे में इन एयर होस्टेस का कहना है कि लगभग 35 हज़ार फुट की ऊंचाई पर कपड़े ही बेचैन करेंगे, तो काम क्या ख़ाक होगा । उनके मुताबिक़ पुरुष तो सूट पहनते हैं, पर महिलाओं का यूनीफॉर्म कसा, अंग प्रदर्शन करने वाला, खुरदुरा और दुल्हन की ड्रेस की तरह भारी-भरकम तक होता है । उन्हें स्कर्ट और हील पहनने से भी दिक्क़त होती है । आपातकालीन स्थिति में तो इन यूनीफॉर्म में काम करना असंभव-सा हो जाता है ।

भारत की कई निजी एयरलाइंस की एयरहोस्टेस ने भी कई बार यात्रियों द्वारा उनकी स्कर्ट की तस्वीरें खींचने जैसी अनेक आपत्तियां दर्ज करायी गयी हैं । एयर होस्टेस की इन समस्याओं का भी निराकरण होना चाहिए । जमाअत इस्लामी हिन्द के केन्द्रीय सहायक सचिव जनाब इन्तिज़ार नईम ने पिछले दिनों नागरिक उड्डयन मंत्रालय को पत्र भेजकर एयर होस्टेस एवं उड्डयन विभाग की महिला कर्मचारियों के लिए नारी गरिमा के अनुकूल शालीन ड्रेस की व्यवस्था व प्रावधान करने की मांग की है । साथ ही इस सिलसिले में प्रभावी प्रयास का आग्रह करते हुए उन्होंने लगभग 70 स्वयंसेवी संगठनों को पत्र लिखा है ।


हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

**प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट**

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

**मासिक कान्ति**

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

# बुढ़ापा : एक कड़वा सच

■ डॉ॰ प्रीत अरोड़ा

मानवता की अस्ली पहचान उसका दूसरों के साथ प्रेम, सद्भावना व आत्मीयता से व्यवहार करना है । परन्तु जब बात बुज़ुर्गों की होती है तो हम अपने इस व्यवहार को क्यों भूल जाते हैं ? जो माता-पिता अपना पूरा जीवन हमें सफल बनाने और लालन-पालन करने में समर्पित करते हैं और जब दायित्व निभाने का हमारा समय आता है तो हम अपने दायित्व से मुंह क्यों मोड़ लेते हैं ?

आज आपको अपने जीवन का आंखों देखा सच बता रही हूं । हमारे साथ ही पड़ोस में वर्मा जी का परिवार रहता था । वर्मा जी के परिवार में उनकी पत्नी मधु, दो बेटे-बहुएं, पोते-पोतिये व दादी रहती थी । वर्मा जी स्वयं रेलवे में उच्च पद पर आसीन थे और उनके बेटे भी सरकारी कर्मचारी थे । आर्थिक रूप से सुसंपन्न इस परिवार में किसी चीज़ की कमी न थी । अगर कमी थी तो शायद सिर्फ़ अच्छी सोच व संस्कारों की । परिवार में जहां प्रत्येक सदस्य एशोआराम की ज़िन्दगी व्यतीत कर रहा था वहां दादी की क़िस्मत में घर के पिछले बरामदे में बना कच्चा-पक्का कमरा ही था । दादी के पति रमेश जी की मृत्यु के बाद उनकी पेंशन से ही दादी अपना गुज़र करती थी परन्तु दादी के नाम ज़मीन-जायदाद काफ़ी थी । दादी ने मुझे बताया था कि उन्हें इस कोठरी में भी सिर्फ़ इसलिए रखा गया है, क्योंकि सभी की नज़र उनकी जायदाद पर है और अगर उनके पास अच्छी-ख़ासी जायदाद न होती तो आज वे सड़कों पर या किसी ओल्ड ऐज होम में अपना जीवन बिता रही होती ।

दादी सारा दिन चारपाई पर बैठी अपनी अंतिम सांसों के लिए भगवान से दुहाई मांगती रहती थी । चूंकि यह ज़िंदगी भी किसी नरक भोगने से कम न थी । अक्सर वर्मा जी की घर से दादी की रोने की आवाज़ें आया करती थी, क्योंकि बात- बात पर दादी से मारपीट करना उनके लिए आम बात थी । यहां तक कि दादी को खाने के नाम पर सूखी व मोटी रोटी और पानी जैसी दाल ही नसीब होती थी । परन्तु ममता की प्रतिमूर्ति दादी उसे भी राजभोग समझकर खाती थी । हद तो तब हो गयी जब पैसों के पीछे अंधे हुए वर्मा जी ने दादी को खाने में ज़हर मिलाकर खिला दिया और जब वर्मा जी के परिवार को सज़ा मिलने की बारी आयी तो उन्होंने पैसों और रुतबे के बलबूते पर अपने इस घिनौने अपराध को भी छुपा लिया ।

यह कड़वा सच हमारे समाज के अनगिनत घरों की कहानी बनता जा रहा है । आख़िरकार पैसा ही अंधकार बनकर रिश्तों की गरिमा को ग्रहण लगा रहा है । दादी के जीवन की यह कड़वी घटना आज भी मेरे दिल को दहला देती है कि कैसे उनके अपने ही पैसों के पीछे हैवान बन गये । वर्मा जी के घर पर सारी सुख-सुविधाएं होने के बावजूद और अधिक पैसों की लालसा ने ही बूढ़ी मां के प्राणों की आहुति भी दे दी । हमारे सामाज में ओल्ड ऐज होम की गिनती भी लगातार बढ़ती जा रही है और सच मानिये कभी आप ओल्ड ऐज होम के दरवाज़े पर जाकर खड़े होंगे तो देखेंगे की वहां बूढ़ें माता-पिता की सुनी आंखों में से उबरते हज़ारों सवाल आपको दिखायी देंगे जिनका जवाब हमारे पास न होगा कि आख़िर किस अपराध की सज़ा उन्हें दी जा रही है ? क्या उनका अपराध यह था कि उन्होंने मां-बाप बनकर अपना दायित्व निभाया ? परन्तु दुख इस बात का है कि बच्चे अपने माता-पिता को ओल्ड ऐज होम का दरवाज़ा दिखाकर अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं ।

मैं तो यह कहूंगी कि अगर आप अपने माता-पिता को मौत के घाट धकेलकर भगवान की पूजा करके या संस्कारों की बड़ी-बड़ी बातें करके स्वयं को इन्सान मानते हैं तो यह इन्सानियत के नाम पर कलंक है । हमारा पहला कर्तव्य बनता है कि हम अपने माता-पिता का सत्कार करें । हमारे माता-पिता के अधिकार अगर हम उन्हें नहीं देंगे तो कौन देगा ? इसलिए हमारा, हमारे क़ानून व हमारे समाज का यह दायित्व है कि वे बजुर्गों के साथ हो रहे इसे अमानवीय व अभद्र व्यवहार को रोकें । हम अपने बुज़ुर्गों का आदर-सम्मान करते हुए उन्हें परिवार व समाज में वह स्थान दें जिसके हक़दार वे हैं । अगर बुज़ुर्गों के साथ हो रहा ऐसे दुर्व्यवहार का सिलसिला नहीं रुका तो वह दिन दूर नहीं जब इस चक्रव्यूह में फंसने की अगली गिनती हमारी होगी तो आइये प्रण लें–"बुज़ुर्गों से करें प्यार ।

यही है समृद्ध, सुखी जीवन का आधार ।"

# बिजली वाली बसें

राजधानी दिल्ली में इलेक्ट्रिक बसों का दौर आने ही वाला है । उम्मीद है कि इनके सहारे शहर में बढ़ते प्रदूषण पर क़ाबू पाया जा सकेगा ।

इस पायलट प्रोजेक्ट को दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग ने मंज़ूरी दे दी है । अब डी॰टी॰सी॰ ऐसी 190 बसों को चलाने की तैयारी में है । स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया की अनुषांगिकी इकाई एस॰बी॰आई॰ कैप्स को इस प्रस्तावित योजना के आर्थिक पहलुओं का आकलन करने की ज़िम्मेदारी दी गयी है । आशा है कि भेल एक चेक ऑटोमोबाइल मैन्यूफैक्चरर के साथ मिलकर परियोजना की ज़रूरतों को पूरा करेगा । परिवहन मंत्री परवेज़ हाशमी के अनुसार, बिजली से चलने वाली बसों के बारे में पेश किये गये प्रस्ताव को सैद्धांतिक मंज़ूरी मिल चुकी हैं । हमें उम्मीद है कि इस परियोजना पर देर-सवेर काम शुरू हो ही जाएगा ।

लेकिन परियोजना को लेकर एक बाधा भी है । दिल्ली में जिस क़दर बिजली की क़िल्लत रहती है, उससे ऐसी बसों के सामान्य परिवहन पर प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है । लेकिन परवेज़ हाशमी का कहना है कि 20 मेगावाट का एक पावर प्लांट सिर्फ़ इलेक्ट्रिक बसों के लिए ही होगा, जिससे इनका परिचालन नियमित होगा । एक और ख़ास बात यह है कि इन बसों के लिए बिजली की आपूर्ति खंभों के सहारे की जाएगी ।

डी॰टी॰सी॰ के अधिकारियों का कहना है कि ऐसी बसें ज़्यादातर रिंग रोड पर ही चलेंगी । परिवहन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि मौजूदा समय में राजधानी की सड़कों पर फ़िलहाल चल रही बसें पर्यावरण को प्रदूषित कर रही हैं । बिजली से चलने वाली बसों के आने पर इस मामले में राहत मिलेगी । दिल्ली के लोग भी इस व्यवस्था के चालू होने का बेसब्री से इन्तिज़ार करेंगे ।

● अरुण कुमार दास

# गोंद से सर्जरी

त्वचा को जोड़ने वाले स्वदेशी गोंद की उपयोगिता भुज में आये भूकंप के दौरान प्रमाणित हो गयी है । 'एमक्रीलेट' नामक इस गोंद से शल्य चिकित्सा का काम तुरत-फुरत हो जाता है क्योंकि इसकी वजह से त्वचा को जोड़ने के लिए टांके लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ती ।

स्पिरिट की तरह पतले इस द्रव को जब ज़ख़्म वाली दो सतहों पर लगाकर आपस में एक मिनट तक दबाकर रखा जाता है तो उससे वे सतहें बिल्कुल चिपक जाती है । यह कार्रवाई वैसी ही है जैसे टायर पर पंक्चर आदि जोड़ने में की जाती है । इस जैव गोंद का विकास इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ केमीकल टेक्नोलॉजी (हैदराबाद) ने किया है जिसे उत्पादन के स्तर तक लाने में केन्द्र सरकार के टेक्नोलॉजी इन्फॉर्मेशन, फोरकास्टिंग एंड असेसमेंट कौंसिल (टाइफैक) ने विशेष योगदान किया है ।

'टाइफैक' पिछले कुछ सालों से 'होम ग्रोन टेक्नोलॉजी' नाम से एक विशेष कार्यक्रम चला रहा है । इस कार्यक्रम को उद्योग के सहयोग से चलाया जाता है । ऐसी 50 परियोजनाएं इस समय चालू हैं जो 15 स्वदेशी टेक्नोलॉजी उत्पादन में उतार चुकी हैं और पन्द्रह अभी आने वाली हैं ।

जैव गोंद (बायो एडेसिव) का विकास और उत्पादन ऐसी ही एक परियोजना के तहत किया गया है । इत्तिफ़ाक़ से उसकी उपयोगिता परखने का मौक़ा गुजरात के भूकंप के दौरान मिला जहां अस्पताल ध्वस्त हो चुके थे और ऑपरेशन थियेटरों को काम कैंपों में करना पड़ा और चोट-ग्रस्त लोगों की संख्या कई हज़ारों में थी । टाइफैक ने वहां रेड क्रॉस सोसाइटी के ज़रिये एमक्रीलेट की दस हज़ार शीशियां भूकंप-ग्रस्त इलाक़े के सर्जनों को सुलभ करायीं ।

# प्रकाश कण भी क़ैद

वैज्ञानिकों ने किसी साधारण भौतिक कण की तरह प्रकाश को रोकने, उसका भंडारण करने और उसे फिर मुक्त कर देने की कला में उपलब्धि हासिल की है । प्रकृति ने मौजूद ऊर्जा के सबसे गतिवान और वायवीय रूप को क़ाबू में करने की यह उपलब्धि एक ऐसा कारनामा है जो कंप्यूटरों की गति को बहुत अधिक तेज़ करने व संचार तंत्र को ज़्यादा सुरक्षित बनाने से लेकर कई सैद्धांतिक परिकल्पनाओं को मूर्त रूप देने के रास्ते खोल देगा ।

न्यूयार्क टाइम्स ने हाल ही में यह ख़बर दी है । अख़बार

के अनुसार भौतिकशास्त्रियों की दो स्वतंत्र टीमों ने यह उपलब्धि हासिल की है । पहली टीम हार्वर्ड विश्व-विद्यालय व कैम्ब्रिज मैसाच्यूसेट्स स्थित रालैंड इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस के डॉ॰ वेस्टरगार्ड हाऊ के नेतृत्व में काम कर रही थी और दूसरी टीम के नेता कैम्ब्रिज स्थित हार्वर्ड स्मिथ-सानियन सेन्टर फॉर एस्ट्राफिजिक्स के डॉ॰ रोनाल्ड एल॰ वाल्सवर्थ व डॉ॰ मिखाइल लुकिन थे ।

सामान्य तौर पर प्रकाश अंतरिक्ष में एक लाख छियासी हज़ार मील प्रति घंटा की रफ़्तार से चलता है ।

इससे एक हद तक मिलते-जुलते लेकिन काफ़ी शक्तिशाली प्रभाव का इस्तेमाल करके वाल्सवर्थ व लुकिन की टीम ने ख़ासतौर से निर्मित गैस के कंटेनरों में प्रकाश की गति को पहले बिल्कुल धीमा कर देने और फिर उसे पूरी तरह रोक देने में सफलता पायी ।

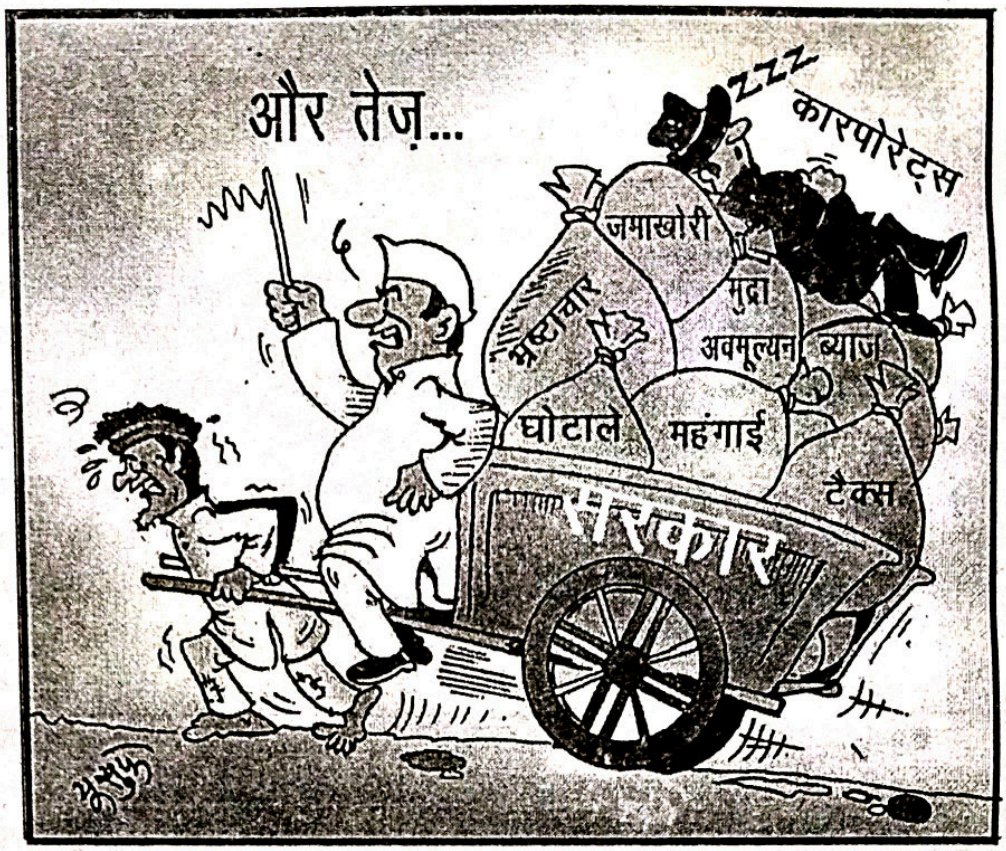


## लहर का क़हर

समुद्री तूफ़ानों को बांध या क्रंकीट की दीवारों से रोका तो नहीं जा सकता । हां कुछ शोधकर्ता ऐसे अणु आयुध बनाने का प्रयास कर रहे हैं जिससे तूफ़ान के आरंभ होते ही उन्हें गिरा कर तूफ़ान की गति को रोका जा सके । परंतु चेतावनी रोकथाम से अधिक सफल रही है । चेतावनी की पूर्व सूचना से जान माल की क़ाफ़ी हद तक सुरक्षा संभव है, लेकिन अभी इस चेतावनी का फ़ायदा विकसित देशों को ही होता है, क्योंकि वे सुविधा संपन्न है और समय रहते क़दम उठा लेते हैं ।

वैज्ञानिक व पर्यावरण विशेषज्ञ समुद्री तूफ़ानों से बचने के लिए ऐसी जगहों पर बस्ती बसाने के लिए राय नहीं देते जहां इनका ख़तरा है । कृषि विशेषज्ञ ऐसी फ़सलों पर बल दे रहे हैं जहां चक्रवात और तूफ़ान प्रोत्कर्ष क्षति कम से कम प्रभावित होती है । विशेषकर द्वीप समूहों पर जहां तक दो फ़सलों का उत्पादन होता है । दूसरे ऐसा फ़सल चक्र बनाना जो चक्रवात के मौसम से पहले फ़सल कटने की स्थिति उत्पन्न कर सके ।

'इकालोजिकल मिसमनेजमेंट इन नेचुरल डिजास्टर्स' के लेखक एल॰डी॰ प्रयार लिखते हैं कि पेड़ चक्रवातों के दुष्प्रभाव को उड़ते हुए मलबेकर अवरोध करके रोक सकते हैं यदि उनकी जातियों का कब और कहां लगाये जाने के आधार पर सावधानी से चुनाव किया जाए । वे उल्लेख करते हैं कि सन 1974 में जब चक्रवात इसी ने आस्ट्रेलिया के डार्विन को पीड़ित किया तो पेड़ों ने यह भूमिका निभायी । समुद्री तूफ़ान आने के बाद हुए नुक़सान को राहत पहुंचाने के बजाय, पूरी दुनिया में इससे बचने के लिए एक दीर्घकालीन नीति बनायी जाए जिससे इस प्रकोप को कम किया जा सके और जान-माल की अधिक से अधिक सुरक्षा की जा सके ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेब, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

# हमारी नई पुस्तकें

| | | |
|---|---|---|
| झाड़-फूँक इस्लाम की रौशनी में | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 16.00 |
| इस्लाम कैसे फैला? | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 36.00 |
| कुव्वत का असल राज़ | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 12.00 |
| तलख़ीस तफ़हीमुल कुरआन (सूरा यासीन) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 20.00 |
| इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था | मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी | 100.00 |
| इस्लामी पारिभाषिक शब्द | मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी | 18.00 |
| सूफी बुज़ुगो की अनमोल बातें | मुहम्मद फारूक ख़ां | 20.00 |
| अध्यात्म का महत्व और इस्लाम | मुहम्मद फारूक ख़ां | 20.00 |
| आत्मा और परमात्मा | मुहम्मद फारूक ख़ां | 24.00 |
| सफलता और मुक्ति का एक ही रास्ता | मुहम्मद फारूक ख़ां | 24.00 |
| नफ़्स का तज़किया और हम | मुहम्मद फारूक ख़ां | 24.00 |
| मुक्ति की धारणा और इस्लाम | मुहम्मद फारूक ख़ां | 26.00 |
| कुरआन पर अमल | सुमय्या रमज़ान | 75.00 |
| विशुद्ध एकेश्वरवाद | मुहम्मद यूसुफ इस्लाही | 24.00 |
| हक़ की दावत और ग़ैर मुस्लिम | मतीन तारिक बाग़पती | 16.00 |
| रहमत ही रहमत | अश-शैख़ अताउल्लाह कुरेजा | 66.00 |
| सर्वधर्म समभाव और इस्लाम धर्म | शोबा-ए-दावत | 30.00 |
| हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)की बेटियाँ | तालिब हाशिमी | 22.00 |
| ब्याज का हराम होना | डॉ० मुहम्मद उमर छापरा | 32.00 |
| मीरास का बँटवारा और उसके हकदार | मिर्ज़ा सुबहान बेग | 26.00 |
| इस्लामः दयालुतापूर्ण ईश्वरीय धर्म | डॉ० फरहत हुसैन | 28.00 |


## MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26981652, 26984347, Fax: 26987858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

Posted on 20-21 March 2015
April 2015
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.03.2015

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

